॥ हरिः ॐ ॥

શ્રીમોટાવાણી

૭-૮

પૂજ્ય શ્રીમોટા
હરિ:ૐ આશ્રમ-સુરત

॥ हरिः ॐ ॥

श्रीमोटा-वाणी [७]

श्रीमोटा की पावन ध्वनिमुद्रित वाणी

(१) हरिः ॐ आश्रम, सूरत में जल्द सवेरे श्रीमोटा टहलने जाते उस समय की बातचीत ।

(२) उत्सव समय की पावन वाणी का एक अंश ।

(३) विद्यार्थियों को पढ़ाते-पढ़ाते और गांधीबापू के साबरमती आश्रम में कार्यालय का काम करते-करते साधना चालू रखने की कला के बारे में जिज्ञासु साधक की प्रश्नोत्तरी ।

: अनुवाद :
रजनीभाई बर्मावाला 'हरिः ॐ'

हरिः ॐ आश्रम प्रकाशन, सूरत

❑ प्रकाशक : हरि:ॐ आश्रम, कुरुक्षेत्र महादेव मंदिर के पास में,
जहाँगीरपुरा, सूरत-३९५००५.
दूरभाष : (०२६१) २७६५५६४, २७७१०४६
भ्रमणभाष : ९७२७७ ३३४००
E-mail : hariommota1@gmail.com
Website : www.hariommota.org

© हरि:ॐ आश्रम, सूरत-३९५००५

❑ संस्करण : प्रथम प्रत-१०००

❑ प्राप्तिस्थान : (१) हरि:ॐ आश्रम, सूरत-३९५००५. वेबसाईट

❑ **मुख पृष्ठ :** मयूर जानी, मो. : ९४२८४०४४४३

❑ **अक्षरांकन : अर्थ कॉम्प्यूटर**
२०३, मौर्य कॉम्प्लेक्स, सी. यू. शाह कॉलेज के सामने,
इन्कमटेक्स, अहमदाबाद-३८० ०१४
भ्रमणभाष : ९३२७०३६४१४

❑ **मुद्रक : साहित्य मुद्रणालय प्रा. लि.**
सिटी मिल कंपाउन्ड, कांकरिया रोड,
अहमदाबाद-३८० ०२२ दूरभाष : (०७९) २५४६९१०१

॥ हरिः ॐ ॥

• निवेदन •

(प्रथम संस्करण)

श्रीमोटा क्वचित् ही प्रवचन करते थे । उनकी पावन वाणी यानी उत्सव प्रवचन या कहीं किसी स्वजन के यहाँ घर में निजी बातचीत हुई हो और उस स्वजन ने ध्वनिमुद्रित कर ली हो वह वाणी । ऐसी ध्वनिमुद्रित वाणी को हमारे ट्रस्टीमंडल के एक ट्रस्टी श्री रजनीभाई बर्मावाला ने अक्षरशः सुनकर उसकी पाण्डुलिपि अथाह परिश्रम से तैयार की थी और मई १९९२ से मार्च १९९६ दरमियान चौदह पुस्तकों की एक श्रेणी का प्रकाशन मुख्यतः स्वजन श्री यशवंतभाई ए. पटेल (बापु), अहमदाबाद के आर्थिक सहयोग से कराया था । उन सभी पुस्तकों का पुनः प्रकाशन का कार्य अब हमारे ट्रस्ट ने संभाल लिया है ।

श्रीमोटा की पावन बोधदायक वाणी का लाभ बिन-गुजरातीभाषियों को भी मिल सके, उस हेतु से उसका अनुवाद हिन्दी और अंग्रेजी में करने का आयोजन हमारे ट्रस्ट द्वारा किया गया है ।

श्रीमोटा जैसे भगवान के अनुभवी पुरुष की वाणी सरल लोकभाषा में होते हुए भी बड़ी मार्मिक है और उनके मुख से निकला एक-एक अक्षर, शब्द गहन आध्यात्मिक रहस्यवाला होता है । इससे साहित्यिक दृष्टि से यह वाणी ठीक नहीं लगेगी । आपश्री कहते थे के 'मेरे लेख में अल्पविराम को भी आगेपीछे करना नहीं । और कितनी ही बार एक ही एक बाबत का पुनरावर्तन होता हो तो उसे भी वैसा ही

रहने देना । इस आज्ञा को ध्यान में लेकर श्रीमोटा की यह ध्वनिमुद्रित वाणी आपश्री जैसे बोले हैं, वैसे ही मुद्रित की है । इसमें कोई सुधार नहीं किया गया है ।

इस श्रेणी के असल गुजराती पुस्तकों के पुनः प्रकाशन के कार्य दरमियान भी हमारे ट्रस्टी श्री रजनीभाई बर्मावाला ने पू. श्रीमोटा की पूरी ध्वनिमुद्रित वाणी फिर से सुनकर यह लेख अक्षरशः वाणी अनुसार है यह मिलाकर ट्रस्ट के ट्रस्टी की हैसियत से उनका फर्ज पूर्ण किया है, इससे उनका आभार मानना आवश्यक नहीं है ।

इस पुस्तक का मुद्रणकार्य चतुरंगी मुखपृष्ठ सहित श्री श्रेयसभाई पंड्या, मे. साहित्य मुद्रणालय प्रा. लि., अहमदाबाद ने पू. श्रीमोटा के प्रति अत्यंत भक्तिपूर्वक, प्रेमभाव से किया है । हम उनका खूब-खूब आभार मानते हैं ।

समाज का विशाल वर्ग श्रीमोटा की इस वाणी द्वारा अपना जीवनविकास कर सके और श्रीमोटा के आध्यात्मिक विज्ञान को सरलता से समझ सके ऐसी शुभ भावना के साथ यह पुस्तक समाज के करकमलों में अर्पण करते हैं ।

॥ हरिः ॐ ॥

दि. १४-१-२०१४ — **ट्रस्टीमंडल**

वि.सं. २०७०, उत्तरायण हरिः ॐ आश्रम, सूरत

॥ हरिः ॐ ॥

• विषय-सूचि •

१. स्मरण हरि का हमारा क्या जीवनधंधा सचमुच है ६
२. श्रीधूनीवाले दादाजी का प्रयोगात्मक प्रसंग ७
३. प्रेम का लक्षण : उमंग ९
४. सचमुच प्रेम के जीवन बारे में मृत्यु कभी नहीं है १०
५. प्रेम के लक्षण : ज्ञान, सामर्थ्य और आनंद १०
६. शरीर होने पर भी अशरीरी ११
७. कराची में मिले ओलिया का अनुभव १२
८. शरीर होने पर भी अशरीरीपन– उसके लक्षण १५
९. **मोटा** की चेतनाशक्ति के अनुभव १७
१०. यज्ञ करके पैसे प्राप्त नहीं करना २१
११. श्री शांतिभाई को तमाकू का धंधा छोड़ देने की सलाह २२
१२. **मोटा** को आर्थिक जरूरियात के प्रसंगो में मिलती रहती गैबी सहाय २४
१३. ब्रह्मांड के पार सचमुच प्रेम स्वयं है २६
१४. मिले हुए को हृदय-सटाकर चाह-चाहकर दिल चाँपकर २७
१५. स्मरण का कितना बड़ा सचमुच क्या प्रताप ही वह ! २८
१६. शरीर का रोग मिटाने स्मरण लेते कराया है २९
१७. निरंतर के ही अभ्यास के बाद में वे माने हैं २९
१८. साक्षात्कारी व्यक्ति के लक्षण– शरीर की स्थिति से निर्लेपता, तटस्थता, समता ३०
१९. गंजेरी साधुओं के बीच में ३२
२०. हरिपथ में ही लोटकर शरण उसका स्वीकार किया है ३२
२१. श्री रमाकांतभाई जोषी का अनुभव ३३

२२. **मोटा** के खर्च से **मोटा** के जीवन के प्रसंग इकट्ठे
करने श्री धनसुखभाई को **मोटा** की टोक ३४
२३. अनुभवी का प्रत्येक कार्य हेतुपूर्वक का होता है ३६
२४. हरि की सभानता जहाँ है, तहाँ खुला प्रकाश ही है ३८
२५. कला, लीला हरि की तो सचमुच भव्य दिव्य ही है ३८
२६. प्रेरणा अनुसार बरतते दुर्घटना से बचाव ३९
२७. शिल्पकार श्री कांतिभाई पटेल की कदर ४२
२८. मौलिक साहित्य के उत्कर्ष के लिए **मोटा** का दान ४२
२९. **मोटा** की शर्त—बिना दक्षिणा पधरावनी नहीं ४३
३०. योजना का कारभार संबंधी खर्च दान की
रकम में से न हो ४५
३१. **मोटा** भगवान के मुनीम हैं ४६
३२ **मोटा** की भविष्यवाणी—पैसे कलम के धक्के से चले जाएँगे ४७
३३. परमार्थ के लिए चरोतरी भाषा में **मोटा** की अपील ४८
३४. **मोटा** की दृष्टि— शिक्षण के बारे में —
विद्यार्थी स्वयं सीखे ५०
३५. विद्यार्थी स्वयं का कार्यक्रम स्वयं ही प्रबंध करे ५४
३६. विद्यार्थी अपनी रुचि अनुसार दैनिक अभ्यास करें ५६
३७. हरिजन सेवक संघ के कार्यालय में काम
करते-करते साधना ५८
३८. गरजमंद स्वार्थी बाबत में अपने-आप ध्यान रहता है ६०
३९. श्री ठक्करबापा और श्री परीक्षितलाल की प्रस्तावनाएँ—
मोटा के कर्मों की आरसी हैं ६२
४०. भक्ति की एकाग्रता गतिशील है ६३
४१. **मोटा** के भजन कर्म, ज्ञान और भक्ति का निचोड़ है ६४

• • •

॥ हरि:ॐ ॥

(हरि:ॐ आश्रम, सुरत में श्रीमोटा पधारते, तब प्रतिदिन जल्द प्रात:काल में (उषाकाल) टहलने जाते । उस समय स्वजनों के साथ ध्वनिमुद्रित हुई बातचीत)

हरि:ॐ हरि:ॐ हरि:ॐ **(श्री चूनीभाई तमाकूवाला)**

श्रीमोटा : जीवन की मिजबानी है ।

स्मरण-सरिता हरि के जीवन की मिजबानी है,
तो किसे उसकी खबर पड़े? ..... मिजबानी है ।
मोटा को क्या ? **मोटा** गप हाँकते रहते बैठे बैठे ।

• स्मरण हरि का हमारा क्या जीवनधंधा सचमुच है •

हरि की यादगीरी वह हृदय महोबत की लज्ज़त है,
हरि को दिल स्मरण कर-करके, कमाया क्या उस जीवन को !
स्मरण हरि का हमारा क्या जीवनधंधा-सचमुच है,
स्मरण करने का कैसा जीवनधंधा हमारा है !
हरि को दिल में मानकर हृदय मनादि में स्मरण-स्मरण करके,
हरि को दिल जीवंत हमने कैसा किया हुआ है !
हरि बिना जीवन जीना कभी एक पल न बनता,
हरि वही हमारा है सही आधार मूल का ।
जीवन का सब कुछ हमने वह बेच डालकर,
पूरेपूरा ही बदले में हमने हरि को खरीदा है !
स्मरण हरि का चला करे, जीवन की खुशनसीबी वह ।

• श्रीधूनीवाले दादा का प्रयोगात्मक प्रसंग •

दूसरी बार मैं गया, तब बारह वर्ष के बाद एक साधु आये थे । उन्होंने कुछ कहा होगा । इतना-इतना कर के आओ । तू निष्काम होकर मेरे पास आना । इससे बाद में साधु तो आये । आये और पैर पड़े । फिर क्यों आ गया भई ? तो कि हाँ । काम पूरा हो गया ? काम पूरा हो गया । तो कि सौ का सौ प्रतिशत ? तो सौ का सौ प्रतिशत । तो कि पूरापूरा निष्काम ? तो कि बात नहीं । अब फिर महाराज ने तो कहा कि कदाचित् देखना हं...अ... तू कच्चा है । अरे ! क्या बापजी ? बिलकुल कच्चा नहीं ।

हमेशा वहाँ २५०-३०० व्यक्ति आते । महाराज के पास । मेरे गुरुमहाराज के पास । फिर एक मोड़ी मोड़ी यानी कि लड़की । उसको उठाया वहाँ से । कि तू यहाँ आ जा । चबूतरे पर बैठते वह भी टूटा हुआ । ऊपर भी कुछ नहीं छप्पर । टूटा हुआ छप्पर । गाँव से दूर और पास में धूनी तपती । तो बुलाई मोड़ी । मोड़ी यानी एक लड़की । यहाँ आ, तू ये सब कपड़े निकाल दे तेरे और यहाँ सो जा । और लड़की कपड़े निकाल कर सो गई । मैं तो तब गजब का ऐसा हो गया कि धन्यवाद है इसे । इस महिला को । ऐसे तो इस महिला की आत्मा को धन्यवाद है । उसको कहा कि तू यहाँ आ । यहाँ सो जा साला, देखें अब तू । हिम्मत नहीं हुई उसकी तो । उस-उस महात्मा की । उनकी हिम्मत नहीं हुई । कहा कि साला, अभी तेरा बहुत कच्चा है ।

इससे मेरे गुरुमहाराज की तो प्रयोग की ही बात । मान लेने की बात नहीं । प्रत्यक्ष । अनुभव से और प्रयोग से ही सच बात ।

• प्रेम का लक्षण– उमंग •

उमंग प्रेम का कैसा उछलते प्रपात जैसा,
भयंकर बाढ़ के जैसा सचमुच प्रेम का है क्या !
हृदय के प्रेम का सच्चा व्यक्त लक्षण उमंग है ।

(मेरे बेटे, कौन करते हैं ? ऐसे ये सब भूतवाला–बूतवाला बेकार)

हृदय के प्रेम का स्पर्श उमंग से क्या पता लगे !
जो कुछ बिना उमंग का न वह प्रेम सच्चा है ।
हृदय के प्रेम की ऊष्मा उमंग से नापते,
परम्परा जैसी कोई किसी रीति प्रेम में है नहीं ।

समझ आयी भई ? Mechanical way है नहीं इसमें कोई ।

नवल, मौलिक, नूतन, पलपल अनुपम प्रेम नौतम है,
मुहब्बत प्रेम की लज्जत उमंग में रही है !

यह उमंग का अर्थ लज्जत से, उमंग प्रेम की गंगा जैसे जीवन को उजाला करता है । प्रेम की उमंग गंगा के समान जीवन को उजाला देता है ।

साहब, कुछ सब ये लोग जानते ? मेरे बेटे, व्यर्थ ले बैठे हैं ।

श्रीमोटा : आपकी दासी है ये कुछ ?
एक भक्त : नहीं .....

• सचमुच प्रेम के जीवन बारे में मृत्यु कभी नहीं है •

प्रभु की भावना का जीवन जीने हृदय मुझ को,
तलप लगी थी गहरी जो, जिसने मुझे मथाया है ।
बस एक की एक ही हृदय लगी धुन ने जो,
***हरि** की भावना में क्या सतत **उस**ने टिकाया है ।*
जरा सी खंडित होते कैसी हृदय मैं धड़क गहरी
सचमुच तीव्र लगी थी, कृपा से इससे सावधान हुआ ।
*हृदय सावधानी ऐसी से, **हरि** की भावना के बारे में,*
पिरोते लगातार हृदय का प्रेम जागा है ।
सचमुच प्रेममय जीवन में मृत्यु कभी नहीं है ।
चिरंजीव, नवजीवन, नौतम खिलता प्रेम में नित्य है ।

• प्रेम के लक्षण– ज्ञान, सामर्थ्य और आनंद •

सभी को जोड़कर परस्पर में परस्पर से,
समग्र सर्व जीवन को, कराता एक वह दिल से ।
नूतन भाव नित्य, नित्य क्या स्फुरित होते रहते जीवन में !
क्या इससे जीने जैसा जीवन लगे मधुरा जो ।
हृदय के प्रेम से ज्ञान, अतुल सामर्थ्य, आनंद,
प्रकट होता है जीवन कैसे ! जिससे होता जीवन सार्थक ।

हृदय का प्रेम मिले तो उसका यह लक्षण ही है कि ज्ञान, अतुल सामर्थ्य और आनंद देता रहता है । तब सही । ज्यों का त्यों नहीं । मेरा बेटा । प्रेम-बेम कहते हैं तो यह होना चाहिए ।

हृदय के प्रेम से ज्ञान, अतुल सामर्थ्य जो सामर्थ्य की तुलना न हो सके और आनंद । ये जीवन में जब प्रगट हों, तब जीवन भी सार्थक हो जाय हमारा । और जीवन के प्रेम के बारे में कभी मृत्यु नहीं है । बस, उसमें तो क्या है कि चिरंजीव । हमेशा टिके ऐसा नवजीवन, नौतम ऐसा खिलंता प्रेम में नित्य और वह फिर कैसा ? सदा ही खिलता रहता ।

सभी को जोड़कर परस्पर में परस्पर से,
समग्र सर्व जीवन को, कराता एक वह दिल से ।

नूतन भाव नित्य नित्य क्या स्फुरित होते जीवन में !
क्या इससे जीने जैसा जीवन लगे मधुरा जो ।

• शरीर होने पर भी अशरीरी •

शरीर का अनुभव होता है इसके द्वारा । शरीर में ऐसे रोग होने पर भी, शरीर होने पर भी अशरीरी हैं । ऐसे अनुभव के प्रयोगात्मक अनुभव हैं । किन्तु यह किसी को नहीं कह सकते । शांतिभाई ।

क्योंकि पूरी पकड़ में ही न आये न ! बिल्कुल न पकड़ सके । मानो कि मुझे और किसी का संबंध हुआ । कुछ ऐसा निमित्त जागा और किसी स्त्री के साथ मुझे बालक भाव है ।

वह मानेगा नहीं, किन्तु उसे साबित करके दिखा सके दूध चोखकर ही । प्रत्यक्ष दिखाकर । एक की हाजरी में नहीं । वे दो और उसके रिश्तेदार जो कोई उसकी उपस्थिति में प्रत्यक्ष करके दिखाये हम तो भी वे माने नहीं ।

... अबे, किन्तु देख यह स्तन में से निकलता है । देख ले तू । उसे दिखाऊँ उसे । यह देख, स्तन में से निकलता है ! देख यह । अंतरिक्ष में से नहीं आता । देख तू अपने स्वयं से देख । उसे भी दिखाऊँ । किन्तु वह भाव टिकता नहीं बाद में कुछ । क्योंकि अंदर उसकी भूमिका न हो तो कहाँ से टिके ? और यह शरीर है, वह ७६ वर्ष का हुआ हो, वह छोटे बालक जैसा । किन्तु वह किसी की कल्पना में नहीं आ सकता ।

• कराची में मिले ओलिया का अनुभव •

वह इसलिए कि हमारे अनुभवियों ने कहा था कि ये परमहंस चार प्रकार के । एक पिशाच जैसा वर्तन करे । वह क्यों ऐसा करे ? कि उसका कारण उसके पास है । आपके पास नहीं है । छोटे बालक हो, वे लस्टम-पस्टम वर्तन नहीं करते ? तब पिशाच जैसा वर्तन करे । एक तो हंसवत्, पिशाचवत्, बालवत् और जड़वत् । पत्थर जैसे पड़े रहते । कुछ किसी से संबंध नहीं ।

मैंने ऐसे देखे थे, हं...अ... पत्थर जैसे पड़े रहते । जड़ जैसे । कराची में था और ४० दिन के उपवास किये थे । शांतिभाई, साढ़े अड़तीस दिन हुए और रात में गोदडिया महाराज

आये। मैं तो पैर पड़ा। साष्टांग दंडवत् प्रणाम किये, बाद मैंने कहा बहुत पधारे। कृपा की। तो कहा, अब तुझे यह सब उपवास-बुपवास करने की आवश्यकता ? व्यर्थ..... अब तुझे यह सब करने की जरूरत नहीं। तू अब खा ले तब मेरे प्रत्यक्ष। कि जैसा आपका हुक्म। तब जीमूँगा। जीम लूँ।

इतने में वे तो चले गये। अदृश्य हो गये। इतने में तो उठकर मैं गया रसोईघर में। उन लोगों का बड़ा बंगला। कराची में समुद्र किनारे रहते थे। तो वहाँ जाकर मैं तो रसोईघर में यह गैस का था। उसे जलाकर मैंने चाय की। चाय करके उस प्याला को लेकर डाइनिंग टैबल पर आकर कुरसी पर आकर बैठ़ा। फिर से मुख धोकर आया और रकाबी में डालकर जहाँ ऐसे सीप लगाने जाता हूँ तहाँ कि अभी साला एक दिन तो पूरा। अब एक ही दिन बाकी रहा है, तब एक दिन बाकी रहने के लिए अब महाराज ने हुक्म तो किया ! तो मैंने चाय बनाई। यह जरा मैंने ली। एक सीप ली सही। मैंने उसका हुक्म का पालन किया सही। अब वह एक सीप लिया है। वह सब पूरा हुआ। पूरा हो गया कह सकते हैं। अब बाकी का है, वह अब एक दिन निकाल दूँगा। ऐसा सोचकर उस चाय को उड़ेल दिया। आकर सो गया रात में।

सवेरे उठकर मेरे बापु को सब बात की। वे मैनेजर थे। सिंधिया स्टीम नेवीगेशन में। तो कहा अब वह भी ठीक। जैसा लगा ऐसा। तेरे बारे में भी मुझ से कुछ कहा नहीं जाता। अच्छा। और दूसरे दिन सवेरे उनकी..... घूमते करते रहता

मैं । उपवास थे । किन्तु बाद में मैं तो गया उनके साथ मोटर में । वहाँ चार रस्ते पर एक मैलाबावरा साधु– ओलिया, बाल बड़े फिर उसके, फटा हुआ कंबल, एकदम मोटर के बीच खड़ा रहा । उसने कहा, 'उतर जा' । इससे मैं तो उतरा । इससे मुझे बापु ने कहा कि चूनीलाल, तुम्हें तो बिलकुल अक्ल नहीं है । मैंने कहा, 'आपकी कही बात सच ।' किन्तु अब कोई भी आदमी कहे और तू उतर जाय । मैंने कहा, 'मुझे तो उतर जाना पड़ेगा । मेरे हृदय में भी ऐसा ही भाव जागता है । उमंग ।' अच्छा । उतर गया । फिर वे उतरे । मैंने कहा, आप जाइये । ऑफिस में समय हो जाएगा । तो कि नहीं । मैं बेकार छोड़कर नहीं जाऊँगा । तू फिर चला जाएगा तो । ऐसे साधु । फिर तुम्हें कोई ले जाय । उसे मेरे पर प्रेम बहुत । वे तो उतर गये ।

बाद में मुझे उस साधु ने कहा, 'साला, अभी तक तेरेकु संकल्प का गुमान है ? संकल्प का अभी भी गुमान तेरेकु ? ले । दो पुड़े तैयार रखे थे । खा ले कहा । **कहाँ मैं वहाँ से दस मील दूर समुद्र किनारे रहनेवाला यह फूटपाथ पर पड़ा हुआ ओलिया । जड़ जैसा । कितने समय का मैं देखता । उसे कुछ भी लेना-देना नहीं । बस, पड़ा ही रहा हो । बस ऐसा ही–ऐसा ही । कहाँ, कहाँ यह आदमी और मेरी उस (गोदडिया महाराज) के साथ की हुई बातचीत ।** मैंने कहा, 'प्रभु ! यह मैंने चाय ली, इससे मैंने जाना कि मैंने पूरा किया । कि एक ही दिन बाकी था ।' तो मैंने कहा, 'मैंने नहीं खाया । मैंने कुछ मेरे मन में ऐसा कुछ संकल्प का गुमान

तो नहीं है । आप कहो वह बात सच ।' तो खा लिया । वहाँ का वहाँ । खड़े खड़े ।

इतने सारे दिन के उपवास थे, तो भी जो आया, वह सब खा गये थे । अब नहीं करूँ ऐसा हं...अ... वह खा लेने की बात अलग थी । हमारे वे करते थे हं...अ... आपको याद हो तो । ये गांधीजी के साथ रहते थे । प्रोफेसर थे । भणशालीजी । कितने सारे उपवास किये थे ? बहनों का जब लश्करी लोगों ने ..... वह किया था तब उसने । वहाँ फिर चलकर जाते, फिर उसे उठाकर ये लोग ले जाकर वहाँ वर्धा छोड़ आते । और वहाँ बाद में जो मिले वह खाते थे । कुछ ऐसा गाँधीजी की तरह रखा न था उन्होंने । और कितनी बार । नहीं ..... तब तो खाते भी नहीं । उपवास किये थे ।

पहली बार खाया जब मुन्शी को उससे या सरकार ने उसे जमानत दी कि हम जाँच-पड़ताल करेंगे और योग्य लगे वह करेंगे तब ।

शांतिभाई : यह तो *मोटा* .... उसका था ।

श्रीमोटा : जाहिर कराया था ।

• शरीर होने पर भी अशरीरीपन—उसके लक्षण •

श्रीमोटा : वे शरीर होने पर भी अशरीरी हैं । क्योंकि आकाशतत्त्व में फैले हुए होने से वे कहीं भी जा सकते हैं । **शरीर होने पर भी अशरीरी । सारी.... इससे ये मुझे इतने सारे दर्द हैं । वेदना भयंकर है । फिर भी इस तरह रह**

सकता हूँ । वह अशरीरीपन का यह प्रयोग है । प्रयोगात्मक अनुभव है यह । गले बात नहीं उतरेगी ।

कि मेरे में निष्कामभाव है । वासना नहीं है । कब की संपूर्ण वासना की स्थिति में ऐसे निमित्त के कारण आ गये, तब हमें समझ पड़े न ! अन्यथा ज्यों का त्यों आप किस तरह समझ सको ? कि नहीं ही है । ऐसा कहने से कुछ चलता है ? यह तो प्रयोगात्मक स्थिति ऐसी कोई एक कारण से प्रकट हो । उसके अंदर आप हो । और तब आपको पूर्णरूप से निष्काम हो ऐसा आपको भी लगे और दूसरों को भी प्रत्यक्षरूप से आपके द्वारा दिखा सको । ऐसा नहीं कि नहीं । तब सही ।

ये तो सब निकल पड़े हैं । दूसरे सब तो लोग । वे तो ऐसा ही कहते फिर इसमें तो प्रयोग कैसा ? अनुभव में प्रयोग क्या ? ऐसा ही कहते हैं । ये साधु, संन्यासी और दूसरे सब आदमी जो हैं न वे कभी ऐसा नहीं कहते । हमारे तो गुरुमहाराज कहते, साला..... प्रयोग क्यों नहीं ? एक व्यक्ति करोड़ाधिपति हुआ । तो करोड़ का उसे मद होता है या नहीं ? उसे उसकी सत्ता होती है या नहीं ? उसे उसका आनंद होता है या नहीं ? तब वह आपको अनुभव हुआ हो तो उसका कैफ आपके जीवन में दिखे बिना रहता है ? वह क्यों .....

कोई रास्ते में जानेवाला : हरिः ॐ ।

श्रीमोटा : हरिः ॐ भई ।

श्रीमोटा : तीन एकसाथ फूटते हैं उसमें । ज्ञान, आनंद और सामर्थ्य ।

हमारा श्वास कहते हैं कि जरा देर अटक जाय, अगर बंद हो जाय तो मृत्यु । फिर भी हमें उसकी awareness–उसकी सभानता नहीं है । जाग्रति नहीं है । जब उसको जाग्रति है ।

• *मोटा* की चेतनाशक्ति के अनुभव •

... उसके बेटे की बहु अंधी हो गई थी । मेनिन्जाइटिस में । क्या ? बिलकुल अंधी । वह भी हुई है देखती ।

श्री शांतिभाई : कहते हैं कि उस लवाछावाला लड़का का भी ऐसा ।

श्रीमोटा : हाँ । लवाछावाला लड़का का देखो न ।

श्री शांतिभाई : और **मोटा** नडियाद का फिर नडियाद में वह एक लड़की मैं था उस समय पर .....

श्रीमोटा : रमण ! रमण तमाकूवाला । वह भगवान का नाम कितना लेता था ? क्लॉरोफार्म दिया था, तब भी नाम चलता था और सतत बोला करता था । वह कुछ वह बोलता था ? भई ! देखो कितने उदाहरण हैं ? भई धनसुख ।

श्री धनसुखभाई : हाँ ।

श्रीमोटा : तुम्हें जरा प्राप्त करना । इकट्ठे कर तू । कोई एक ऐसा निकलना चाहिए । बायोग्राफी और भविष्य में हो । कोई ऐसा है नहीं हमारे में । ऐसा कोई निकला नहीं आदमी । जो ऐसे सब उदाहरण इकट्ठे तो करके रखे ।

श्रीमोटा : चूनी..... हाजिर रहा हूँ। चूनीभाई हाँ हं...अ... शांतिभाई। यह चूनी चूनी को ऑपरेशन किया, तब कितनी बार हाजिर रहा हूँ वहाँ।

वेदना बारे में हरि की सभानता होनी टिकनी अशक्य

वह हकीकत है।

कि ऐसी सतत वेदना के समय में भगवान की awareness उसकी भावना टिक सके वह अशक्य बात है। यह तो सब को बुद्धिपूर्वक जो लगा वह कह दिया इस लेखक ने।

बाद में कहता है कि भई बात आपकी कही सच यार। बुद्धि को और बुद्धि को फिर कहता है यह।

जीवन में कितनी बार अशक्य बिलकुल जो लगे,
कृपाबल के सहारे तो होता वह शक्य लगता है।

भगवान की कृपा से यह शक्य हो जाता है। अशक्य वह शक्य हो जाता है। किन्तु भाई ऐसे आप उड़ा दो वह ठीक ठोस पाया पर बात करो। ऐसे आप कृपा होने की बात करते हो। तो ठोस पाया की बात करो। इससे पाया की बात करता है कि—

जीवन में आग जैसी तमन्ना ने मथकर
प्रबल और भगीरथ क्या पुरुषार्थ कराया है !

इससे ठोसपन पर आता है वापस। कि भई, ऐसी आग जैसी तमन्ना जागी है। उसने मथकर प्रबल और भगीरथ पुरुषार्थ कराया है। तो कि यह इससे क्या ? इससे कुछ हरि की सभानता आगे टिकती ? कहता है बाद में—

सतत अभ्यास वैसे से । सतत यानी continuous उसमें break नहीं है ।

सतत अभ्यास वैसे से जीवंत एक-सी वह,
हृदय में अखंडित धारणा हृदय में क्या बन गई है !

इससे उसके साथ अब पूरा भजन पढ़ें तो उसे बिलकुल ऐसा न लगे । मुझे ऐसा लगे कि गप मारा है ऐसा लगे ही नहीं । किसी को भी । और बहुत कठिन बात है साहब वह । तो फिर से बोलूँ देखो ।

जीवन में क्रोस की तीव्र सतत उस वेदना बारे में,
हरि की सभानता होनी अशक्य वह हकीकत है ।
हरि की सभानता टिकनी

ऐसा कह दिया । यह तो अशक्य ही है । किन्तु फिर कहता है—

जीवन में कितनी बार/बात अशक्य बिलकुल जो लगे,
कृपाबल के सहारे तो होता वह शक्य लगता ।

भई, ऐसे आप गप मारो वह नहीं चलेगा । यहाँ हमें तो ठोस सबूत चाहिए । तो कि सबूत कहता है—

जीवन में आग जैसी तमन्ना ने मथकर,
प्रबल और भगीरथ क्या पुरुषार्थ कराया है ।

यह तो मेरे जीवन की हकीकत है और हिमालय की गुफा में से कोई साधु आकर गप लगाता हो तो आपको साबिती मिलने की कोई शक्यता ही नहीं रहती । उसे आप कहाँ सबूत लेने जाओगे ? मेरे जीवन में तो आज सभी व्यक्ति जीवित

हैं । यह सब कहा उसकी साबितियाँ हैं । मिल सके ऐसी है शांतिभाई बात । दूसरे कोई साधु की मिल सके नहीं आपको । हं...अ... वह हकीकत की बात है यह । तब कहा भाई ठोस पाया की बात कहता है .....

जीवन में आग जैसी तमन्ना को मथकर,
प्रबल और भगीरथ क्या पुरुषार्थ कराया है !

सतत अभ्यास वैसे ही जीवंत एक-सी वह,
हृदय में अखंडित धारणा हृदय में क्या बन गई है !

सुंदर लिखा गया भगवान की कृपा से ।

यह तो हकीकत की बनी हुई बात है । और कुछ नहीं । **उस भाई तो मुझे पहले *मोटा* को कि हम आप कहो वह करो ।** वह सही किन्तु अब इसमें इतनी सब पुस्तकें रखेंगे कहाँ? हमारे आश्रम में जगह नहीं है । और कितनी आलमारी बनायेंगे ? और यह तो बहुत कठिन हो जाएगा । मैंने कहा, 'अपनी मुश्किल की बात मत करो । वह तो सब हमारे इन्दु का (श्री इन्द्रवदन शेरदलाल गुरुकृपा गेस्ट हाउस, टाउन हॉल के पीछे, एलिसब्रीज, अहमदाबाद-३८०००६) बड़ा, कमरा बड़ा ।

श्री शांतिभाई : जबरदस्त बड़ा ।

श्रीमोटा : सब भर गया है । **मोटा** और लाइये । भले छपाना बंद मत करना । इतना किराये से लेने जाऊँ तो आज तीन सौ रुपये महीना का ले । यह अहमदाबाद में हं...अ... किन्तु सब संभालता है, करता है, बिक्री करता है सब । मेहनत

वह करता है बेचारा । अखंड मेहनत करता है । कितनी सारी ..... सरलता भगवान मुझे देते हैं ।

• यज्ञ करके पैसे प्राप्त न करें •

नटवरलाल चीनाई के साथ पहले आते थे न प्रति वर्ष में ? कि **मोटा** आपको लाख रुपये कर दें । मैंने कहा, 'बहुत अच्छा भई साहब । मुझे बहुत जरूरत है ।' किन्तु आपको यज्ञ । मैंने कहा, 'रहने दो ।' सभी व्यवस्था मुझे करने की । एक पैसा आपको खर्च नहीं करना । और आपके नाम से सब मैं छपवाऊँगा– करेगा । सभी व्यवस्था हमारी और लाख रुपये नगद इस यज्ञ से आपको दिला देना । मैंने कहा, 'मुझे इस प्रकार पैसे प्राप्त नहीं करना भाई ।' और सचमुच sincerely कहता था वह आदमी । कि हमने ऐसे सब किये हैं । वे गंगेश्वरानंद महाराज सही न ? प्रज्ञाचक्षु हैं । मैंने ऐसे यज्ञ किये हैं । उसकी व्यवस्था की है । Propaganda जानता हूँ । सब करूँगा आपका । आपको कुछ तकलीफ । लाख रुपये लेने की तकलीफ । मैंने कहा, 'मुझे नहीं चाहिए । लाख क्या । पाँच लाख तू दे, तब भी मुझे उस रीति से पैसे नहीं चाहिए ।

मैंने अभी मेरे जीवन में आचरण किया है भई
परम्परा जैसी कोई कुछ रीति प्रेम में नहीं है ।

सतत वेदना के बारे में भगवान की awareness of the Lord भगवान की सभानता होनी वह कुछ शक्य नहीं बनता ।

• शांतिभाई को तमाकू का धंधा छोड़ देने की सलाह •

श्रीमोटा : भीखुकाका के कारण । वह भीखुकाका के कारण आप सब के साथ संबंध । उनकी बैठक आप सब के वहाँ । तब हमारी जरा स्थिति थोड़े समय पीछे जरा गरम-नरम । तब मैंने भीखुकाका को कहा हुआ था और यह चूनी हो या तू हो या शांतिभाई हो । मैंने कहा, 'भई, यह तो नरम-गरम तो सब की रहा करे । फिर हम तेज हो जायेंगे ..... हमारी अभी ज्यादा अच्छी तेज स्थिति हमारी होगी । मुझे तो ऐसी श्रद्धा है । उस समय कहा हुआ था, वह बराबर याद है । किन्तु वह मात्र वह बोला नहीं, किन्तु मेरा भाव ऐसा ही ऐसा रहता और उसके लिए प्रार्थना भी की थी ।

श्री चंपकभाई भूतवाला : मुझे पता नहीं । किन्तु ऐसा तो कहा था आपने ।

श्रीमोटा : ना । इससे तूने कहा इससे मुझे यह याद आया । पुरानी बात । क्योंकि पहले तो ऐसी बात कहता नहीं । खुली करके नहीं कहता । किन्तु अब यह शरीर छूटने का होगा तो कह दो न यार । मुश्किल हो न ।

श्री चंपकभाई भूतवाला : हम यहाँ आश्रम आने निकले थे । पुल पर चलते थे । तब आपने ऐसा कहा था शांतिभाई को । शांतिभाई, आप दूसरा कोई भी धंधा । तमाकू के धंधे में आपको । दूसरा कोई भी धंधा करो तो भगवान आपको मदद करेंगे ।

श्रीमोटा : हाँ । मैंने कहा था उनको । चौकस । तमाकू का धंधा छोड़ दो । मैंने कहा ।

भयंकर वेदना तीव्र असह्य सहन करने लगती जो,
जीवन के क्रोस की भव्य प्रसादी वह मिली है ।

***हरि** कोई दूत तेरे से चमत्कारिक शांति जो,*
शरीर प्रेरित करके मुझको अनुपम प्राण देता है ।
शरीर प्रेरित करके कैसी हृदय में ताजगी दे !

जाती पल एक ना कोई सचमुच वेदना बिना ।
महद् अचरज टिके उसमें हरि की सभानता दिल में ।

कहता है कि *जाती पल एक ना कोई सचमुच वेदना बिना ।* एक पल वेदना बिना जाती नहीं कहता है । किन्तु उसमें अचरज है कि महद् अचरज ।

रहने देना प्रभु, लिखना नहीं हं...अ... यह तो है न । इसमें देखकर लिखेंगे । ज्यों का त्यों रख दो ।

महद् अचरज टिके उसमें हरि की सभानता दिल में ।

टिके ना इतना मात्र,
इतना पर्याप्त नहीं है ।

टिके ना इतना मात्र परंतु कितने सर्जन ।

अब ऐसी वेदना में,
टिके ना इतना मात्र परंतु कितने सर्जन ।
दशा वेदनाग्रस्त बारे में वह क्या होता व्यक्त ।

यहाँ सर्जन व्यक्त होता है । ऐसी वेदनाग्रस्त दशा बारे में भी ।

टिके ना इतना मात्र परंतु कितने सर्जन
दशा वह वेदनाग्रस्त बारे में वे क्या होते व्यक्त !
जीवन के सत-असत बारे में जगत के सुख-दुःख बीच में
जीवंत एक-सा क्या बहता प्रेम प्रत्यक्ष ।

कहता है जीवन के सत-असत के बारे में और जगत के सुख-दुःख के बीच में भी ऐसा जीवंत एक-सा क्या बहता प्रेम प्रत्यक्ष ।

बंद कर देना बहन हं...अ...

कृपा से भेज दी ..... आता है । वह बोला था तो मैं । अब नहीं बोलना चाहिए । हं..... अ ।

...में कोई भी एक और कोई भी एक मुझे संभालनेवाला जो,
कृपा से भेजकर आराम ही क्या देता है !

सरकारी आदमी ..... थे । वहाँ भी आये थे । हमारा खून लिया था और पीछे उसका रिजल्ट बताया था भट्ट साहब को । किन्तु अभी थोड़ी सी कम हुई । वेदना कम हुई हं...अ... और अब भी एक-सा पेशाब होता है ।

• *मोटा* को आर्थिक जरूरियात के प्रसंगों में मिलती रहती गैबी सहाय •

एक बार ठक्करबापा ने । ठक्करबापा के लिए गांधीजी ने लिखा था । उनके जन्मदिन पर कि सत्तर हजार । तो कि

इतने बड़े आदमी के लिए सत्तर हजार तो बहुत छोटी रकम कह सकते । किन्तु मुझे तब ऐसा हुआ कि भई, मैं तब कुछ नहीं । कोई हरिजन संघबंघ में नहीं । किन्तु मुझे हुआ था कि मुझे कुछ देना चाहिए । ठक्करबापा के साथ मेरा इतना सारा निकट का संबंध, वह मैंने किताब में छपा हुआ है प्रसंग ।

तो रास्ते में जाता था । नये वर्ष का दिन । उस दिन हम मिलने जाते थे मेयर के वहाँ । कराची में चागला साहब के वहाँ । बराबर याद है । वह साहब, रास्ते इतने सारे साफ कुछ– कागज–बागज मिले ही नहीं । कोई जगह में । इतने सब जमशेदजी मेहता थे । मेयर । बहुत स्वच्छ रखते ।

किन्तु रास्ते में हम जहाँ गए और मुझे नोट हाथ में आई, इससे उस कुरंगीबहन ने कहा **मोटा,** आपको तो जब पैसे चाहिए, तब मिले । एक बार उनके बंगले के पास से निकलते थे और मुझे कुछ काम के लिए पैसे जरूरी थे और पैसे मिले ।

एक बार कुंभकोणम् में मेरे पर कर्ज हो गया था और सोने की chain मिली थी । पुड़िया में । उसमें लिखा था । तामिल में हं...अ... साहब । कि यह तेरे उपयोग के लिए है । तामिल में ऐसा लिखा था ।

जब–जब मुझे पैसे की ऐसी जरूर पड़ी है, तब भगवान ने मुझे चमत्कारिक रीति से पैसा भेज दिये हैं । अनेक प्रसंग मेरे जीवन में ऐसे हैं ।

श्री शांतिभाई : इससे **मोटा** अभी जो 'जीवनस्फुलिंग' छपा उसमें जो उसका क्या नाम उनका ? जो शिक्षक थे

आपके ? वहाँ सावली में या कालोल में । उनका बेटा कराची में आपके साथ रहता था ।

श्रीमोटा : हाँ, हाँ । विभाकर मेहता है वह ।

श्री शांतिभाई : वे कहते हमको । अनेक-अनेक बार रेत में से ..... पैसे ऐसा कि जरूरत होती तब मिलते रहते ।

श्रीमोटा : उन्होंने खुद देखा था ।

श्री शांतिभाई : आपके जन्मदिन पर उन्होंने । आप अहमदाबाद आये थे और कहा था कि जरूर आना । चूनीभाई ! नहीं आ सकेंगे ।

श्रीमोटा : हाँ ।

श्री शांतिभाई : किन्तु बाद में आप ऐसा कि विमान में ।

श्री धनसुखभाई : विमान में आपको टिकट मिली थी ।

श्रीमोटा : वह तो किसी ओलिया ने भेजे थे । पैसे भेजे थे और पर्शियन में लिखा था । उर्दू में लिखा था, वह हमारे आश्रम में कुरेशी साहब रहते हैं न उनके पास पढ़वाया था ।

• ब्रह्मांड के पार सचमुच प्रेम स्वयं है •

जीवन में कोई भी एक और कोई भी एक मुझे संभालनेवाला जो,
कृपा से भेजकर आराम ही क्या देता है !
असर जादूई गुरु सूक्ष्म चमत्कारिक अद्‌भुत जो,
हृदय प्रेरित करके प्राण और शक्ति तू देता है ।
न खाली-खाली व्यर्थ कुछ पड़ा स्वयं रहता है,
सचमुच प्रेम निष्क्रिय और सक्रिय पलपल है ।

जीवन को प्रेरित करनेवाला वह, जीवन सीनेवाला वह
जीवन को वह, जीवन को राह दिखानेवाला वह ।
जीवन का प्रेम प्रत्यक्ष क्या सचराचररूप से वह है !
ब्रह्मांड के पार सचमुच प्रेम व्याप्त है !

जैसे का तैसा नहीं याद करने का ।

हृदय से याद करने का उमंग से चाह-चाह कर ।
रसिक व्यापार जीवन का ।

यह व्यापार कैसा फिर ? रसिक ।

'रसिक व्यापार जीवन का हरि ने दिया है' हम सिर पर लेकर नहीं चले हैं– व्यापार भगवान ने हमें दिया है ।

किसका व्यापार ?

• मिले हुए को हृदय-सटाकर
चाह-चाहकर दिल चाँपकर •

कि

हृदय से याद करने का उमंग से चाह-चाहकर,
*रसिक व्यापार जीवन का **हरि** ने दिया है ।*
मिले हुए को हृदय-सटाकर चाह-चाहकर दिल चाँपकर,
हृदय अपने बनाने, जीवन व्यापार शुरू किया है ।
परंतु उसके बारे में सदा रास अभी पूरा न आया है,
*वफादार फिर भी कैसे, रहे हुए हैं **उसे** !*
हृदय से चाहने का, जीवन का धर्म माना है,
हृदय से पालन करने वह, जीवन का व्रत लिया है ।

• स्मरण का कितना बड़ा सचमुच क्या प्रताप ही वह ! •

स्मरण में भाव उछलते, स्मरण में रंग जमता है,
*स्मृतिभाव उगकर **हरि** का, फूटती क्या सभानता तब !*

*जीवन में अग्र जब **हरि** की सभानता रहती है,*
प्रकृति का सब जो भी फिर गौणत्व पाता है ।

उस स्थिति में क्या होता है ?

*सर्वत्र जिसमें और तिसमें **हरि**रस का अनुभव है,*
*प्रकृति वहाँ क्या माध्यम है ! **हरि**रस को बहने*

स्मरण का कितना बड़ा सचमुच क्या प्रताप ही वह !
जीवन को कहाँ से उखाड़कर गगन में कहीं पहुँचाता है !

श्रीमोटा : 'पूगवे छे' बोलते है ?

श्री चूनीभाई : चलता है **मोटा,** 'पूगाडवुं' चलता है ।

श्रीमोटा : नहीं चलता । बराबर शब्द नहीं है । सुधारना पड़ेगा । पहुँचाता गगन में वह ।

जीवन को कहाँ से उखाड़कर पहुँचाता गगन में वह
उड़ाता है गगन में वह
गगन में वह उड़ाता है

अब फिर से पढ़ना । मेल बैठा कि नहीं इसका ?

हरि की सभानता जीवन में अग्र रहे, तब प्रकृति का जो भी हो, वह सब पीछे, गौणत्व हो जाता है । अपने-आप । भक्ति

का रंग जागता है, तब पता लगता है । जैसा का तैसा कुछ यह बोलने की बात थोड़ी है कुछ ?

• शरीर का रोग मिटाने स्मरण लेते करवाया है •

स्मरण की दोस्ती किस तरह मुझे हुई है !
कृपा की वह करामत की अगम्य ही क्या हकीकत है !
शरीर को रोग प्रकट कर, गरज मुझे जो जगाकर,
शरीर का रोग मिटाने, स्मरण लेते मुझे कराया हैं ।
स्मरण का दिल में, सच्चा, गहरा अभ्यास होने,
क्या कठोर व्रत, नियम, टेक जीवन में रखवाये हैं ।

अब एक पद्यांश रहा ।

सतत व्रत, नियम, टेक पालन करते, पालन करते वह,
स्मरण में प्रपात का झुकाव, हृदय बहता कराया है ।

• • •

हमें पाप या पुण्य न किसी के भी देखने हैं,
हमारा वह न कर्तव्य, हमारा धर्म भी न वह ।
किसी को कहें अगर, हृदय उसे ही चेत करने,
कृपा से अगर वापस लौटे, हृदय का इरादा वैसा वहाँ ।

• निरंतर के ही अभ्यास से फिर वे माने हैं •

स्मरण में जोतने उमंग से मनादि को,
अनेक रीति से जो किया है, गहरा समझाना वह ।

सरलता से सभी वे न मान जाँय ऐसे जो,
सतत अभ्यास में जोड़कर उस विषय में तालीम दी हैं।
तालीम देने की प्रक्रिया बारे में भी सीधे न वे,
उछल-कूद क्या ! मैं जानूँ अकेला वह ।
सरल शीघ्र से शीघ्र में, हृदय सहकार वे सभी का,
बहुत मथते, बहुत मथते, मिला न पूरा-पूरा ।
कृपा से पूँछ मैंने तो सतत पकड़ ही रखी,
निरंतर के ही अभ्यास से फिर वे माने हैं ।

• साक्षात्कारी व्यक्ति के लक्षण— शरीर की स्थिति से निर्लेपता, तटस्थता, समता •

तो **मोटा** ये तो सब आपके बारे में कहते हैं न कि आपको साक्षात्कार हुआ, दर्शन हो गये । Realized हो न । तो कुछ यह सूर्य दिखता है और तो प्रकाश आता है । आप लक्षण पर अधिक झुकाव देते हो न । मैंने कहा, 'हाँ, मैं देता हूँ । तब आप सच-सच बात कर दो । मैंने कहा, भाई दे । सच बात । दक्षिणा दे पहले । फिर तुझे सच बात कर दूँ । तो कि मेरे तो थोड़े अभी ग्यारह रुपये हैं । मैंने कहा, 'बस, चलेगा । ग्यारह रुपये दे दे चल भाई !'

फिर मैंने कहा, 'देख भई, यह मुझे रोग हैं । पता है तुम्हें कुछ ? या काल्पनिक है । तो कि ना । आपके रोग यह तो सब पता लगे ऐसे हैं । डाक्टर कह सके ऐसे ही हैं । तब मैंने

कहा, 'इतने सारे रोग के साथ आनंद में रह सकते ? तो कि ना । सब के साथ हँसता ...बातें करता हूँ ।

अब एक रोग हो तो आदमी हमेशा का रोगी हो जाय । सात-आठ वर्ष से रोग हैं ये । मैं चिड़चिड़ा हुआ लगता हूँ तुम्हें ? तो कहा ना, नहीं लगते । तब मैंने कहा, देख इसके बाद दो वर्ष में– दो ढाई वर्ष में कितने सारे भजन लिख दिये ! कितनी सारी पुस्तकें लिखी हैं । कोई बीमार आदमी उसका मन तो बीमारी में ही और उसमें ही लगा रहता और और उसे कुछ रास नहीं आता । वह तो बहुत चिड़चिड़ा हो जाय । ऐसा तो सर्जन कुछ हो सके उससे ? नहीं हो सके । तो **मोटा** बात आपकी सच । अब कबूल है मुझे । मैंने कहा, 'अच्छा भई ।'

मोटा दूसरी बात तो नहीं है । यह एक मेरे मन में कि इतने सारे रोग फिर भी आप चिड़चिड़े नहीं हुए हो, यह मुझे पसंद पड़ा ! अबे, मैंने कहा, ये सारी पुस्तकें लिखी हैं, वह सच बात है । वह गप की बात ? तो कि वह सारा कुछ मेरे गले नहीं उतरा । अबे, पर यह हुआ है । फिर भी कहता **मोटा** मुझे नहीं । आप बड़े कवि हो, होशियार तो लिख दो । किन्तु ये चिड़चिड़े नहीं हुए हो, वह मुझे गले उतर गया है । तो सब सब को ऐसा है न । तो किसी को ऐसा चाहिए । किसी को कुछ उतर जाय । किसी को कभी उतर जाय । किसी को कुछ उतरता हं...अ...

• गंजेरी साधुओं के बीच में •

बारी-बारी से बारी-बारी से वे तो यह गाँजा पी-पीकर मेरे हाथ में आई तो मुझे तो मैंने तो ली। मैंने तो दो-चार लगा दी। हमारी सब मज़ा बिगाड़ दी। खलास। उसने तो निकाल दी। हं...अ... उसने चिलम फिर दूसरी भरी। नहीं बैठो। कहा अब तुम्हें पिलाता ही हूँ। अरे फिर से आयी। कमबख्ती यह तो बिना लेने-देने।

मैं समझा ये कुछ सत्संग की बात करते होंगे। ये तो गाँजे की बात आई। फिर आया। मैंने तो ली। मुझे पीने को आये तब न! खाँसी आई। वह खाँसी हुई तो फिर से अच्छी तरह से पीटा। और उठाकर डाल दिया। फेंका हं...अ... जैसे गठरी फैंकते हैं न उस तरह फेंका मेरे बेटेओं ने। अबे, मैंने कहा, आप साधु-महाराज होकर मैंने कहा, इतनी आप सहानुभूति नहीं रखते? मुझे नहीं आती तो मैं कैसे पीऊँ? इतनी आपको समझ नहीं है? यानी मतलब कि सब साथ हों और प्रेमी आदमी साथ हो तो मज़ा आता उसका मज़ा आता हं...अ... रंगत जामती।

• हरिपद में ही लोटकर,
शरण उसका स्वीकार किया है •

स्मरण अभ्यास पड़ने से स्मरण के मध्य दरिया में,
वहाँ डुबकी लगाकर बाद में जीवट से कूदा हूँ।
सभी जोखिम और साहस की कीमत चुका देकर,
हरिपद में ही लोटकर, शरण उसका स्वीकार किया है।

पथ में क्या आ-आ आकर, भयंकर रगड़ बीच में,
धोखे में ही डालकर, कुछ उलटा भटकाया है ।
परंतु नित्य अभ्यास के कारण जो जाग्रति दिल है,
हृदय उस जाग्रति के कारण जीवन जीता जी सका है ।

• श्री रमाकांतभाई जोषी का अनुभव •

श्री रमाकांतभाई जोषी : उस समय मुझे नडियाद में मौन में बैठना का था । उसके बाद **मोटा** कुंभकोणम् जाने-वाले थे । इससे मैंने **मोटा** को कहा कि मुझे आपके दर्शन मौनमंदिर में हो । तो **मोटा** ने कहा तुम्हें मेरे दर्शन तो नहीं होंगे । परंतु तू अभी योग्य हुआ नहीं है । तो फिर मैंने उनको ऐसा कहा, आपकी स्वयं चेतना के अंदर दर्शन ..... तो **मोटा** ने कहा अच्छा भई, होगा मेरी चेतना का अनुभव । फिर मौन में बैठा था ।

थोड़े दिन बाद रात को नौ बजे सोने की शय्या करके मैं सोया । तब अचानक बाघ का घुरघुराना सुना । मैंने कहा, बाघ कहाँ से यहाँ आया ? फिर भी मैं सुनता रहा । फिर थोड़ी देर बाद देखा तो मेरे दाहिनी ओर सो रहा था । पूर्व तरफ ..... अचानक एक भाग ऊँचा होने लगा । मुझे हुआ कि भूकंप हुआ कि क्या ? किन्तु चारों ओर देखा तो सब दीवार पर की वस्तुएँ । मेरी थैली टंगी हुई थी, वह सभी कुछ भी हिलता नहीं । भूकंप..... उसके बाद तो फर्श टटूी हुई देखी । दाहिनी ओर देखा, बाँयी ओर देखा, तो पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण तो चारों दिशा की ओर

से चबूतरा हिलने लगा । मुझे लगा कि यह भूकंप नहीं है । किन्तु बाद में **मोटा** को बात की थी । तब बात याद आई । इससे फिर मैंने उनको प्रार्थना की ..... फिर पाँच, सात मिनट तक ऐसा अनुभव चालू रहा ।

उस समय में ज्ञानेश्वर महाराज भी याद आये । चांगदेव आये थे । उनका चबूतरा हिला था । चांगदेव को मिले थे । वह सब याद आता ।

इतना सारा होने पर भी जो भक्ति मेरे में प्रकट होनी चाहिए वह अभी भी प्रकट नहीं हुई है ।

श्रीमोटा : और चमत्कार से भक्ति प्रकट होती है, यह बात नहीं है । किन्तु इसमें है दूसरी बात, वह कि अगर भूकंप था चारों दिशा में नहीं ..... चारों दिशा में हो नहीं और धरती पर दूसरा सब हिलता दिखे । साथ-साथ में । वह भी उसने । थैलियाँ लटकाई हुई थी, यह वह कुछ क्या .....

श्री रमाकांतभाई : कैलेन्डर-बेलेन्डर सब मैंने देखा था । किन्तु कुछ हिलता न था । मैं और मेरा चबूतरा इतना ही हिला करता ।

• *मोटा* के खर्च से *मोटा* के जीवन के प्रसंग इकट्ठे करने श्री धनसुखभाई को *मोटा* की टोक •

श्रीमोटा : बस और चारों दिशा में फिर । तब वह आदमी । मैं तो ऐसा कहता हूँ भई, आप सब साथ में हो तो सोच लो, कि ज्यों का त्यों मेरा बेटा हिलता होगा ऐसा वह

चबूतरा ? कोई ज्ञानेश्वर महाराज को तो आज कितने सारे प्रतिष्ठा करते और बात सब करते और कितने बड़े मानते हैं ! तो इस जीवित आदमी की बात करते हैं तो उससे हमें समझना । कि भई, इस आदमी में कुछ तथ्य होगा सही मेरा बेटा । अन्यथा यह कुछ बनता नहीं ऐसा ।

इससे कुछ उल्टा-सीधा मैं चलूँ या बरतूँ तो समझ लेना कि भई उसके पीछे कोई रहस्य होगा । वह रहस्य अगर हमें समझ पड़ता हो तो भी वह रहस्य समझ में आये तो भी समझना हमारे हाथ में है न । कि भई यह कारण है उसका । कि यह **मोटा** के शरीर को ऐसा है और यह वेदना है । उस वेदना को कुछ राहत मिले और भगवान की कृपा से यह साधन मिला है ऐसा । इससे उस रीति से वह अगर समझे न आदमी तो मेरे जीवन में अनेक ऐसे उदाहरण हैं । मैं तो किसी को कहूँ कि जाओ । कि मैं आपको पता सभी का दूँ । वहाँ जाकर मिलो । पैसे मेरे । जाओ भई । धनसुख ।

श्री धनसुखभाई : हाँ, जी ।

श्रीमोटा : जा, तू निकल प्रवास में । पैसे मेरे । जा । और सभी को मिलकर आ । तो तुम्हें विश्वास हो । क्योंकि विश्वास बिना तो फिर पता नहीं लगेगा । क्योंकि हम जीवदशा-वाले ठहरे । वह तो इधर भी झुके और उधर भी झुके । उसमें मज़ा नहीं आये फिर । भले हम जीवदशा के ठहरे । किन्तु विश्वास । लोग कहते हैं कि लक्षाधिपति है, वह गरीब हो जाएगा किसी दिन भी ?

श्री धनसुखभाई : कोई एक समय तो हो जाय ।

श्रीमोटा : नहीं होता लक्षाधिपति किस तरह हो ? मानो कि सट्टा खेलता हो तो हो जाय । लक्षाधिपति हो और सट्टा का व्यापार करता हो और सट्टा खेलता हो तो गरीब हो जाय । किन्तु सट्टा खेलता ही न हो तो ?

श्री धनसुखभाई : तो वह लक्षाधिपति ही रहता ।

श्रीमोटा : हाँ ऐसा । कहते धंधे में घाटा जाय । कि मान लो । किन्तु धंधा ऐसा न हो कि घाटा जाय ऐसा । धंधा उसका ऐसा न हो कि घाटा जाय उसे । इससे फिर वह तो हो ही नहीं । ऐसा समझने की बात रही इसमें ।

इसके पीछे ऐसा है कि आदमी का भाग्य या तो उसकी अलग-अलग स्थिति बदलती रहती हैं । दिन नहीं बदलता ।

श्री धनसुखभाई : हाँ । पर इससे **मोटा** ऐसी स्थिति बदलती रहती है ।

• अनुभवी का प्रत्येक कार्य हेतुपूर्वक का होता है •

श्रीमोटा : स्थिति बदलती रहती है, किन्तु वह जीवदशा के कारण जिसे ऐसा भगवान का अनुभव हुआ है, उसकी स्थिति बदलती दिखती सही ऊपर-ऊपर से किन्तु भीतर का तो टनाटन जीता होता है । उसमें कुछ बदलाव नहीं होता यों दिखे परिस्थिति बदलती दिखे कि यह ..... इस ठिकाने वाघेचा गये और दौड़े आये और ये क्या करने दौड़े और

गये ? ऐसा हो आदमी को। या तो दूसरे कहीं गये और तीसरे कहीं गये और यह दौड़ादौड़ किस लिए ? उनको तो उस स्थिति में बदलाव लगता। किन्तु उसके पीछे का हेतु है, उसे सब को कुछ कहा करता होता है ?

हम भी जीवदशा के ठहरे, किन्तु हम क्या करते हैं और क्यों करते हैं, उसे सब को कहा करते हैं कुछ ? वह तो हम ही जानते हैं न !

श्री धनसुखभाई : अपने-आप ही ।

श्रीमोटा : घर की महिलायें भी मेरी महिलायें नहीं जानती मेरे बेटे बड़बड़ाहट करते होते हैं। क्या ? किन्तु उनको कुछ हमारे सब का पता होता नहीं या उसकी कहाँ समझ और किस हेतु से हम सब करते हैं ?

जो वह अनुभवी पुरुष भी इस तरह ही व्याप्त होता है। किन्तु वह हमारी तरह व्यर्थ दौड़ादौड़ नहीं करता। उसके पीछे हेतु है, किन्तु हेतु की उसे स्वयं को पक्की समझ है। उसमें बिलकुल फर्क नहीं। थोड़ा-सा भी। तिलमात्र जितना। हेतु की उसकी जो अग्नि जैसी सभानता है। जिस दिन ना हो उस दिन। इस भजन में ही लिखाया है कि यह है वह रगड़ आयी थी कहता है, तब मुझे धोखे में डाल दिया।

धोखे में ही डालकर कुछ उलटा भटकाया है।

परंतु नित्य अभ्यास के कारण जो जाग्रति थी। उस जाग्रति के कारण वह सब ठिकाने पड़ा है कि जाग्रति उसकी कभी जाती नहीं ।

जैसे आदमी है, वह मेरे पास पाँच हजार रुपये हो, वह पाँच हजार के मालिकीपन की जाग्रति जाती नहीं । कि है । हमारा तो है । कोई हरज नहीं । हिम्मत है हमें ।

• हरि की सभानता जहाँ है, तहाँ खुला प्रकाश ही है •

स्मरण का सरल अभ्यास हृदय संग किया जो है,
गहरे सद्‌भाव से दीर्घ समय तक क्या नित्य !
सतत अभ्यास से, वह मनन-चिंतन की गहरी,
जीवन में एक-सी क्या, जीवंत धारणा टिकती !
*निरंतर धारणा से **हरि** की सभानता निथरती,*
***हरि** की सभानता जहाँ है, तहाँ खुला प्रकाश ही है ।*
*जीवन की वास्तविकता में हृदय **हरि** का भाव अवतरण करके,*
जीवन को नवजीवन, मौलिक, रसिक, महकता बनाया हैं ।

• लीला हरि की तो सचमुच भव्य दिव्य ही है •

***हरि** की सभानतायुक्त जीवन वह मात्र रस रस है,*
कथा ऐसे निराले वह रसिक जीवन की अद्‌भुत है ।
***हरि** की सभानता में तो कुछ सत-असत कुछ नहीं है,*
***हरि** की सभानता में तो न द्वंद्व या गुण भी है ।*
आगे-पीछे का भले अस्तित्व जहाँतहाँ है,
***हरि** की सभानता में भी न अस्तित्व किसी का है ।*
***हरि** की सभानता में तो **हरि** का भाव मात्र है,*
*सब जो है उस विषयक वह **हरि** कैसा खेलता स्वयं !*

*कला लीला **हरि** की तो सचमुच भव्य दिव्य ही है,*
कभी ना मानवी मति से न समझ सके ऐसी वह है ।

• प्रेरणा अनुसार बरतते दुर्घटना से बचाव •

पहेले मेरा ऐसा रिवाज भई कि दिल में जैसी प्रेरणा हो, उस प्रेरणा अनुसार बरतता । फिर उसमें मैं कभी भी मेरी बुद्धि का उपयोग न करता । प्रेरणा हो, तब और प्रेरणा में बुद्धि रही नहीं है । उसमें दिव्यता का अंश है । वह एक हमारे में refined हुई जो एक शक्ति है । वह द्वंद्व और गुण जिसमें नहीं है । **जिसमें जीवदशा की कुछ भी वृत्ति नहीं है । ऐसी जो भीतर की विकसित शक्ति उसके द्वारा जो सूचन हो, उसे प्रेरणा कहते हैं ।**

वह प्रेरणा कोई भी हो । और किसी भी प्रकार की हो और **जीव**दशा की दृष्टि से वह सच हो या गलत हो या भली हो या बुरी हो या गंदी हो । **जीव**दशा की दृष्टि से मैं कहूँ यह । तो भी मैं उसका पालन करता ।

किसी को अचरज लगे, किन्तु एक बार हरिजन सेवक संघ का मंत्री था । तब मेरे पैसे रखने का स्थान शहर में । बैंको में रखते । पैसे आश्रम में नहीं रखते हम । इससे मात्र दो सौ-चार सौ रुपये जो अधिक से अधिक पाँच सौ रुपये जितनी रकम मैं रखता । अधिक रखता नहीं ।

तब एक समय पर पैसे की जरूरत पड़ी, इससे मैं बैंक में लेने गया । लेने निकला । तैयारी कर के । चेक-बेक लेकर

और हमारे आश्रम पास से बस जाती । तब एस. टी. की बस नहीं थी । किराये की फिरती । वह बस आई । और मुझे प्रेरणा हुई की तू मत जा । तू मत जा । इसमें जाना नहीं । इसमें जाना नहीं । उस बस में मैं तो नहीं गया । और वापस आया ।

वे मेरे मित्र भई (मेरे कलीग) कहे परीक्षितलाल, चूनीभाई, आप कैसे आदमी हैं यार ! बस गई न ! काम के लिए आप गये नहीं और एकदम वापस आये । मैंने कहा, साहब मुझे ऐसा हुआ, मत जा । मत जा । ऐसा कहा । मैंने ऐसा तो नहीं कहा कि मुझे इसकी प्रेरणा हुई । अन्यथा तो वे मानते नहीं । ये लोग तो । मैंने कहा अंदर आदमी बैठे हुए थे, उन्होंने कहा कि इसमें आना नहीं, इसमें आना नहीं ऐसा कहा । वह तो कुछ भी कहे । आप ऐसा माननेवाले कैसे ? मैंने कहा, अब परीक्षितभाई, मेरी बुद्धि इस प्रकार की हो गई है तो क्या करूँ ? किन्तु मैं साइकिल लेकर जाता हूँ । और शीघ्रता से वापस आता हूँ । अब कितनी सारी देर होगी ?

मैं मानो कि बस में गया होता तो मेरे को भद्र में बदलनी पड़ती । वहाँ से दूसरी बस में बैठना पड़ता । तो देर लगती है । और फिर जाकर पैसे लेकर आने की तो तत्काल बस मिलती । किन्तु भद्र से वापस आते साबरमती की बस तत्काल मिले ऐसा कुछ है नहीं । बहुत देर लगती है । तब उसकी अपेक्षा तो मैं जाऊँगा और आऊँगा वह उसकी अपेक्षा जल्दी आ पहुँचूँगा । भई, आपके साथ दलील करना व्यर्थ है । ऐसा परीक्षितभाई तो बेचारा ऊबकर कहा ।

मैं तो साइकिल पर गया । तब विद्यापीठ के आगे जाता हूँ, वहीं बस को एक्सीडन्ट हुआ था और बस खड्डे में गिरी थी । और सब को चोट लगी थी । अब तक कोई आदमी सब चीख-पुकार करते, किन्तु कोई आदमी बाहर । अतः मैं दौड़कर गया विद्यापीठ में । सब को खबर दी कि भई, जाओ आप । यह एक बस गिरी है । आदमी बेचारे चीख-पुकार करते हैं और आप मदद करो । और मुझे तो बैंक में जाना है । अतः मैं तो रुक सकूँ ऐसा नहीं है । इसलिए आप सब जाओ ।

इससे एकदम विद्यापीठ के आदमी आये । मैं तो सीधा चला गया । बैंक में से पैसे लेकर आया, तब वहाँ, अभी तो सब को बाहर निकाल कर सूलाते थे । उतने में बसवाले को फोन करके बुलाया था और पुलिस भी आ पहुँची थी और यह सब होता था । मैं तो सीधा निकल गया । अन्यथा मेरे बेटे मुझे यहाँ रोकते फिर ।

॥ हरिः ॐ ॥

॥ हरिः ॐ ॥

(श्रीमोटा की पावन ध्वनिमुद्रित वाणी का थोड़ा अंश— उत्सव समय का)

• शिल्पकार श्री कांतिभाई पटेल की कदर •

श्रीमोटा : तो कदर करें यह आवश्यक । यह गुजरात में सर्वप्रथम यह एक ही लड़का निकला कि जो प्रामाणिकरूप से अनेक गुणों की जिसने कदर की है । वह अभी नहीं वह होगा । पाँच पचास वर्ष होंगे बाद कहेंगे ।

इस भाई को मेरे जिसको सुवर्णचंद्रक मेरे आश्रम के प्रमुख साहब मेरे रावजीकाका ने पहनाया । चंद्रक । वह आप देखो । क्या कहते भई ? उसका स्टुडियो देखो तो पूरे हिन्दुस्तान में नहीं मिले ऐसा । किन्तु यह सब किसे जानने की फिक्र है ? उसकी शिल्प की कला कितनी उत्तम है ? यह सब किसे पड़ी है हम सब को । ऐसे आदमी की तो कदर करनी चाहिए । मैं तो गरीब आदमी हूँ तो करता हूँ । धनी लोगों को— मेरी सास के धनी लोगों का काम है यह तो । किन्तु उनको वह कुछ जागता है ? बुद्धि कहाँ जागती है ? कुछ हरज नहीं । नहीं जागे तो ।

• मौलिक साहित्य के उत्कर्ष के लिए *मोटा* का दान •

हम उनमें के एक हैं न ? यह गुजरात का बेटा मैं कहता था । इस तरह कितने सारे चंद्रक मैंने दिये । साहित्य के क्षेत्र

में मेरे से जो हुआ है, वह किया है और साहित्य के क्षेत्र में भी जो मौलिक सर्जन हुए हैं । यहाँ साहब बैठे हैं । पीतांबर साहब । जो सर्जन हुए हैं । Book of Knowledge । मैं कॉलेज में B. A. में था तब पढ़ता । तभी का मेरा संकल्प कि इस प्रकार की पीढ़ी गुजरात में होनी ही चाहिए । तब मेरे पास पैसे नहीं । एक लाख से शुरू किया और दूसरे पैसे भी दे देने का । और आज उसे बखानते हैं । इस तरह 'किशोरभारती' । भले आज ना कहते, किन्तु वह काल आएगा तब कहेंगे । 'बालभारती' भी वैसे ही । अतः इतना ही नहीं, किन्तु साहित्य परिषद को भी मैंने दिये हैं पैसे । इसी के लिए ।

• *मोटा* की शर्त— बिना दक्षिणा नहीं पधरावनी •

अतः आप सभी को मेरी विनती है कि यह एक अंतिम काम है । रोट खाने भी कुछ नहीं तो आखिर मुझे बुलाओ । रोट खाने भी मुझे बुलाकर रकम अच्छी दो । दूसरे कहीं से दिलाओ । अब कोई अकेला दे, वह अब मेरा शरीर आगे चले वैसा नहीं भई । वह मैं आपको कह दूँ । जो किसी को मुझे बुलाना हो, वह मुझे दक्षिणा अच्छी दे । इतना ही नहीं, किन्तु आगे-पीछे से चंदा करके भी दो । तो मैं आऊँगा ।

मैं ..... मेरे आश्रम में कि वह भई, सब **मोटा** पैसे किस तरह करोगे ? अरे ! आप चिंता मत करो भई । उसकी चिंता मेरे भगवान के हाथों में सौंपो । मुझ अकेले को सौंपो । आपको कोई चिंता करने की जरूरत नहीं है । किन्तु अगर मुझे बुलाना

हो तो एक हजार से कम रकम नहीं और अन्य चंदा करके देने की आपकी वृत्ति हो तो बुलाना । अन्यथा मैं मेरे आश्रम में भले पड़ा रहा । तो कोई ऐसा कहेंगे, **मोटा,** जब आपकी मरजी हो तब आना । मेरी कोई मरजी नहीं है । तुम्हें बुलाना हो, तब कहना भाई । और यह शर्त है । तब फिर से ..... हाँ पधारना ।

तब फिर से मेरी आप सब को प्रार्थना है कि यह एक ऐसी बाबत है और आखिर तो यह शरीर गिरता है । गिरने का है, उस समय का यह संकल्प है । मेरा शरीर नहीं होगा तो मुझे विश्वास है कि मेरा यह– नंदु है वह काम करेगा । किन्तु वह संकल्प पूर्ण करेगा । वह मिला है । बारह-बारह एक को कल ढाई बजे सोया था वह । इतना काम करता है, साहब । और मुझे बिलकुल मुक्त किया है । मैं मेरे लेखन में । **सब इन चार वर्षों में पंद्रह किताबें लिखीं और मौलिक साहब । कोई यह जो कोई पढ़ेगा तब । सौ वर्ष बाद उसकी कदर करेगा ।**

तब यह ऐसा काम हाथ में लिया है कि मेरे साथ भाववाले जो भाई हैं । मेरे साथ जुड़े हुए हैं । प्रतिदिन बारी-बारी से आते हैं । उनको मेरी प्रार्थना है कि आप मुझे मदद कीजिये । इसमें गुजरात उनकी समृद्धि वृद्धि होगी । और एक पैसा भी मेरे आश्रम में जाने का नहीं है । और फिर खूबी देखो साहब कि भविष्य में कोई विचारक मेरे बारे में लिखेगा तब लिखेगा कि **मोटा** ने बहुत अच्छा काम किया ।

• योजना का कारबार-संबंधी खर्च दान की रकम में से न हो •

मेरा एक-एक पैसा कायम । पैसे सब कायम । ब्याज ही खर्च कर सकते हैं । एकएक पैसा प्रजा का पैसा । एक पैसा बिगड़े नहीं साहब । कोई दिखाये मुझे गुजरात में से । ऐसा हो तो दिखाना ..... मुझे जानना है । उसके पास सीखना है । एक पैसा गुजरात सरकार को पूरा समुद्र तैरने की स्पर्धा का सवा लाख दिये । कायम रहेगा । उसका ब्याज तो सब को दे देने का । उसका कारबार-संबंधी खर्च सरकार भोगेगी । एक पैसा उसमें से जाय नहीं । एक पैसा भी बिगड़े नहीं, साहब । इतना सब सोच कर-करके इस पैसे का उपयोग— कारबार करता हूँ ।

इसलिए यह कहता हूँ । मेरे बखान करने के लिए नहीं । बखान तो कुछ मुझे नहीं चाहिए । और लोग तो निंदा तो भरपूर करते हैं । उसकी मुझे खबर है और पास के भी अधिक करते हैं । किन्तु उसकी मुझे परवाह नहीं है । यह मेरे स्वयं के बखान के लिए नहीं कहता । किन्तु यह हकीकत है । जो आप जानो तो आप पैसे दे सको । **मोटा** अच्छा कारबार करेंगे । हमारा एक पैसा भी उसमें से बिगड़ेगा नहीं । कारबार-संबंधी खर्च । यह डेढ़ वर्ष तक तो नंदुभाई ने पत्रव्यवहार किया । University Grants Commission, Indian Medical Research Council वे सब कहते पैसे लेंगे, किन्तु कारबार– संबंधी खर्च आपको देना पड़ेगा । कि आपको लेना हो तो लो और न लेना हो तो नहीं ।

एक पैसा कारबार-संबंधी खर्च में नहीं मिलेगा । कहते हैं कि यह हमारा कायदा है । आपका कायदा आपके पास रहा । हमें ..... शर्त हो तो लो, अन्यथा नहीं । साहब अंत में प्रत्येक– हमारी सेन्ट्रल सरकार की स्थापित ये संस्थाएँ हैं । युनिवर्सिटी ग्रान्टस कमिशन, इण्डियन अेग्रीकल्चरल रीसर्च काउन्सिल, इन्डीयन मेडीकल रीसर्च काउन्सिल सेन्ट्रल सरकार की है । किन्तु सभी ने लिए पैसे । एक पैसा उसमें से कारबार-संबंधी खर्च जाएगा नहीं और ब्याज है वह इस तरह खर्च हो जाएगा । कोई एक पैसा बिगड़ा नहीं साहब । मेरा एक पैसा किसी ठिकाने नहीं ।

• *मोटा* भगवान के मुनीम हैं •

तब इस तरह समझ-समझकर मैं करता हूँ । किन्तु उसमें मेरी समझ है, ऐसा कुछ नहीं । मुझे तो मेरे में अक्ल है ऐसा कई मानते नहीं । मेरे पास के लोग भी नहीं मानते । **किन्तु मेरा भगवान मुझे मार डाले साहब । आपके पैसे-पैसे संभालते हो वैसे वह भगवान के पैसे मैं न संभालूँ तो ? अतः इस तरह बहुत समझकर, दीर्घदृष्टि रखकर, इस तरह दान का जो पैसा मिलता है, उसका मैं कारबार करता हूँ ।** इसलिए यह आपको कहता हूँ कि आपको भी विश्वास बैठे कि **मोटा** को देंगे तो हरज नहीं है । किन्तु अंतिम काम है और आप सब कृपा करके और इसमें मुझे पेट भरकर देना । **मोटा,** पेट तो आपका भर सके ऐसा नहीं है । भर सकता है भई, आप

देना तो सही । कि **मोटा** प्रति वर्ष देना ? प्रति वर्ष में आपके घर प्रसंग नहीं आते ? तो प्रति वर्ष में खर्च मेरे से बहुत अधिक । आपके बाल-बच्चे ..... यह वह ।

• *मोटा* की आगाही—
पैसे कलम के धक्के से चले जाएँगे •

.... देश भी है अंदर । पहला है । आपके संसार और गृहस्थाश्रम से देश पहला है । आज भले आपके ख्याल में न आये, किन्तु वह हकीकत है । यह देश न होता तो हम कहाँ से होते ? हमारे अणु-अणु हमारा देश है । हमारे देश की भावना है । तब वह सोचना भई साहब ।

काल ऐसा आता है कि अकेले संसार का आपके स्वार्थ का सोचे बिना अब नहीं चलेगा । तब क्या चलेगा इसमें ? नहीं सोचेंगे तो क्या होगा इसमें ? तो वह मुझे कहना नहीं भई । मुझे कुछ मेरा धर्म डराने का नहीं है । डराने का नहीं भाई ।

यह तो सत्य हकीकत आपको एक बार साहब । बहुत पुराने समय की यह बात कहूँ । *जयाबहन जानतीं हैं । सायला में था । जीमने का था राजदरबार में साहब । मेरे मित्र के साथ में । कि चांदी के थाल और रोट आते । और एक बौना लें तहाँ तो रोट उठाकर वह आदमी ले जाता । अबे भई, मैंने कहा खाने तो दे । तो कहता नहीं, नहीं यह तो ले जाने का । आपको ताजा-ताजा ही देने का । फिर उसमें खड्डा हो रोट के अंदर—

* श्री जयाबहन वृजलाल जानी

बाजरा का तो भर देता घी से । अबे इतना सब ? तो कि वह तो खाना ही पड़े । फिर ले जाता । एक बौना खाया तो तो ले जाता । इतने सब को क्या करोगे भई ? ये सब आदमी हैं न वे खाएँगे ।

तब मैंने कहा भई, यह सब खर्च होता है न यह सब अच्छी तरह से थोड़े काल के लिए है । कर लो । भोग लो सब । यह सभी जाएगा । क्या कहते हो **मोटा** आप ? मैंने कहा, हाँ, साहब सच कहता हूँ । तब का कहता हूँ कि कलम के धक्के से जाएगा भई । यह तो '४४ या '४३ की ऐसी साल की बात है । उसकी बात है साहब ।

तब से कहता आया हूँ कि यह कलम के धक्के से जाएगा, वह मेरे बेटे आप सहन करोगे । उसकी अपेक्षा यह परमार्थ करो न । वह हो तो करना । ये सब अनेक बैठे हैं । और आज भी इसके अंदर सब लिफाफे पर नाम, ठिकाना सब लिखना और एक कोने में रकम लिखना । इससे ये सब पुड़ें संभालकर हमें रखने पड़ेंगे । अन्यथा इन्कमटेक्षवाला तो ६५ प्रतिशत ले लेते हैं । मेरा तो प्राण निकल जाँय । मेरे से यह प्रजा के पैसे, मेरे भगवान के पैसे सरकार को भी नहीं दे सकते । इसमें आप मदद करना । इतने में तो मदद करना ।

• परमार्थ के लिए चरोतरी भाषा में *मोटा* की अपील •

ये बैठे हैं, वे कोई धोती झाड़कर उठ न जायेंगे । प्रत्येक जन देंगे । अधिक मत देना । रुपया-रुपया मत देना । किन्तु

कुछ डाले बिना मत जाना । और यहाँ शाकाहार किया है, वह सब लेकर जायेंगे । पहले बहनें आयें । व्यवस्थित रीति से बहने आयें । एक के बाद एक आये । भई, आपने स्वयंसेवक रखे हैं ? तो तैयार करो सब । खड़े कर दो । लाओ-लाओ जल्दी । तब इसमें कोई बाकी ना रहे । एकदम मत उठ जाना । भई, देर है अभी । अभी तो मेरे मंत्री साहब को प्रवचन और जो कुछ कहना है वह कहेंगे । आभारविधि करेंगे । फिर बहनें सभी व्यवस्थित आयें ।

हमें यदि स्वराज पाना हो तो अनुशासन तो सीखो भई । हुडुडुडु करते सब खड़े हो जाओ ? अबे, किन्तु क्या करना है ? अबे, क्या धाड़ है यहाँ ? कुछ आग लगी है ? इसलिए आराम से बैठे रहना । एक के बाद एक आना और कोई बाकी न रहे । अपवाद सिवा । सभी इस कठौता पर रखना । मेरे पैर मत पड़ना । और यह आरती है वह घूमाने की । अंदर रखना । आरती देनी चाहिए । हार तो पहनाना पड़ता ।

इससे भाइओं और बहनों को विनती है कि प्रत्येक जन देना । भाई इतने सब हैं । ओ हो हो हो जै बोल दिया है । ये सभी देना । ज्यों का त्यों धोती झाड़कर उठ मत जाना । इसलिए चरोतर की भाषा में कहता हूँ भई । सब मेरे पैर पड़ना नहीं । हाँ । मैं परेशान होऊँगा । दूर से पैर पड़कर जाना । पैर पड़ो तो जो भावना मैंने कही है, वह मन में रखना । भई, बंद करूँ अब ?

॥ हरिः ॐ ॥

॥ हरिः ॐ ॥

(विद्यार्थियों को पढ़ाते-पढ़ाते तथा हरिजन सेवक संघ, साबरमती आश्रम के कार्यालय का काम करते-करते श्रीमोटा की साधना किस तरह चालू रहती थी, उस विषय में जिज्ञासु की प्रश्नोत्तरी)

जिज्ञासु : मोटा, आप लिखते हो कि आप ..... में रहते तब साधनाभ्यास में रहते । किन्तु सब काम करते हो, पहले तो ऐसी खबर कि आप विद्यार्थियों को पढ़ाते भी सही । तब ऐसे पढ़ाते करते और आप साधनाभ्यास में रहो, यह कुछ मान सकें ऐसा नहीं लगता । इससे आप खुला करके साफ बात करो । कुछ समझ सकें ।

फिर आप साबरमती में गांधीजी के आश्रम में रहते और कुछ काम करते थे । हिसाब का काम करते थे । ऐसे करते बातचीत करते सब कामकाज बहुत करते । तब उस समय किस तरह साधनाभ्यास में रहते थे ? और सब आप लिखते हो किस तरह ? हमारे कुछ मानने में न आये तो फिर हमारा दोष नहीं ।

• *मोटा* की दृष्टि—शिक्षण के बारे में विद्यार्थी अपने आप सीखें •

श्रीमोटा : भई, आपका दोष किस लिए मैं कहूँ ? मैं कहाँ कहता हूँ कि मेरा दोष मैं मानता नहीं । किन्तु आपको

समझाऊँ अगर आप समझो तो । तो कहो । फिर उनको बात करता मैं । भई, मेरे पास तीन वर्ग रहते । वह कहता तीन वर्ग ? मैंने कहा, हाँ । तीन वर्ग रहते ।

अब मेरी एक पद्धति ऐसी थी । पढ़ाने में भी मेरी अलग पद्धति कि Learn by Thyself । प्रत्येक जन अपने आप सीखे । शिक्षक तो एकमात्र दृष्टारूप से है । जैसे आत्मा स्वयं साक्षी है, दृष्टा है । उस तरह शिक्षक को रहना चाहिए और विद्यार्थी अपने आप सीखे । तो ही उसे अच्छा आता । ऐसी एक मेरी मान्यता । किन्तु उसे मैंने अमल में इस तरह रखी कि आपको कहूँ ।

कि प्रत्येक पाठमाला हो । सभी को पढ़ जाता । पढ़कर फिर उसमें से जोड़नी के कठिन-कठिन अक्षर* ढूँढ़ निकालता और लिख लूँ और ३x३ तीन बाय तीन फुट ऐसा पुट्ठा लेता । मोटा पूट्ठा लेता और उसे बढ़िया मोटा कागज लगा देता । गोंद लगाकर सरेस से । फिर उस पर लाइन खींचता । इससे एक ऐसे यह खड़ी अठारह और आड़ी अठारह ऐसी लाईन खींच देता इससे खाने पड़ जाते । एक में अठारह अक्षर* । दूसरे में अठारह अक्षर* । इससे १८x१८ इससे तीन सौ चौबीस शब्द हों । इससे जोड़नी के प्रत्येक पाठमाला के तीन सौ और चौबीस अक्षर* । कठिन-कठिन आ जाँय । एक भी बाकी न रहता । ऐसे तीनों ही किताब । तीनों ही पाठमाला के तीन ही पुट्ठे तैयार

* शब्द

कर देता । फिर एक वर्ग हो । सवेरे में जाता अपने आप । तो प्रार्थना तो सही ही । प्रार्थना आदि कर लेने के बाद हमारा अपना काम शुरू होता और वर्ग में एकाध ..... अगर हो तो मुझे भी फायदा हो .....विद्यार्थिओं को भी आता । इससे विद्यार्थिओं को कह देता कि इसमें ..... यह तुम्हारा पटिया लगाया है । यह ..... यह बोर्ड है । शब्दों का । वह तुम उस प्रकार जोड़नी करके तुम्हारी पाटी में लिखो । उस समय नोटबुक नहीं थी । इससे वह स्लेट आती न ! इससे स्लेट में तुम लाईन खींचकर सब अक्षर लिखो । जोड़नी याद कर-कर के । तो एक वर्ग तो उसमें हो गया । दूसरे वर्ग को गणित सौंपता । वह जो होशियार लड़का हो गणित में उसे कहता । पूरा यह गणित लो और इस प्रकरण में २० प्रश्न हैं । वे २० पूरे एक घंटे के अंदर कर दें । जिसे नहीं आता, वह इस लड़के को पूछ लेना । दूसरा वर्ग इस तरह । तीसरे वर्ग को नकशा सौंपकर और भूगोल की किताब देकर नकशा देखने कहता । यह प्रतिदिन सवेरे बदल देता । किन्तु स्वयं अपने आप ही विद्यार्थी सीखे ।

पाठ हो पढ़ने का और नया चलाने का । कि भई, तुम पढ़ जाओ । पढ़कर फिर पाटी में लिखो । कि यह क्या ? इस पाठ में आज नया क्या तुम्हारे ध्यान में आया ? वह लिखो । फिर किसी को यह कि भई अंदर देखकर तुम पाठ में देखकर दस लाइन अच्छे अक्षर से लिखो । अक्षर अच्छे आयें उसके लिए । कि हरएक जन अच्छे अक्षर से दस लाइन देखकर लिखें ।

उसी तरह तीसरे वर्ग को ऐसा दूसरा काम सौंपता । इससे हर एक वर्ग स्वयं अपने आप अपने काम में लगे रहते और मैं मेरा भजन गाता । कभी-कभी तो ध्यानावस्था भी हो जाती । बेहोश हो जाऊँ मैं । भजन गाते-गाते समाधि लग जाती मुझे । भजन गाते-गाते । यह हेमंतभाई ने देखी थी । बोडाल आश्रम में वे और हम साथ में । फिर तो वहाँ तो कोई मिले नहीं ।

नडियाद में तो कोई थे नहीं । मैं हेड मास्तर । इससे मेरे बारे में कौन फरियाद करे ? फिर भी किसी ने लिखा था । इससे हेमंतभाई एक बार आये थे । देखा था । किन्तु सभी को उन्होंने तो डिक्टेशन लिखाया । ये सभी शब्द लिखाये । गणित लिखाया, सभी का सही । कि यह तो हमारे किसी ठिकाने ऐसा तो हमने देखा नहीं हैं । वे मंत्री थे तब । तब तो मैं चूनीभाई भगत कहलाता । **मोटा** तो अभी हुआ । कहा कि भई, यह तो आपका अभ्यासक्रम तो लड़कों का बहुत सुंदर है । एक भी शब्द गलत हो कैसे ? वह हररोज का कितना जोर उस पर । सप्ताह में तीन बार तो वे सभी शब्द लिखने ही । और यह जब हेमंतभाई आये तब वे पटियें उलटे लगा देने का । उलटे कर दूँ । नहीं तो कहेंगे कि यह देखकर लिख लिये । इससे प्रतिदिन प्रत्येक को अपनी स्लेट में से देखकर उसे डिक्टेशन लिखना ही । बीस लाइन-पंद्रह लाइन प्रत्येक को लिखकर लाना । बढ़िया से बढ़िया अक्षरों में । गणित प्रतिदिन गिनना । भूगोल पढ़नी । कोई बाकी नहीं । कि इस तरह । यही

एक-एक लेसन थोड़े बहुत प्रमाण में प्रतिदिन विद्यार्थी को करना, करना और करना । और फिर विद्यार्थी आपस में पूछ लें कि बोल भई, इतिहास में आज हमने इतना पढ़ा । तो तुम्हें कितना याद रहा ? तो तू बोल । मैं बोल जाऊँ । ऐसे फिर दो-दो तीन-तीन मानो कि आठ लड़के हों, वर्ग में तो चार-चार की दो टुकड़ी बना देते । और सब एक-दूसरे का पूछ लेते । इससे यह पक्का हो । और इस तरह हरएक विद्यार्थी स्वयं अपने आप सीखते और पढ़ते । ऐसा मेरा कार्यक्रम रहता ।

• विद्यार्थी स्वयं का कार्यक्रम स्वयं ही प्रबंध करे •

हरएक विद्यार्थी स्वयं अपने-आप सीखते, दरकार रखते और एकाग्र होते । यह कब बने ? जिसे उसमें रस हो ! इससे मैं इस तरह कार्यक्रम सब प्रबंध करता और विद्यार्थी स्वयं ही स्वयं का कार्यक्रम निश्चित करते और स्वयं स्वयं में मस्त रहते और उसे रुचि हो उसी तरह विद्यार्थियों को ..... पूरा आयोजन होता ।

इससे एक वर्ग है, उस एक वर्ग को पाठमाला हो । उसका प्रत्येक पाठमाला में से कठिन-कठिन जोड़नी के शब्द मैं तय कर लूँ । खोज-खोज कर । और फिर उसे एक बड़े पुट्ठे पर ३ x ३ । ३ फूट चौड़ा और ३ फूट लम्बा ऐसे पुट्ठे पर अठारह लाइन बनाकर आड़ी और खड़ी ऐसा एक-एक लाईन में अठारह शब्द आ जाते । इससे १८ x १८ हो तो ३२४ शब्द होते । ऐसे एक पूरी पाठमाला में से कठिन-कठिन जोड़नी के

शब्द कठिन जोड़नी के ३२४ शब्द मैं लिखता, खोज निकालता और उन्हें उस पुट्ठे में बढ़िया अक्षरों से लिखता। इससे प्रत्येक तीन वर्ग की पाठमाला में से ऐसे तीन सौ चौबीस जोड़नी के कठिन-कठिन शब्द उस बड़े पुट्ठे पर बढ़िया अक्षरो से मैं लिखता और फिर पुट्ठा वर्ग में रख देता। इससे एक वर्ग है वह उन अक्षरों जो शब्द मैंने लिखे हों पुट्ठे में उसके अनुसार जोड़नी मुख से बोलकर वे लोग लिखते। अपनी पाटी में। और पूरी पाटी हो जाय तो एक-दूसरे को दिखाकर फिर पोंछकर फिर से लिखते। इससे एक वर्ग पूरा एक ये शब्द लिखने में प्रवृत्त हो। दूसरे वर्ग को इस तरह गणित में रखूँ। तो गणित आये तो पहले उसे नयी उसकी मैथड यानी किस तरह हिसाब हो कि ऐसे हो, सब उसकी मैथड़ सिखा दूँ। उसे सिखा दूँ। और फिर जो वर्ग का होशियार विद्यार्थी हो, उसे उसके साथ दूसरा विद्यार्थी कि भई, देख यह प्रकरण है। २० प्रश्न हैं। आज हमें पूरा आज हमारा समय में प्रश्न प्रत्येक को पूरा करना है। और जिसे न आता हो तो उसे वह होशियार विद्यार्थी सिखाता। या तो दूसरा विद्यार्थी जो कर रहे हो वे बीस के बीस प्रश्न। प्रत्येक विद्यार्थी रोज का रोज कर जाय ऐसा नियम रखना। इससे एक वर्ग है वह शब्द लिखने में लगा हो, दूसरा गणित में, तीसरा, तीसरे को वह नकशा लेकर भूगोल का काम सौंपता। इससे हर एक वर्ग स्वयं स्वयं की रीति से स्वयं के अभ्यास में एक-सा लगे रहते।

• विद्यार्थी अपनी रुचि अनुसार दैनिक अभ्यास करें •

तीन वर्ग किन्तु एक ही छोटा कमरा । उसके अंदर सब लड़के हों । फिर भी शांति भी रहती और हरएक विद्यार्थी स्वयं अपने आप ही तय करते । स्वयं का अभ्यासक्रम किन्तु वे अपने आप तय करते । इस तरह टाइमटेबल - बाइमटेबल रखता नहीं । अगर विद्यार्थी ऐसा कहे कि पूरा दिन हमें गणित ही सीखना है तो गणित ही सीखो । कोई कहते कि आज हमें शब्दों को ही पक्के करना है तो शब्द पक्के करते । कोई कहेगा आज हमें कविता ही याद करनी है तो कविता याद करते । वर्ष के छ महीने या तीन महीने के अंत में जितना अभ्यास सामान्यरूप से होता उतना होना चाहिए । वह नियम मैं मेरे मन से रखता । किन्तु दैनिक का जिसे फिक्स्ड तय किया हुआ वह कोई नियम आदि मैंने नहीं रखा था । **विद्यार्थी की पसंदगी पर सब निश्ति कर रखा था ।**

इससे इस तरह तीनों ही वर्ग अपनी-अपनी रीति से लगे रहते । इससे मैं स्वयं मेरे स्वयं के साधन में तब । मैं भजन तब लिखा करता । प्रार्थना करता । आत्मनिवेदन करता । कभी-कभी भजन गाते-गाते वर्ग चलता हो तो भी मुझे भावावस्था हो जाती । शाला में अनेक बार । और आश्रम चलाता तब हेमंतभाई मेरे साथ थे । उन्होंने अनेक बार ऐसा देखा था ।

इससे इस तरह कितने ही फरियाद करते सही । कि यह चूनीलाल भगत है । वे तो पढ़ाते नहीं । और भजन गाते रहते

हैं, किन्तु आकर कोई ऊपरी हमारे मंत्री साहब आकर जाँच कर जाय तो मेरे वहाँ विद्यार्थियों का किसी का एक अक्षर भी एक शब्द भी गलत नहीं होता। एक शब्द कहो। क्योंकि कठिन में कठिन जोड़नी के शब्द हो, वह तो प्रतिदिन सप्ताह में तीन बार तो उसे लिखना ही। सप्ताह में तीन बार लिखना। इससे उसका तो गलत होता ही नहीं और प्रतिदिन डिक्टेशन यानी पुस्तक में देखकर बढ़िया अक्षरों से पंद्रह लाइन लिखनी, लिखनी और लिखनी ही। प्रत्येक जन को। या घर में ना लिखे तो हमारी शाला में ना लिखे तो घर से लिखकर लाओ पाटी में। दोनों तरफ में। इससे ऐसा पक्का नियम किया था। इससे उसे पुस्तक में देखकर कोई लिखाये कोई परीक्षक तो भी सही। सही होता। गणित भी सभी को आता। प्रत्येक ऐसा नहीं कि वहाँ बैठकर प्रत्येक को प्रत्येक दैनिक प्रत्येक प्रकरण प्रतिदिन को २० प्रश्न करने का करने का ही। उसमें बिलकुल फर्क नहीं। भूगोल तो प्रत्येक को जिसे सब दिखाया हो, वह प्रत्येक उसे खुद प्रत्येक विद्यार्थी कोई एक दिन इसकी बारी, एक दिन इसकी बारी, इसकी बारी ! वह प्रत्येक की बारी, बारी-बारी से आ जाय। सभी शहर, नदियाँ इत्यादि पहाड़ों सभी कहाँ आये हैं, वह सभी को पता। इससे कुछ भी पूछे तो तुरंत कह दें।

इससे इस तरह अभ्यास में विद्यार्थियों बहुत आगे रहते। और स्वयं अपनी अपनी रीति से लगे रहते। मैं मेरे भजन में

हं...अ... । कितनी बार ध्यान में भी जाऊँ । मुझे हरज नहीं । मेरा तो लड़के पढ़ाई में होशियार हो और उनका ..... उनका अभ्यास न बिगड़े । बल्कि अभ्यास में आगे और आगे ऊँचे रहें यह इरादा था । टेक था । उसके अनुसार सब चला करता । और इस तरह मैं मेरे साधन में रहता ।

जैसे पहले मुझे जिस भाई ने प्रश्न किया था कि भई, **मोटा,** आप कहते हो मैं सतत साधनाभ्यास में रहता । आप कैसे वर्ग चलाते और आप कहते हो आप । तीन वर्ग हैं मेरे पास वह कैसे हो सकता? उसके जवाब में मैंने दिया ।

• हरिजन संघ के कार्यालय में काम करते-करते साधना •

फिर दूसरा सवाल उसने पूछा कि वह सब ठीक है **मोटा** । यह तो समझ सकें ऐसी बात है । किन्तु आप मंत्री थे और गाँधीजी के आश्रम में रहते, तब आप आपको अनेक-अनेक काम करने थे । टाइप करते थे । यह सब बचत रखते थे, हिसाब लिखते, वाउचर लिखते, फाइल करते, ड्राफ्टींग करते । लोग आते उनके साथ बातचीत करना । दूसरी संस्थाओं के हिसाब नोंध करना । ये सब काम थे । उस समय आपने शाला की यह तो आपने सब बात आपने समझाई थी । यह समझ में आयी । वर्ग की तो । और वह मान सकें ऐसी बात है ।

किन्तु यह आप उसमें रहते थे और नरहरिभाई थे और दूसरे सब थे, तब उन लोगों ने क्यों यह सब चलने दिया ?

आप किस तरह साधनाभ्यास में उसमें रहते थे ? मैंने कहा, तुम्हें यह बात समझाऊँ । समझ आये तो ।

कि मुझे भई, जिसकी लगन लगी हो, जिसे गरज लगी हो, जिसे स्वार्थ बहुत लगा हो, वह हमेशा predominant हमारे मानस में रहता है । जिसकी हमें तलब लगी हो, गरज लगी हो, जिसमें हमें बहुत रस हो, वह हमारे दिमाग में, हमारे मन में predominant—आगे रहती है वह बात सच्ची है । किन्तु मैंने कहा, यह सब किया करता । मेरी बात, मेरा भजन करता रहता वह सब गुनगुनाता रहता । बोला करता ।

कितनी बार परीक्षितभाई मुझे कहते **मोटा** चूनीभाई । तब तो **मोटा** कोई कहता नहीं । चूनीभाई मुझे कहते, या तो चूनीभाई नहीं कहते तो भगत कहते । क्योंकि मेरा उपनाम भगत । हमारी पीछे छोटा कमरा । अंदर सामने परीक्षितलाल बैठते, उसके सामने मैं बैठता । उसके बाद तो ..... और कोई बोलता ..... कोई मेरी टीका करते तो मैं कुछ बदता नहीं । मैं तब ..... *'हाथी चलत है अपनी गति में'* तो दूसरा ऐसा तो नहीं कहता, *'कूतर भौंकतवा तो भौंकवा दे ।'* ऐसा तो नहीं कहता । क्योंकि उसे disturbance हो यह बात सच्ची । मैं बोला करता भजन और वह काम में हो तो उसकी एकरागता या तो उसमें उसे शांति का भंग हो वह सच्ची बात । हम कबूल करते आपकी ।

किन्तु मुझे यह आदत पड़ गई भाई । यह कुटेव है । आप मानो नहीं, किन्तु वह मेरा चलाये रखता । फिर तो धीरे-धीरे

सब ठीक हो जाता । टाइप करना होता तो भी भजन गाता था । भजन जोड़ता । बनाता । प्रार्थना करता । बोलता । सब करता । तो कितनीही बार दूसरे कहते कि अरे ! चूनीभाई आपको टाइप में भूल आएगी । कितनी तकलीफ होगी सब । मैंने कहा, भाई, अब आपको क्या जवाब देना? आप हो जाय तब देखना । मैं ..... भी काम में भगवान की कृपा से मुझे आपत्ति नहीं है ।

एकाग्रता होती है । तब एकाग्रता वह भी ऐसी वस्तु है । जैसे वृत्ति हो हमें कि वृत्ति गतिशील है । गतिशील है । Active है । सर्जनशील है । और क्रियाशील है । जो प्रति जैसी गति हुई वह उसे साकार करती है । यदि वृत्ति का ऐसा है तो भगवान का भी ऐसा ही है ।

• गरजवाली स्वार्थी बाबत में अपने आप ध्यान रहता है •

इससे ऐसे मैं वहाँ प्रयत्न करता भई । वह मेरे दिमाग में वह हो, वह चलता ही रहता । प्रत्येक काम हो तो भी । कितनेक सवाल पूछते हैं कि भई, **मोटा** यह बात आप कहते हो, भई, मानने में आती नहीं । कि ये सब करते आपका सब भीतर ध्यान रहता था । वह कुछ मानने में आता नहीं भई । आपकी यह अत्युक्ति लगती है ।

मैंने कहा, भई, श्रीमद् राजचन्द्र ने प्रयोग करके दिखाया है कि एक साथ मनुष्य १०८ का विचार कर सकता है और

यह बात आप मत मानो तो संतबालजी अभी जीवित हैं। उन्होंने ये प्रयोग किये थे । फिर कहा कि ..... यह तो अहम् बढ़ानेवाली वस्तु है । हम छोड़ दें । ऐसा करके उन्होंने छोड़ दिया था । किन्तु यह बात सच्ची है ।

भई, वह तो होगा **मोटा,** किन्तु अब आप कहते हो, वह कुछ मानने में आये ऐसी बात नहीं है । आप मुझे १०८ में आपका मन १०८ में रह सके वे प्रयोग आपने कुछ किये नहीं । मैंने कहा, मुझे करने की जरूरत नहीं हैं। मुझे किसी को साबित कर देने की जरूरत नहीं है । किन्तु ना, ना, **मोटा** ऐसा नहीं, किन्तु rationally बुद्धि स्वीकार कर सके ऐसी कुछ बात करो । तो वैसी बात करें । लो न भई ।

मैंने कहा, तुम काम में हो । और तुम्हारी तिजोरी में से कोई तुम्हें पैसे निकालने का काम आया और पैसे निकालते और फिर कुछ भूल-बूल में तुम्हारी चाबियाँ कहीं रख दी । इधर-उधर । और बाद में ख्याल आया कि ..... चाबियाँ कहाँ गई ? खूब ढूँढ़ते, किन्तु मिलती नहीं । इतने में पाँच आदमी आये तो फिर उसके साथ आपको बात करनी पड़ती । किन्तु वह बात करने में व्यस्त हो तो भी उस चाबियाँ, तिजोरी की चाबियाँ की बात आपके मन में ही मन में रहेगी । यह आप पूछो । किसी को पूछो । तो आप कहो, **मोटा** यह बात तो समझ सके ऐसी है ।

वह बात जो है महत्त्व की, आगे । चाबियाँ की बात आपके दिमाग में predominantly आगे रहती है । उसके

साथ बातचीत करते हो । वहाँ दुकान का काम आया हो तो भी करते हो, डाक आयी तो भी पढ़ते हो, किन्तु उस चाबियाँ की बात उस समय में जाती नहीं, आपके मन में से । तो कहा, **मोटा,** यह उदाहरण आपका ठीक है । तो इस तरह भई, मुझे बहुत गरज थी । बहुत स्वार्थ इसका था । इससे मेरे मन में वही खेला करता था । और मैं यह सब बाहर के दूसरे काम बढ़िया करता ।

• श्रीठक्करबापा और परीक्षितलाल की प्रस्तावनाएँ —*मोटा* के कर्मों की आरसी हैं •

और आप मत मानो ऐसा हो तो ठक्करबापा की 'कर्मगाथा' में मेरी प्रस्तावना उन्होंने लिखी है, वह देखो । परीक्षितलाल ने लिखी है, वह देखो । मेरे गुरुमहाराज ने कहा, इनकी अबे, तू प्रस्तावना ले इनकी । अरे, मैंने कहा । इसमें यह 'कर्मगाथा' तो मैंने कर्म किस तरह भगवान के मार्ग पर जाँये, तब किस तरह कर्म कर सकते हैं, उसके बारे में पूरा शास्त्र लिखा है, वह ये ठक्करबापा तो नहीं उसके पर तो उसमें, तो कहा, नहीं तू ले । तो फिर वे सब पूरी पढ़ गये थे । ठक्करबापा फिर ज्यों का त्यों लिखते नहीं । ऐसे व्यक्ति वे । एक अक्षर मर्यादा से अधिक कोई दिन बोलते नहीं ऐसे व्यक्ति थे । कंजूस शब्द खर्च करने में । वह ली मैंने । और वे भी राजी हुए । और परीक्षितलाल के पास लिखा ली । भई, **मोटा** मेरा यह कोई

विषय नहीं । मेरा तो हरिजन की सेवा का विषय । यह आप सब मेरे पास लिखाते हो, मैंने कहा, भई, कोई कारणवशात् लिखाता हूँ । लिखो आप । जो लिखना हो वह लिखो न आप । आपके पास इतने सारे वर्ष रहा । वह आपको जो समझ हो वह लिखो मेरे बारे में । मुझे ऐसा नहीं कहना मेरे बारे में अच्छा लिखो । किन्तु आपके दिल में जिस प्रकार से जो असर पड़ा हो, वह लिखो । किन्तु उन्होंने भी लिखा । वह आज किसी को कहना पड़ता है कि भई, किस तरह काम करता था वह देखो, यह लिखा है । ठक्करबापा ने ।

• भक्ति की एकाग्रता गतिशील है •

तब जो भगवान के मार्ग पर जाता है, उसकी जो एकाग्रता जमती है, वह एकाग्रता कुछ एक में कुंठित होकर एक में ही एक में पिरोती है, ऐसा नहीं । वह एकाग्रता है, वह एक में से दूसरे में गुजरती हुई गतिशील है । वह एक में ही एकाग्रता रहती नहीं । वह एकाग्रता दूसरे के बारे में हमें प्रेरित करती है और वहाँ भी हमें एकाग्र करती है । फिर भी हमारे मूल विषय में से पीछे हटती नहीं । यह उसकी खूबी है ।

इससे मूल भाई ने मुझे सवाल पूछे थे । उसे मैंने इस तरह उत्तर दिये थे । और उन लोगों को संतोष भी हुआ । **मोटा,** आपने अच्छे मुझे जवाब दिये । उड़ा नहीं दिया मुझे ।

अब यह प्रश्न पूरा होता है ।

• *मोटा* के भजन कर्म, ज्ञान और भक्ति का निचोड़ हैं •

ये भजन जो लिखे हुए हैं, उसका साहित्य की दृष्टि से बहुत मूल्यांकन नहीं है । और साहित्य का मुझे कुछ अभ्यास सही । साहित्य की कुछ समझ भी सही । काव्य की समझ भी सही । क्योंकि बी. ए. पढ़ता था । तब मेरा विषय गुजराती था । गुजराती ऑनर्स मैंने लिया था । इससे मुझे समझ तो पड़ती । किन्तु मेरा नियम है और मेरे गुरुमहाराज का मुझे हुक्म है कि तुम्हें ऐसा लिखना कि जो सब सामान्य पढ़े हुए और अनपढ़ व्यक्ति भी समझ सकें । इस हिसाब से तुम्हें लिखना । वह उसे मैं मूल से चिपक के रहा था । जब से लिखने की शुरूआत की, तब से इस नियम को मैं चिपककर रहा हूँ कि जिससे सामान्य व्यक्ति भी समझ सकें । उस तरह ये लिखे हुए हैं । इससे इन भजनों को मैं कुछ काव्य गिनता नहीं । तुकबंदी हैं ।

श्रेयार्थी को इसमें से बहुत समझने का मिलेगा । अन्य कोई भगवान का अनुभव करने के लिए हृदय से सचमुच श्रम करता होगा, उसे इसमें से समझने का तो बहुत मिलेगा, इतना ही नहीं, ये सब साधना की चाल-ढाल जो है, वे मैंने लिखी है । कितनेही गूढ़ साधन हैं, उनके बारे में मैंने उल्लेख नहीं किया है । वे गूढ़ साधन मैंने किये हैं सही, किन्तु उसके बारे में लिखना व्यर्थ है । **क्योंकि अमुक कक्षा तक, अमुक**

भूमिका तक गये न हों और अमुक प्रकार की योग्य शुद्धि हुई न हो तो वे गूढ़ साधन नहीं हो सकते ।

वह तो उस प्रकार की वैसी हमारी भूमिका हुई हो, परिपक्व भूमिका हुई हो तो ही वे गूढ़ साधन हम से हो सकेंगे । मानो कि किसी की भूमिका हुई हो तो भी ऐसे गूढ़ साधन वे कर सकें या क्यों वह भी एक सोचने जैसा प्रश्न है । इससे उसके बारे मैंने कुछ विशेष कुछ उल्लेख मेरे ऐसे आत्मनिवेदनों के भजनों में किया नहीं । किन्तु वे गूढ़ साधन हैं, बाकी तो सामान्यरूप से भजन, स्मरण, कीर्तन, आत्मनिवेदन, समर्पण, निदिध्यासन ये सभी साधन मैंने किये हैं, उनका उल्लेख अंदर आता है ।

साधन किये बिना और साधनों का जो भाव है, साधन से प्रकट होता जो भाव है, वह कर्म द्वारा ही साकार होगा । वह कर्म । इसलिए **कर्म साधक के लिए अनिवार्य है । किन्तु वह कर्म प्रभुप्रीत्यर्थ । स्वयं के लिए नहीं । किन्तु स्वयं का भाव साकार करने के लिए । भाव को व्यक्त करने के लिए और प्रभुप्रीत्यर्थ वह कर्म हुआ करे और उसमें हृदय का भाव पिरोया हुआ हो, वह मात्र कोरा कर्म नहीं रहता, किन्तु वह कर्म यज्ञ हो जाता है और वह कर्म का — सचमुच रीति से कर्म का योग बन जाता है । कर्मयोग हो जाता है ।**

इससे मेरे जीवन में मैंने भक्ति तो की हुई ही है । मेरे भजन इतने सारे छप गये हैं । इतने सारे गाये हैं । उस पर से लगेगा कि भक्ति तो की है, किन्तु कर्म द्वारा भी मैंने—कर्म

भी उसी ही प्रकार से मैंने भगवान की कृपा से मेरे से हुए हैं । इससे कर्मयोग भी हुए हैं । और मेरा यह साहित्य भी पढ़ते । किसी को भी समझ में आएगा कि **मोटा** को ज्ञान तो है । इससे इसका त्रिवेणीसंगम हुआ है । वह भी वह भी भगवान की बड़ी कृपा है । इतनी बड़ी कृपा कि जिसे साहित्यिक भाषा में वर्णन नहीं हो सकता । ऐसी बड़ी कृपा है ।

क्योंकि मेरे जैसे बिलकुल मूर्ख को ऐसा– ऐसा आना ही पहले तो शक्य न था । बचपन में मुझे जिसने देखा हो या तो मैं जब आश्रम में था और गुजरात हरिजन सेवक संघ का सहमंत्री था, तब भी लोग मुझे ठोट कहते, बुद्धू कहते । यह सब परिचित हकीकत है । किन्तु ऐसा आदमी से तब मेरा वेष भी उस प्रकार का था । क्योंकि मुझे नम्रता की—शून्यता की हद तक लेकर—ले जाकर पहुँचानी थी । क्योंकि यह मेरा वह मेरा मेरे जीवन की शिक्षा का एक बड़े से बड़ा तब एक नम्रता विकसित करने का बड़े से बड़ा तबका था । और इससे सब को मैं ऐसा लगता । केवल जब उस प्रकार की नम्रता विकसित करने का मेरा प्रयास चला करता था, तब उस प्रकार का भाव भी मुख पर प्रवर्तित न था । और इससे लोग मुझे कहते तो बिलकुल वाजिब था । उसमें कुछ किसी का दोष मैं देखता न था । किन्तु वे कहते वह मुझे वाजिब लगता था ।

॥ हरिः ॐ ॥

॥ हरिः ॐ ॥

श्रीमोटा-वाणी [८]

श्रीमोटा की पावन ध्वनिमुद्रित वाणी

श्रीमोटा के विधान और परमार्थ की समझ

(१) परमार्थ ऐसा होना चाहिए कि समाज की समग्रता को स्पर्श करे ।

(२) क्रांति को प्रेरित करे वही धर्म ।

(३) गुण और भाव बिना धर्म संभव नहीं ।

(४) पंचमहाभूतों से रचित स्थूल शरीर का नाश होता है, तब सूक्ष्म शरीर निकल जाता है, उसके साथ गुण और भाव दूसरे जन्म में भी जाते हैं । अतः गुण-भाव विकास की प्रवृत्तिओं का दान ही सच्चा, श्रेष्ठ दान है ।

(५) गुण और भाव बिना समाज उन्नत नहीं हो सकता ।

(६) गुण और भाव बिना की लक्ष्मी हमारा मृत्युघंट लाती है ।

(७) मौन, एकांत, अभय और नम्रता से भगवान प्रति अभिमुखता प्रकट होती है; अंतर्मुखता प्रकट होती है । और इन चार साधनों से गुणभावना प्रकट होती है ।

: अनुवाद :
रजनीभाई बर्मावाला 'हरिः ॐ'

हरिः ॐ आश्रम प्रकाशन, सूरत

॥ हरिः ॐ ॥

• विषय-सूचि •

१. मनुष्यशरीर, मुमुक्षत्व और महापुरुष का आश्रय ७०

२. चमत्कार ७७

३. भगवान के नामस्मरण से कामक्रोधादिक जाय ? ८५

४. प्रश्न पूछते हैं कि प्राणायाम विषयक
आपका मत क्या है ? ९२

५. कुंडलिनी के बारे में ९५

६. **श्रीमोटा** का अनाग्रह ९८

७. **श्रीमोटा** की कुशलता और व्यवस्थाशक्ति १०२

८. चेतनानिष्ठ शरीरधारी के लक्षण के बारे में १०३

९. **श्रीमोटा** ने अपने मातुश्री को मृत्यु समय दर्शन दिये १०९

१०. **श्रीमोटा** की मातुश्री का पुनर्जन्म ११२

॥ हरिः ॐ ॥

श्रीमोटा का मिशन

(१) हमारे देश में खेती में, दवाओं में, उद्योगों में, हरएक क्षेत्र में वैज्ञानिक ढब से संशोधन होने चाहिए ।

(२) गुण और भाव विकसित हों और उसे प्रोत्साहन मिले ऐसी प्रवृत्तियों को शुरू करना चाहिए ।

(३) मंदिरों, दवाखानों, अस्पतालों के लिए मदद तथा अकाल राहत जैसी कोई परंपरा अनुसार प्रवृत्ति नहीं ।

(४) व्यक्तिपूजा नहीं करनी चाहिए ।

(५) स्त्रियों का सम्मान हो– उनका खमीर बढ़े वैसी प्रवृत्तियाँ हों । क्योंकि खमीरहीन प्रजा न तो अपना भला कर सकेगी या न तो समाज का या न तो धर्मपालन कर सकेगी ।

• दिल •

तनदिही, धैर्य, उत्साह, हिम्मत सभी गुण,
भाव, भावना, मनोभाव जिस में से प्रेरणा फूट सके ।

चिंतन पर जो उड़ाता है, आकाशगामी ऊर्ध्व में,
ऐसा जो तत्त्व आधार में उसका ही नाम दिल है ।

– मोटा

नोंध : 'मोटा का अनाग्रह' पृ. नं. ९८ से पृष्ठ नं. ११५ तक की हकीकत **श्रीमोटा** स्वमुख से ही वर्णन करते हैं । किन्तु उन सब हकीकतों की पेशी श्री नंदुभाई करते हैं, उस तरह बोलते हैं ।

॥ हरिः ॐ ॥

श्रीमोटा को किये हुए प्रश्नों के जवाब द्वारा हुई सत-चर्चा का अहवाल आपश्री के जीवन के प्रसंगों के साथ

• मनुष्यशरीर, मुमुक्षत्व और महापुरुष का आश्रय •

जिज्ञासु : शंकराचार्य महाप्रभुजी ने ऐसा कहा है कि एक तो मनुष्य का शरीर, मनुष्य का मानवपन मिला उसके बाद मुमुक्षत्व यानी कि उसमें से मुक्ति पाने की जिज्ञासा, तीव्रतम ज्वालामुखी जैसी जिज्ञासा और तीसरा महापुरुष का आश्रय । ये तीनों तीन हमारे जीवन में मिलें तो भगवान का हमारे पर समूचा संपूर्ण अनुग्रह हुआ है ऐसा समझें । इसके बारे में **मोटा** आप कुछ अधिक विस्तार से समझाइए ।

श्रीमोटा - अब पहला तो मनुष्यत्वम्– यह जो शरीर हमें मिला है । मनुष्य का जीवन और यह जो देह है, वह **जीव**दशावाला संपूर्ण **जीव**दशावाला यानी कि काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर, अहमादि, रागद्वेषादि से भरपूर ऐसा जो **जीव**दशावाला स्वार्थी जीवन वह मनुष्यत्व नहीं है ।

मनुष्यत्व के भी लक्षण हैं— जिसमें मानवता पनपने लगी है, सर्वोत्तम प्रकार के गुण जिसके जीवन में पनपने लगे हैं, ऐसे उत्तम गुण जिसके जीवन में झलकते हैं, शोभा देते हैं, प्रकाशवंत ऐसा मनुष्यत्वम् । मनुष्यत्व यानी निरंकुश रीति

से मनुष्य के देहवाला अनेक स्वार्थों से रंगा हुआ कामक्रोधादिक में सतत जो आसक्तिवाला है, ऐसा मनुष्यत्व की समझ यहाँ श्रीशंकराचार्य महाप्रभुजी ने नहीं की है ।

शंकराचार्य जो लिखते हैं, वह मनुष्यत्वम् कि जिसमें मानवता पनपने लगती है और जिसमें अनेक बहुत ही उत्तम प्रकार के गुणों से जिसका जीवन दैदीप्यमान है । यानी कि ऐसे उत्तम गुणों द्वारा जिसका जीवन दैदीप्यमान है । और जिसमें मानवता पनपी है, ऐसा जीवन वह मनुष्यत्वम् ।

और ऐसे ही जीवन में ऐसा मनुष्यत्व जिसे मिला है, उसे ही यह मुमुक्षत्व की भावना जागती है । तब एक शंका उठती है कि अरे भई, आप तो आँख मूंदकर किये जाते हो **मोटा** । किन्तु विचार करो कि यह जो सूरदास, कितना व्यभिचारी जीव बिल्वमंगल हो गया ! वह अपनी पत्नी को छोड़कर अंधेरी रात में बादलों से ढकी हुई रात में मूसलाधार बारिश गिरती थी, उसे भी जो बिलकुल गिनती में लेता नहीं और भरपूर नदी में वह कैसी प्रचंड बाढ़ आयी थी । वह अभी नर्मदामाता में साढ़े इकतालीस फूट ऐसी इस प्रचंड बाढ़ में भी जाने के लिए हिचकता नहीं । इतना ही नहीं, किन्तु जाना किस तरह? वह मुरदे पर बैठकर जाता है । तब भी वह मुरदा होने पर भी मुरदा के रूप में वह देखता भी नहीं । उसकी धारणा तो देखो, साहब । और उस वेश्या के वहाँ जाता है । और वहाँ एक साँप लटकता था । उसके लिए भी अहाहा मेरे लिए चढ़ने के लिए

भी कितनी अच्छी यह योजना कर रखी है। उस साँप को भी साँप रूप में देखता नहीं। इतना सारा वह उसमें अंध हो गया है।

किन्तु ऊपर जाकर जब वह देखता है, वह वेश्या कहती है कि अहाहा ! इतनी सारी भयंकर बारिश में इतनी भयंकर बाढ़ आयी है तो आप आये कैसे ? अरे ! किन्तु तूने उस व्यवस्था की मेरे लिए आने का साधन तूने रखा ! अरे आप मूर्ख हो ! अरे ! वह कहता यहाँ आगे रस्सी बाँध रखी है। मुझे दिखाओ। तब वहाँ उसे साँप दिखाती है। उस मुरदे को दिखाती है और बाई कहती है कि भाई, कि आप अगर यह मुझे इस तरह इतना सारा मुझे चाहते हो। मुझे ! उसकी अपेक्षा भगवान को अगर इस तरह आप करो तो मोक्ष पा जाओ। उसमें से चेत जाता है।

विचार करो कि बिल्वमंगल भले ऐसा था। किन्तु एक–एक उसके वचन से चेत गया। उसकी भूमिका तो सोचो कोई। तब मानवता थी उसमें। एक वचन से उसका पूरा जीवन पलट गया। तब उसमें भी एक मानवता तो थी, थी और थी ही। किन्तु उसने ऐसे भयंकर तूफानों को भी गिना नहीं। दूसरा कोई होता तो भय से चौंक मरता। ऐसी भयंकर बाढ़ में जाने की जिसकी ताकत ही किसी की नहीं चलती। सामान्य व्यक्ति होता तो वहाँ नहीं जा सका होता। और इस तरह वह मुरदे को मुरदे रूप से वह देखता नहीं, इतना सारा एक–सा मशगूल उसके अंदर था। साँप को साँप रूप से भी देख न पाया था। इतना सारा मशगूल उसमें था।

तब जो जीव में भले वह **जीव**दशा की व्यक्ति में ऐसी संपूर्ण एकाग्रपन से केन्द्रता से ऐसी एक-सी जिसमें कूदान लगाकर मरने की तैयारी कर जूझने की और उसमें संपूर्णरूप से एकमय, तन्मय हो जाने की जिसमें जो **जीव** में जो वृत्ति थी, वह बड़ी बात थी। वह उसे पलट जाते। पलट जाते उसे देर नहीं लगती। ऐसे उदाहरण दूसरे भी होते हैं और हैं भी सही, किन्तु उनके जीवन में ऐसे जो गुण थे, उन गुणों को परखने की हमारी मेरे आप जैसेकी ताक़त बहुत लगती नहीं।

किन्तु वह जो मनुष्यत्व है। ऐसा मनुष्यत्व उसका मानवता जिसमें पनपने लगी है। उत्तम प्रकार के गुणों का आश्रय जिसके जीवन में प्रकट हुआ है और जो खमीरवाला है, सचमुच पराक्रमी है। शूरवीर है। जो कुछ करना चाहे उसके लिए फना हो जाने की संपूर्णरूप से जिसकी तत्परता है, लगन लगी हुई है वैसे व्यक्ति को मुमुक्षुत्व की भावना प्रकट होती है।

अब मुमुक्षत्व की जब इसमें से मुक्त होने की जो एक-सी चेतनायुक्त जीतीजागती ऐसी जब ऐसी जिज्ञासा अत्यंत तीव्र जिज्ञासा जागती है, तब ऐसी जिज्ञासा भी गतिशील, क्रियाशील और सर्जनशील है। ऐसी जिज्ञासा कभी बैठने नहीं देती।

और इसीलिए आज सब भगवान की बातें करनेवाले निकल पड़े हैं, उन सब को स्वयं की स्थिति का सचमुच भान हो, इसलिए तो मैंने जिज्ञासा पर एक भाई के एक ऐसा मर्मवचन– ताने से लिखने लगा हूँ। और उसे लिखकर छपाई भी सही। किन्तु कुंभकोणम् में था, तब मुझे लगा। रात में

मुझे सब पंक्तियाँ स्फुरित होने लगीं । तब मुझे लगा । यह तो शास्त्र अभी अधूरा है । और आज लगभग १५०० पंक्तियाँ भी उसकी लिख भी ली हैं और पढ़ेंगे तब उसे पता लगेगा । पाठक जीव को कि जिज्ञासा जागी हो, तब क्या क्या हो और कैसी-कैसी भूमिका में वह खुद कैसा-कैसा हो और उसके भी अलग-अलग अनेक जिज्ञासा के पहलूओं हों और इतना सारा सूक्ष्मता से भगवान की कृपा से लिखाया है कि और मुझे मेरी साधना का अनुभव वह जिज्ञासा अलग-अलग कक्षाओं में किस-किस तरह उसमें से गुजरना हुआ भी आया । और उस जिज्ञासा ने किस तरह मुझे गढ़ा, किस तरह मुझे तारा, ऊपर उठाया । वह सब मुझे बहुत प्रत्यक्ष है, आज भी ।

साधना का इतिहास मुझे लिखना हो तो लिख सकूँ ऐसा हूँ । और वह बहुत मार्मिक, हेतुपूर्वक का, इतना सारा सभानतायुक्त मुझे है भगवान की कृपा से, किन्तु वह लिखने का मुझे अभी हुक्म मिला नहीं है ।

हुक्म वह हमारे लोगों के जीवन में एक ऐसी बड़ी वस्तु है कि हुक्म के लिए मुझे फना हो जाते आज भी बिलकुल किंचित्मात्र भी दिल में डर नहीं लगता । मुझे हुक्म मिला तो समुद्र में चला गया हूँ । और हुक्म मिले ऐसे उस हुक्म में उस हुक्म का मैंने प्रेमभक्तिपूर्वक का पालन किया है ।

तब ऐसी जो मनुष्यत्वकला किसे कह सकते हैं उस पर मैंने कहा । और ऐसा मनुष्यत्व जिसमें खिला हुआ है, उसे मुमुक्षत्व की भावना । ऐसी जिज्ञासा जागती है । और ऐसी

जिज्ञासा जागती है, तब उसे सिद्ध करने के लिए, उसे विकसित करने के लिए कोई भी एक आधार भगवान की कृपा से उसे मिल ही जाता है । वह भी उसे खोजने जाना नहीं पड़ता ।

एक तो उसमें—उस—पहले कदम में जिसके जीवन में मनुष्यत्व खिला हुआ है और जिसमें ऐसी मुमुक्षत्व की भावना जिज्ञासा अत्यंत तीव्र ज्वालामुखी के जैसी जागी हुई है, उसे महापुरुष का आश्रय मिला रहता है ।

अब उस महापुरुष का आश्रय मिलता है सही, किन्तु उसे प्रेमभक्तिपूर्वक का स्वयं स्वीकार होना, वह भी सामान्य हरएक व्यक्ति से नहीं बनता । क्योंकि उस महापुरुष का जीवन, उसका वर्तन वह उसका खुद का विलक्षण होता है । और उस विलक्षण आचरण को झेलना, उसे योग्यता अनुसार स्वंय के हेतु को सिद्ध करने की चेतनायुक्त सभानता साथ उसका स्वीकार करना और स्वीकार करना इतना ही नहीं, किन्तु उसे स्वयं के आधार में पकड़कर स्वयं के आधार के अलग-अलग करणों को ऊर्ध्वगामी रीति से विकास देने के लिए उनको गढ़ना और उसके अनुसार हमारे आधार के—प्रकृति के हमारे आधार के करणों के जो प्रकृति धर्म हैं, उन प्रकृति धर्मों को पलटाना । उस महापुरुष से महापुरुष की भावना उसमें हमारे में भक्ति जागती है तो उसके अनुसार कर सकते हैं ।

क्योंकि महापुरुष मिलना वह तो कदाचित् आसान बन जाय । किन्तु उसे हमारे जीवन में ध्येय को हमारे

आधार में स्वीकार करके, उसे पकड़कर हमारे आधार को चेतना में प्रकट करने के लिए उसे चेतना को पकड़ने– स्वीकार करने– उसी अनुसार फलित करने उस आधार को योग्य होने देना । योग्य करने के लिए इस महापुरुष का आश्रय है, ऐसा भारी से भारी स्वार्थ और अत्यंत तीव्र गरज और ऐसी भक्ति जिसे उस महापुरुष के प्रति जागी हुई है, ऐसे जीव ही उन महापुरुषों की चाहना अनुसार स्वयं वर्तन कर सकेंगे ।

यह इसप्रकार ये तीनों ही जिसे मिले हुए हैं, उस पर भगवान का संपूर्ण अनुग्रह और संपूर्ण कृपा है । क्योंकि ऐसा जीव चेतनयुक्त हुए बिना नहीं रह सकता । हरिः ओ.....म् तत् सत् ।

.... और खूबी तो देखो कि हमारे आद्यशंकराचार्य महाप्रभु ने कहा कि ये तीनों दुर्लभ हैं । इसलिए ही कहा है कि सामान्य प्रत्येक **जीव** को मनुष्यत्व का देह मिला, किन्तु वह प्रत्येक जन में यह मनुष्यत्व खिला नहीं होता । वही खिला हुआ नहीं होता, इससे मुमुक्षत्व तो हो ही कहाँ से ? और हो नहीं तो ऐसे को महापुरुष का कभी निमित्त के कारण कोई काल के संजोगों के कारण से कोई एक ऐसे महापुरुषों– महापुरुष के जीवन के साथ कोई एक रीति से हम जुड़े हुए कोई एक जीवन में हों और ऐसे को हम मिल जाँय तो भी उससे हमारी कुछ बरकत नहीं होती । क्योंकि एक तो हमारे में ऐसा मनुष्यत्व खिला हुआ होता नहीं । मुमुक्षत्व की भावना तो फिर तो

जिज्ञासा ऐसी तीव्र तो जागी नहीं हो । अतः महापुरुषों का होना– महापुरुष हमें मिले हुए होते भी उसका हम योग्य प्रकार का लाभ नहीं ले सकते । इसीलिए आद्यशंकराचार्य महाप्रभुजी ने हमें कहा कि ये तीनों तीन बहुत दुर्लभ हैं ।

• चमत्कार •

अधिकतर लोग समाज का बहुत बड़े से बड़ा हिस्सा चमत्कार से आकर्षित होता है । **चमत्कार का सामान्य जनसमाज में प्रचलित अर्थ या समझ तो यह है कि जो नहीं है, वह प्रत्यक्ष करके दिखाना अथवा जो है नहीं, उसे प्रकट करना या तो कुछ अद्‌भुत, हमारी समझ में न बैठ सके ऐसा और फिर भी प्रत्यक्षरूप से हो ऐसा करके दिखाना ।** इस-ऐसे प्रकार का— इस प्रकार की समझ चमत्कार के बारे में समाज में है ।

सचमुच रीति से अगर ऐसे लोग चमत्कार से, चमत्कार करनेवाले के प्रति आकर्षित हुए होते हों तो ऐसे पुरुष के प्रति उनका..... किन्तु यह तो ऐसा कुछ बनता होता नहीं ..... उनका राग प्रकट हुआ होता, ऐसा जीता-जागता राग प्रकट हुआ होता हो तो सच्ची रीति से मानते कि वे चमत्कार से उनके प्रति आकर्षित हुए हैं । किन्तु वास्तविक रीति से उनके यानी कि समाज के जीवन में ऐसा कुछ राग प्रकट हो गया हो ऐसा अनुभव से जानने में आता नहीं है । तब चमत्कार प्रति लोग आकर्षित होते हैं, यह बात तो सत्य । तब अनेक लोग ऐसे

चमत्कार करते हैं। वे करते हों तो भले करते हों। किन्तु हमारे भागवत में या तो दूसरे कोई बाईबल में भी ऐसे-ऐसे अवतारी महापुरुष के जीवन में चमत्कार किये हुए हैं। ऐसी अनेक हकीकतें आती हैं सही।

ऐसा भागवत में, बाईबल में उसमें जो आता है, उसकी अपेक्षा बहुत कम कुरानेशरीफ में है। ऐसा मुझे कबूल करना चाहिए। किन्तु हरएक संप्रदाय या धर्म के आद्यपुरुषों में ऐसी चमत्कार की हकीकतें होती हैं सही। लिखी होती हैं। और समाज में वे हकीकतें फैली हुई भी हैं।

वर्तमान के संप्रदाय हो गये। उदाहरणार्थ स्वामीनारायण संप्रदाय या तो उसके बाद के जो सब संप्रदाय हुए। उन संप्रदायों के आचार्यों में भी यह चमत्कार होने से ही समाज का बहुत बड़ा भाग इस धर्म के प्रति मुड़ा है।

तब उससे हमें ऐसा फलित यदि करना हो तो कर सकते हैं कि ऐसे यदि धर्म को, धर्म को समाज में जिसे बहुत बड़े प्रमाण में विस्तार में फैलाना है, तो ऐसा फैलावा करने के लिए उनको कोई एक प्रत्यक्ष ऐसा समाज एकदम चकित हो जाय, ऐसा किसी एक साधन की आवश्यकता सही।

जिसे संप्रदाय या धर्म का फैलावा समाज के बहुत बड़े भाग में करना है ऐसे–ऐसे महात्मा या महापुरुष को ऐसे साधन का आश्रय लेना रहता है सही। और ऐसे साधन की पृष्ठभूमि का जीताजागता उनका हेतु एकमात्र भगवान की

दिव्यतायुक्त जो चेतना है, उस चेतना का भाव समाज के हृदय में जाग्रत हो और वह जाग्रत हो उसके लिए ही ऐसे प्रकार के किसी-किसी ऐसे निमित्त के कारण चमत्कार उन लोगों के जीवन में अपने आप प्रकट हुआ करता होता है। अपने आप।

उनको भी ऐसे किसी निमित्त के कारण मिलते हैं, उसके कारण से। उसका हेतु तो यह है कि समाज के बहुत बड़े भाग को अपने प्रति आकर्षित करके उनमें धर्म का भाव उनके जीवन में प्रकट करना। यह उनके जीवन का सब से बड़ा हेतु है। चमत्कार जो उनके जीवन में प्रकट होता रहता है, उसका।

इसके अतिरिक्त दूसरा कोई हेतु मेरी समझ में आता नहीं। और, यह चमत्कार वे लोग नहीं करते हैं। अगर करने की बात करें तो उसमें करना यानी कि प्रयत्न। प्रयत्न की sense यानी कि एक भाव जागता है, करनेपन में। जब ऐसा हो तो वह अज्ञान दशा हुई। वे ज्ञानी या चेतना के अनुभव की भूमिका-वाले कभी वैसे **जीव** कह नहीं सकते। **अतः ऐसे लोग चमत्कार करते हैं, ऐसा बोलना वह गलत है। सही रूप से उनके जीवन में ऐसे किन्हीं निमित्त कारणों के कारण से अपने आप सहज रीति से शक्ति का प्राकट्य— उस रूप से व्यक्त होती जाती है। इससे वे लोग चमत्कार करते हैं, वह बात तो गलत ही है। ऐसा उनके जीवन में उस तरीके से होता जाता है। निमित्त के कारण से। और उसके पीछे का सब से बड़ा महत्त्व का हेतु तो वही है कि समाज के बहुत बड़े भाग को आकर्षित करके धर्म का**

भाव उनके हृदय में जगाना । और ऐसा करेंगे तो ही समाज का बहुत बड़ा भाग उनके प्रति आकर्षित हो । उनके प्रति चले । उनके पीछे जाँय । समाज का बहुत बड़ा समूह का भाग उनके प्रति मुड़े-मुड़े और मुड़े ।

तब कोई एक भाई सवाल पूछता है कि **मोटा** आप कहते हो कि समाज का बहुत बड़ा भाग मुड़े वह बात सत्य । तो हम कहते हैं कि ये महात्मा गांधी थे । उनको तो हजारों लोग इतने सारे समूह जाते कि कुछ हिसाब नहीं । उन्होंने कुछ चत्मकार किया न था ।

तो वह बात सच्ची भाई । उसने चमत्कार नहीं किया । किन्तु उनके जीवन में जो त्याग था, उसके जीवन में जो देश प्रति की जीतीजागती एक-सी चेतनवंती जो भक्ति थी और समाज के लिए मर मिटना, समाज को स्वराज्य पाने के लिए लायकातवाला करना । उसप्रकार की जो दहकती जिज्ञासा, तमन्ना उसके दिल में जो थी, और समाज को मुक्त करने के लिए– इस समाज को अंग्रेज सरकार की गुलामी में से मुक्त करने के लिए महात्मा गांधी के दिल में जो धधकता उत्साह था । इन सब गुणों के कारण से समाज उसके प्रति आकर्षित हुआ था ।

और वह किसी चमत्कार के कारण से नहीं । महात्मा गांधीजी के जीवन में चमत्कार नहीं हुए हैं ऐसा नहीं, साहब । हुए हैं, किन्तु उसे कौन देखने बैठा है ? इक्कीस दिन के एक समय के उपवास में दिल्ली में हिन्दू-मुस्लिम की एकता की

भावना प्रकट करने के लिए उन्होंने इक्कीस दिन के उपवास किये थे। तब थोड़े दिन के बाद उनके पेशाब में अमुक प्रकार के जहरीले जंतु दिखाई दिये, तब सभी डाक्टर बहुत गहरे सोच-विचार में पड़ गये और गंभीर चिंता करके सब चिंतायुक्त स्थिति में आ गये थे और गांधीजी को पंडित साहब और दूसरे सभी ने विनती भी तब की थी कि आप थोड़ा मोसंबी का रस या ऐसा कुछ लो तो अब अच्छा। क्योंकि यह तो भयंकर स्थिति है। यह.... स्थिति रहे तो आदमी कोई जी नहीं सकता।

तब गांधीजी ने कहा कि भाई, अब थोड़ा-सा समय कल प्रातःकाल में आप देखना। मैं..... भगवान को मैंने प्रार्थना की है। और कल प्रातःकाल में आप देखना। कल प्रातःकाल में दूसरे दिन प्रातःकाल में पेशाब देखा तो नोर्मल था। सब जहरीले जंतु कहीं उड़ गये। किन्तु गांधीजी के जीवन में ऐसे प्रसंगों को कौन देखता है ? कौन देखने, उसे समझने कौन बेठता है ? उसके पीछे जो गांधीजी का भगवान प्रति एक-सा अनंत प्रकार का आत्मविश्वास जो जीताजागता चेतनवंत, प्राणयुक्त उसके दिल में धड़कता था। उसकी झनकार कैसी थी वह कौन..... इस हकीकत को कौन देखने बैठा है ? तब उसके जीवन में ..... उसके जीवन में चमत्कार तो थे कोई अलग प्रकार के। किन्तु ऐसे जो भगवान के भगवान के रास्ते जानेवाले या तो धर्म और संप्रदाय। समाज में बड़े भाग को जिसे विस्तार करना है, उसे यह चमत्कार का साधन अपने आप प्रकट होते जाता है और वह व्यक्त होता जाता है।

ऐसा मैंने खुद इसके बारे में ऐसा समन्वय मेरे मन से किया है। सही या गलत मैं जानता नहीं। मुझे हमेशा वह होता था कि जब-जब कोई प्रश्न उठे, तब उसका समाधान प्राप्त कर लूँ, कि जिससे प्रश्न फिर मन में टिके नहीं।

तब कोई एक पूछता है कि भई, ये सत्य सांईबाबा चमत्कार करते हैं उसका क्या ? तब मैं तो उसे ऐसा कहूँ कि भई, सत्य सांईबाबा अभी जीवित हैं। किसी के बारे में मैं न्याय करने कैसे जाऊँ ? आप उसे जाकर पूछो। तो वह आपको समझायेंगे।

मैं तो अब तक जो धर्म के संप्रदाय इस देश में, इस समाज में जिसने जीतेजागते किये और इतना ही नहीं, किन्तु इन लोगों का प्राण कैसा होता है, देखो साहब कि **इस मध्यकाल में जब हिन्दुस्तान पर मुस्लिम वर्ग का राज्य था, तब हिन्दुओं– संस्कृति की जो आपातकालीन स्थिति थी। वह जो त्रास– वह जो जुल्म– वह जो हिन्दुओं पर मुस्लिम बनाने के लिए जो त्रास बरता है, वह तो उसका इतिहास नहीं लिखा हुआ है, वह उत्तम है।**

आज हिन्दू-मुस्लिम में हड्डियों तक बैर है, वह उस संस्कार के कारण चला आया है। वे संस्कार जो समाज के चित्त में समग्ररूप से– totality पर जो पड़े हुए होते हैं, वे कुछ एकदम मिट नहीं जाते। तब जो आपातकालीन स्थिति हिन्दू धर्म की, हिन्दू संस्कृति पर हुई उस काल में हमारे देश में एक-एक भाग में हिमालय से कन्याकुमारी से लेकर और

द्वारिका से जगन्नाथपुरी तक बंगाल भी सही उसमें । एक-एक प्रदेश में संतों की परम्परा जागी हुई है ।

उन संतों के केवल अस्तित्व द्वारा हम लोग इन लोगों के सामने टिक सके । जीवंत रह सके । उन लोगों ने तो हथियार उठाये नहीं या किसी के सामने विरोध में या उसे अस्वीकार करने में भी कुछ भाग लिया नहीं । कि ये गलत है, ऐसा भी उन्होंने कहा नहीं । केवल उनका इस दुनिया पर के उस-उस भाग के उनका एक स्थूल रूप से अस्तित्व था, उसके द्वारा इस समाज में– यह समाज मरता बचा है । हिन्दू समाज उस संस्कृति से मरता बचा । उनके द्वारा संस्कृति मरती-मरती भी बच गई है । वह केवल इन लोगों के कारण से ही । यह कितना बड़ा से बड़ा चमत्कार है ! चमत्कार किसे देखना है ? यही सच्चा चमत्कार है ।

वह यह जो संतपरम्परा जागी उस काल में । उस संत परम्परा ने कितना प्राण प्रकट किया ? अरे ! वह तो बात जाने दो आप ! यह बहुत संक्षिप्त अवधि के इतिहास की बात कहूँ । एक ही समर्थ स्वामी रामदास । यह उत्तम उनको । यह जो आगे विशेषण है वह समर्थ– वह बिलकुल सचमुच ही समर्थ । वे तो संन्यासी थे । भगवाधारी थे । **किन्तु एक संस्कृति के लिए उनमें जो चेतनायुक्त गौरव था । वह गौरव उन्होंने केवल शिवाजी को अर्पण किया । और**

शिवाजी न होते तो सुन्नत होती सब की । वे शिवाजी ने इस हिन्दू धर्म को सचमुच ही बचाया । वे शिवाजी ने अनेक प्रदेश जीते, किन्तु किसी ठिकाने उसने मुस्लिमों को परेशान नहीं किया है । मुस्लिमों की मा-बहनों को परेशान नहीं किया है । उसके विरुद्ध उनका आदर किया । किसी ठिकाने महाराष्ट्रीयन ये जो पेश्वाओं का राज हुआ, तब भी उन्होंने भी बहुत सारे देश जीते हैं, किन्तु किसी ठिकाने मस्जिद तोड़ी हो ऐसा एक भी उदाहरण दिखाये तो उसे मेरा सिर नमन करने के लिए तैयार ।

वह संस्कृति किसने दी ? एक ही मात्र रामदास स्वामी ने । एक ही । उसका उसको जो विशेषण है, समर्थ वह यथायोग्य है । और वह चमत्कार साहब कि पूरे समाज अंदर जिसने चेतना भरी, जिसकी चेतना के प्राण द्वारा पूरा समाज टिक रहे, वह बड़े से बड़ा भारी चमत्कार । ऐसे चमत्कार यदि हम हृदय से, भाव से पहचानें तो ऐसे चमत्कार से हमारी भी आँख खुलती हैं, बुद्धि खुलती है ।

चमत्कार तो ऐसा कि जो समग्र समाज के हार्द को स्पर्श करता है । वह चमत्कार सच्चा । बाकी धर्म के आचार्यों ने उनके जीवन में जो चमत्कार की बातें होती हैं, उसके पीछे का रहस्य तो मुझे जो समझ में आया या उसके बारे में जो मैंने समाधान मेरे मन से, मेरी बुद्धि से, अक्ल से किया है, वह सभी को आपको समझाया ।

• भगवान के नामस्मरण से कामक्रोधादि जाय ? •

बहुत लोग ऐसा सवाल पूछते हैं कि भाई, भगवान का नाम बोलने से और उसका स्मरण करने से कुछ कामक्रोधादिक जाँय ऐसा सब कहते हैं, वह किस तरह होता है ? यह कुछ संभव है ? ऐसा कुछ ये महात्मा लोग कहते हो कि जिससे बुद्धि स्वीकार कर सके ऐसा हो तो ठीक । यह तो मानो ऐसा बोलते हैं और ऐसा कहते हैं कि बुद्धि स्वीकार नहीं कर सकती ।

श्रीमोटा : अनेक ऐसा सवाल पूछते हैं, वह बात तो सत्य है भाई और मैंने भी भगवान की कृपा से बुद्धि का दिवाला अब तक तो निकाला नहीं । और पढ़ता था तब भी बुद्धि मेरी तेज थी । किन्तु गरज आगे गरज बेचारी दीन और जहाँ गरज जागती है, तब बुद्धि दिवाला निकालती है, वह बात मुझे कबूल है । और मुझे भी ऐसा ही हुआ था भाई । मुझे शरीर का रोग हुआ था ऐसा । महिलाओं को होता है वैसा मिरगी का । वह कैसे मिटे मुझे बहुत गरज ।

इससे तो फिर उस साधु ने कहा कि यह भगवान का **'हरि:ॐ'** वह नाम लो । तो उस नाम से मिट जाँय । मुझे ऐसा कि उस मेरे साले ने जंगल की जड़ी-बूटी दी होती तो अच्छा होता । तो मुझे विचार आया था कि यह साधु सही कि इस जंगल की जड़ी-बूटी जानता है तो शायद उससे मिट जाय । तो यह भगवान का नाम लेने से फिर यह रोग मिटता होगा ? यह तो क्या अंधेर ! हमने भाई ने कुछ लिया किया नहीं ।

किन्तु उस समय में हम तो काम करते थे । महात्मा गांधीजी का सब यह अस्पृश्यता निवारण का । मुझे तो बहुत बार उनके बारे में भगवान के नामस्मरण पर और भगवान के नाम पर और भगवान पर उनको अनंत आत्मविश्वास । और वे भगवान का स्मरण भी करते । वे भी कहते कि भगवान के स्मरण से रोगमात्र मिटते हैं । वे तो उनकी अंतिम जिंदगी में उस प्रकार का प्रयोग भी करनेवाले थे । और यह सब बात बिलकुल सत्य । उनको भी मैंने लिखा था । तब उन्होंने तुरंत जवाब दिया कि भगवान के स्मरण से रोगमात्र मिट सकते हैं । इससे उन साधु से मुझे विश्वास महात्मा गांधी पर बहुत ।

अब ये सब लोग कहा करते हैं वह । हम भी लें तब । गरज मुझे बहुत । इससे गरज के आगे ..... गरज जब । जिसमें गरज लगती है न भाई उसमें बुद्धि मानो कि दिवाला निकालती है । वह बात सच । मैंने अनेक लोगों को देखा है । वह इन महिलाओं को ऐसी लगनी लगा देता है और ये गहनें सोने के हैं, ऐसा करके सस्ते में दे दे कर.... महिलाएँ भी ले लेती हैं और ठगी जाती हैं । वह उस लोभ के कारण । वह गरज जागती है, इससे सब अंध हो जाय, वह बात सच । मेरी बुद्धि उस समय पर अंधी थी ऐसा कहो तो चले । क्योंकि मुझे रोग मिटाना था । इससे हम बंदे तो लेने लगे भगवान का नाम । और वह भी planning करके ।

शुरूआत में तो जैसे यह ठीक नहीं । नहीं क्यों रहे ? हमें यह मिटाना है न इससे यह रोग । वह प्रयोग ठीक सच्चा करो ।

जो कुछ करें, कुछ भी करें उसमें honesty, sincerity and devotion for the purpose ये तीन चीज तो होनी ही चाहिए । पूरेपूरा शत से शत प्रतिशत । तो उसके मुझे बहुत समय से अनुभव । क्योंकि मुझे जैसे पढ़ने की गरज जागी थी । तो पढ़ने की गरज इतनी सारी जागी थी कि मेरे पास पैसे नहीं थे । तो दूसरे ठिकाने कालोल में या नागरों के दूसरे फिर पेटलाद में रहा । वहाँ सब मुझे पराये घर में रहने का । इससे पराये घर में रहने का । उसमें से मुझे यह सब सीखने को मिला ।

फिर तो हम राम बोलने लगे । भगवान का नाम भी ठीक से चलता नहीं । फिर तो बुद्धि काम में लगी । भई, क्यों नहीं चलता ? गरज तो पक्की है । इससे फिर योजना की कि हररोज ढाई घंटा तो भगवान का नाम लेना और लेना ही । इससे जल्दी उठने लगा । और भगवान का नाम लेने लगा । हिलते, चलते, फिरते, काम करते ले सकूँ उसे गिनता नहीं ।

उसके बाद रोग मिटा । इससे मैं विचार करने लगा कि यह भगवान का नाम लेने से यह रोग क्यों मिटा ? इसका कारण क्या ? हरएक कर्म के पीछे कोई न कोई कारण रहा हुआ है । वह कारण भले छिपा हो, सूक्ष्म हो, किन्तु कोई न कोई कारण तो होना ही चाहिए । तो वह कौन-सा कारण ? उसके बारे में बहुत सोचने लगा । अनेक महात्मा पुरुषों को पूछता । उस काल के विद्यानंदजी हमारे गुजरात में बहुत प्रसिद्ध । गीतावाले । उनको पूछता । दूसरे सब एक हमारे गोदडिया

महाराज थे । उनको भी पूछता । फिर प्रज्ञाचक्षु अभी गंगेश्वरानंद महाराज हैं । दूसरे ऐसे ही जानकीदास महाराज थे । ऐसे सभी को पूछ लिया था । किन्तु वे किसी से मुझे संतोष नहीं हुआ । जो जवाब मुझे दिया उससे । वे तो कहते श्रद्धा से भगवान का नाम लो और जो भावना हो, वह फलित होती है । सामान्य रूप से तो यही एक stereo typed जवाब मिलता । मुझे उससे संतोष नहीं हुआ ।

.... और उसका जहाँ मुख्य केन्द्र है । शब्द को स्फोट होने का जो केन्द्र है, उस स्थान पर विस्फोट होता है । फिर हमें यह तो सब पलभर में हो जाता है । क्षणमात्र के अंदर हो जाता है । किन्तु जिस स्थान पर यह आवाज स्फोट होती है, व्यक्त होती है, उसके आगे-पीछे भी ज्ञानतंतु के अनेक प्रकार के केन्द्र हैं । ज्ञानतंतु भी एक प्रकार के नहीं होते । अनेक प्रकार के ज्ञानतंतु होते हैं । उन ज्ञानतंतुओं के केन्द्र आगे-पीछे रहे हुए हैं । वह जो स्फोट हो आवाज, उस आवाज की तरंगें आगे-पीछे के ज्ञानतंतुओं के अनेक प्रकार के केन्द्रों को भी स्पर्श किया करती है ।

उस कारण से..... हरिः ॐ वह मेरा जप मानो मंत्र । उसके सतत उच्चारण द्वारा एक ही प्रकार की जो लहरें उसमें से उत्पन्न हुईं वे लहरें चारों ओर वह जहाँ आवाज स्फोट होती है, उसके आगे-पीछे जो अनेक प्रकार के ज्ञानतंतुओं के जो केन्द्र हैं, उन केन्द्रों को सतत स्पर्श करती रहती हैं और उन लहरों के स्पर्श के कारण इन ज्ञानतंतुओं पर जो असर होती है, उस असर के

कारण से ये ज्ञानतंतु tone-up होते होंगे । और उनके कारण से ज्ञानतंतु मजबूत हुए । मनोभाव को सहन करने उनमें पूर्ण शक्ति आयी ।

इस तरह यह जो शब्द है । वह शब्द केवल शब्द नहीं है । उस शब्द के पीछे तो । शब्द को हमारी संस्कृति में ब्रह्म कहा है और उस ब्रह्म की भावना उस शब्द के हार्द में रही ही होती है । प्रत्येक इस संस्कृति का जो जानकार, समझदार है, समझ है जिसे, और जो भगवान का स्मरण करता है, उस स्मरण के पीछे भगवान की भावना रूढ़ हुई है और विकसित हुई है, उस-उस व्यक्ति के दिल में प्रकट हुआ करती होती है । जप के साथ ही ।

ऐसे करते-करते जब यह शब्द अखंड होता है, तब उस अखंडाकार शब्द की जो भावना प्रकट होती है, वह भी उसके साथ होती है ।

अब मूल बात देखें तो जो पाँच तत्त्व हैं हमारे में– आकाश, वायु, तेज (अग्नि), जल और पृथ्वी । उसी तरह तीन गुण सत्त्व, रजस और तमस । अब इन गुणों और पाँच तत्त्वों का संबंध है । आकाश का संबंध सत्त्वगुण के साथ और रजस में अत्यंत momentum इतनी सारी गति की हवा से भी अधिक गति है । वह इस तेज (अग्नि)और वायु में भी अत्यंत momentum यानी कि तेज (अग्नि) और वायु इन दो का संबंध रजस के साथ और जल और पृथ्वी में बहुत inertia उस तरह तमस । उस तमस का संबंध जल और पृथ्वी के साथ ।

अब शब्द जब अखंड होता है, तब इस शब्द का संबंध है आकाश के साथ । आकाश वह निराकार तत्त्व और उसका व्यक्त स्वरूप वह शब्द । अब शब्द जब अखंड, अनंत, अखंडाकार हो, तब अपने आप हमारी भूमिका में आकाशतत्त्व predominant हो । महत्त्व आगे आ जाता है । आकाशतत्त्व । आकाशतत्त्व जब आगे आ जाता है, तब आकाशतत्त्व का सत्त्वगुण के साथ संबंध होने से सत्त्वगुण आगे आता है । ऐसा जब हमारे समग्र आधार में– अंतःकरण में, सत्त्वगुण की प्रतिष्ठा हो या तो बहुत बड़े भाग में वही महत्त्वरूप से काम करता हो - सत्त्वगुण । तब रजस और तमस गुण गौण बन जाते हैं ।

यह काम-क्रोधादिक विषय है, वह रजस और तमस गुण का है । सत्त्व में वे नहीं होते । तब सत्त्वगुण जब हमारे में predominant महत्त्वरूप से काम करता हो जाय, तब हमारे में कामक्रोधादिक का असर नहीं होता । वह ठीक मेरी बुद्धि की समझ में बैठा कि ठीक है । यह शब्द से, मात्र शब्द से किस तरह ये कामक्रोधादिक फीके पड़ जाते हैं, उसका असर कम हो जाय, वह मुझे तब ठीक मेरी समझ में बैठा कि यह ठीक है, किन्तु वह शब्द अखंड होना चाहिए । उसके सिवा नहीं बन सकता । और वह भगवान का स्मरण अखंड होना वह कुछ जैसी-तैसी बात नहीं भाई ।

एक तो हम में गरज जागी नहीं होती । और उसमें याहोम करके कूदने की हमारी तैयारी नहीं होती । और उसका कारण

.... कि हमारे सामने ऐसा जीताजागता मरजिया निश्चयवाला ध्येय कहाँ है ? मनुष्य चाहे उतनी प्रवृत्ति करे, किन्तु बिना ध्येय की जो प्रवृत्ति है, उस प्रवृत्ति में । **अपनी प्रवृत्ति में ध्येय को सतत, एक-सा सामने रखते नहीं होने से हमारी सभी प्रवृत्तियों की सभी जो शक्ति हैं, वे बिखर जाती हैं । Dissipiate हो जाती हैं । इससे केन्द्रस्थान पर जो सकल प्रकार की कर्म की उसके हार्द की जो शक्ति और ध्यान, लक्ष, एकतानता ध्येय प्रति नहीं रह सकते ।**

इससे सामान्य व्यक्तियों को भगवान के स्मरण प्रति कभी अखंडाकार वृत्ति हो सकती ही नहीं । अखंडाकार हो तो वह सहज हो सके ऐसा है । वह मुझे लगता था ।

इससे अब आप समझ सके होंगे कि शब्द का कितना सारा महत्त्व है और संसार में भी है । भाई, कोई आये और व्यक्ति को दो-चार गाली सुना दे तो वह गुस्सा हो जाता है । और उसे अत्यंत प्यारभरे प्रेम से सब बोलो सुंदर रीति से तो भी उसका असर होता है । अरे ! कितने ही दंभी आदमियों की वाणी तो साहब कितनी बार बड़ा भाग निभाती होती है ।

इन पोलिटीशियन्स की बात क्या करो भई । दूसरी बात तो छोड़ दो । वे कुछ शत प्रति शत थोड़े प्रामाणिक होते हैं ? Sincere होते हैं ? किन्तु उनकी भाषा का जादू कोई अनोखा होता है । किन्तु उसका भी असर है । तो फिर यह जो शब्द बोलनेवाला आदमी वह तो शत प्रति शत संपूर्ण प्रामाणिक,

वफादार और भगवान के भाव में रंगा हुआ आदमी है। उसकी वाणी अजीब है। उसकी वाणी का प्रभाव और असर और महत्त्व तो है ही।

इस तरह आप समझ सकोगे कि शब्द से कामक्रोधादिक किस तरह मिटे वह अब आपके दिमाग में प्रवेश किया हो। ना प्रवेश किया हो तो।

• प्रश्न पूछते हैं कि प्राणायाम विषयक आपका क्या मत है ? •

उत्तर : प्राणायाम किसी प्रकार की योग की प्रक्रिया है, विधि है और प्राणायाम की पद्धति से प्राण को इस तरह उसके संयम में प्रकट कर सकते हैं कि जिससे इस प्रकृति को वश करने में यानी कि द्वंद्व और गुण को। द्वंद्व और गुण वह प्रकृति यानी कि द्वंद्व और गुण वह प्रकृति जो काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहमादि में राचती होती है, इस प्रकृति का आधार है यह प्राण ..... और प्राण वह श्वास के आधार पर है। इससे यह प्राणायाम से प्राणायाम की एक पद्धति— योग पद्धति इस प्रकार की है कि जिससे प्रकृति को वश करने में यानी कि प्रकृति का ऊर्ध्वगमन कराने में यह प्राणायाम बहुत बड़े से बड़ा हिस्सा निभाता है।

यह संक्षिप्त काल में हो सके ऐसा है। किन्तु मेरी अपनी समझ ऐसी है कि यह प्राणायाम वह सरल से सरल मार्ग होने पर भी वह कठिन से कठिन है।

यह प्राणायाम कौन कर सकता है, उसकी मुझे जो समझ है, उसके अनुसार कोई गृहस्थी व्यक्ति जो संसारी सुख भोगता है, पति-पत्नीरूप से जो कोई यह सांसारिक सुख भोगता है, ऐसा व्यक्ति यह प्राणायाम नहीं कर सकता । एक सामान्य अर्थ में आपको प्राणायाम करना हो तो करो, किन्तु जिसे इस प्रकृति का ऊर्ध्वगमन करना है, प्रकृति को भगवान की चेतना में जिसे प्रस्थापित करनी है । उसमें भगवान के चरणकमल में उस प्रकृति को ऊर्ध्वगमन कराकर उसके चरणकमल में से गंगा को— भगवान की चेतना की धारा को प्रवाहित करानी है, उस ऊर्ध्वगमन के कर्म के लिए यह प्राणायाम जो कि योग्य से योग्य साधन है, किन्तु वह गृहस्थी जीवन के लिए उस प्रकार के प्राणायम की संभावना नहीं है, ऐसी मेरी पक्की समझ है ।

तब वह जिसे नैष्ठिक ब्रह्मचर्य एक-सा जीवंत प्रकार का, चेतनायुक्त जिसके जीवन में प्रकट हुआ है, वही व्यक्ति इस प्रकार का प्राणायाम करने की संभावनावाला है । कारण कि प्राणायाम में मुख्य आधार है श्वास । तब उसके फेफड़े उस प्रकार के होने चाहिए कि वह श्वास । एक-सा एक थोड़ा भी गति में फरक न पड़े । ऐसा लेने में और छोड़ने में । इतना ही नहीं, किन्तु वहाँ फेफड़ों के अंदर भी एक-सा टिकने में और इतना ही नहीं, किन्तु फेफड़े बिलकुल श्वास से मुक्त हो जाँय और वहाँ वेक्युम हो जाँय तब भी अमुक प्रकार की एक-सी बेलेन्सिग यानी कि समतुलना एक ही प्रकार की

बिलकुल उसमें उसकी गति में तनिक सा भी फेरफार न हो सके। ऐसी स्थिति पैदा करने की संभावना इस ब्रह्मचर्य की स्थिति में ही रहती है। दूसरी कोई स्थिति में वह संभव नहीं है।

इन फेफड़ों की गति पर ही यह श्वास पर ही हमारे मनुष्यजीवन का आधार है। और इस श्वास की गति पर ही कामक्रोधादिक हैं। यह किसी को समझ में नहीं आये। किन्तु साहब, आप यह वैज्ञानिक जमाना है। अत्यंत कामातुर हो तो आप आपके फेफड़ों के श्वास की गति समझ लो। देख लो, जाँच करा सकते हो। आप आपकी नाड़ी से भी आपको समझ में आ जाय। आप आपकी आत्यंतिक अवस्था में। मोह की आत्यंतिक तीव्रता में आप हो तो देखो। उसी तरह जो लोभ की आत्यंतिक तीव्रता में आप हों– गुस्से में, क्रोध में हों तो आपके रक्त का बहना अलग ही प्रकार का। आपकी नाड़ी से समझ में आ जाय। श्वास से भी समझ में आ जाय।

ऐसे व्यक्ति हमारे देश में अभी भी आज भी हैं कि आपके श्वास पर से आपकी मानसिक स्थिति का उनको पता लग जाता है। अनुमान लगा सकते हैं। किन्तु आपको कुछ वे लोग कहते होते नहीं। किन्तु उन लोगों को सूझ-बूझ हो जाती है।

तब एक मनुष्य के जीवन का जीने का एक बड़े से बड़ा प्रत्यक्ष प्रमाण तो श्वास है। इस श्वास को ही जिंदगी माना है। ऐसे श्वास को अमुक प्रकार की नियमितता में किन्तु वह नियमितता जड़तायुक्त नहीं है। चौकठावाली नहीं है, कसी हुई नहीं है। वह श्वास। उस श्वास की अमुक प्रकार की स्थिति पैदा करने में प्राणायाम बहुत बड़ा भाग निभाता है।

किन्तु वह प्राणायाम मेरे आपके जैसे कोई भी सीखने बैठें तो लाभ के बदले नुकसान ही होगा । क्योंकि श्वास का नियमितपन उसमें वह पैदा नहीं कर सकेगा । क्योंकि उस तरह एक-सा लेना, छोड़ना और उसमें भी प्रमाण होता है । दो, चार, आठ, अमुक-अमुक प्रकार का कि वह भी हम योग्य रीति से उस-उस समय, उस-उस बार श्वास की वह पद्धति लेने छोड़ने में हम इतने सारे संपूर्णरूप से शत प्रतिशत चौकस नहीं कर सकते । वह हमारी ताकत बाहर की बात है । इससे मेरे पास तो कोई प्राणायाम सीखने आये तो मैं तो मना ही कर देता हूँ कि मुझे आता नहीं । मैं तो किसी भी गृहस्थी व्यक्ति को कि जो कामक्रोधादिकवाला है, उसे कभी भी मैं प्राणायाम सिखाता नहीं । यह बात मेरी निश्चित है । मेरी समझ है, उसके अनुसार मैं तो भाई बरतता हूँ ।

• कुंडलिनी के बारे में •

अब दूसरे कितनेही लोग कुंडलिनी के बारे में वैसा ही पूछते हैं ।

कुंडलिनी आप जहाँ तक काम, क्रोध, राग, द्वेष, अहम् आदि आपके फीके हुए नहीं, तहाँ तक कुंडलिनी को अपनेआप आप उठाने का करो तो भयंकर अधःपतन को न्योतने जैसा है भाई । कामक्रोध आदि में आप बहुत ज्यादा डूबोगे ।

भगवान की भक्ति में आप, एकरस हो जाओ । भगवान की भक्ति में यह जब हमें रस लगता है, तब अपने आप भई, यह कुंडलिनी तो जाग्रत होती है ।

मुझे स्वयं को ऐसी समझ है। अनुभव की समझ से मैं कहता हूँ। आज तो अनेक लोग चल पड़े हैं, उन्हें चल पड़ने दो। और आज लोगों को मेहनत किये बिना, पसीना बहाये बिना, किसी के आशीर्वाद से तुरंत तुरंत पा लेना है। यह एक पूरी भ्रममूलक हकीकत है।

कुंडलिनी जाग्रत हो। उस कुंडलिनी का हेतु पहले तो मैं जो समझता हूँ, मेरे स्वयं के छोटे से एक समुद्र के आगे एक बिन्दु जितने अनुभव से मुझे जो समझ आयी है, वह मैं आपको कहता हूँ।

कि आध्यात्मिक साधना के पंथ में उच्चतर भूमिकाओं में जाते-जाते सूक्ष्म प्रकार का एक देव-दानव का-सा युद्ध पैदा होता है। उसमें आप देखो तो हमारे पुराणों में हकीकत है कि अनेक बार देव दानवों से हार जाते हैं। तब उनको विष्णु भगवान के पास जाना पड़ता है। उनका रक्षण– उनकी शक्ति लेकर फिर वापस आते हैं और दानवों को हराते हैं, वह तो मेरे हिसाब से एक symbolic expression, एक प्रतीक है।

तब ऐसी जो उच्च भूमिकाओं में सूक्ष्मरूप से देव-दानवों का यह जो युद्ध खेला जाता है, वहाँ हमारी अभी की जो **जीव**दशा की प्रकृति है, उसका जोर, उसकी शक्ति वहाँ काम नहीं लगती। वहाँ भगवान की शक्ति आवश्यक। उस युद्ध खेलने में और हमारे में रहे दानव जो सूक्ष्मरूप से जब यह भयंकर संग्राम होता है, उस भयंकर संग्राम– उस दावानल संग्राम में इस भगवान की शक्ति की आवश्यकता। वह भगवान

की शक्ति वही कुंडलिनी शक्ति और भगवान की ऐसी कुंडलिनी शक्ति भक्ति प्रकट हुए बिना भाई, नहीं जाग सकती है ।

पहले तो उसके लिए भक्ति जागनी चाहिए । तब वह जो देव और दानवों का साधना की उच्च भूमिका में जो भयंकर संग्राम जागता है, उस संग्राम में भगवान की शक्ति के अतिरिक्त सामान्य दूसरी कोई शक्ति काम आ सके ऐसा नहीं है । वहाँ भगवान की शक्ति की ही आवश्यकता है । **यह भगवान की शक्ति वही कुंडलिनी शक्ति । और वह भगवान की भक्ति जागे बिना कभी प्राप्त नहीं हो सकती और भगवान की शक्ति तभी जाग्रत होगी, तब आपमें भक्ति प्रकट हुई हो और भक्ति तभी प्राप्त हो कि जब आपमें काम, क्रोध, रागद्वेष, अहम् आदि बहुत फीके पड़ गये हों और आपका चित्त भगवान में लगा हो, तब ऐसा बन सकता है । तभी यह कुंडलिनी शक्ति जाग्रत होती है और अपने आप जाग्रत हो वही उत्तम ।**

आज तो जैसे बनावटी जो भी सब निकला है । मिलावटवाला जो भी सब निकला है । उसका तो यह काल है भई । हमारे यहाँ **जिसको और तिसको कुंडलिनी जाग्रत करने का और जाग्रत करा देने का महात्मा लोग कहते हों तो मंजूर है । उन महात्मा लोगों को हमारे हजारों नमस्कार हैं । प्रेमभक्तिभाव से । थोड़ी-सी भी अवगणना करके मैं बात कहता नहीं । किन्तु मेरी समझ इस प्रकार की है कि जहाँ तक काम, क्रोध, अहम्, राग-द्वेष आदि**

फीके नहीं हुए हैं और भगवान में चित्त लगता है, तब अपने आप जब आध्यात्मिक उच्च कक्षा में जाएँ और वहाँ की उन सूक्ष्म भूमिकाओं में, साधना की ऐसी उच्चतम भूमिकाओं में यह देव-दानव का युद्ध प्रकट होता है, वह कोई अनोखे प्रकार का है । उसका वर्णन वर्तमान की हमारी प्राकृतिक दशा में कामक्रोध आदि का जो युद्ध है, वह तो बिलकुल तुच्छ है । वह भयंकर युद्ध । उस युद्ध की कल्पना सामान्य **जीव**दशा के आदमियों को आनी भी संभव नहीं है । ऐसे संग्राम में भगवान की शक्ति ही काम में आती है । और वह हमारे पुराणों में इस देव-दानव के युद्धों में अंदर रही हकीकत आती है । देव हार जाते हैं और विष्णु भगवान के पास उनका रक्षण माँगने, उनकी शक्ति लेने जाते हैं । भगवान उनको अभयवचन, शक्ति देकर देव वापस आकर दानवों को हराते हैं । वह प्रतीकात्मक जो वह हकीकत है, वह बिलकुल इस संग्राम में आध्यात्मिक साधना के उच्चतर क्षेत्रों में, उच्चतर भूमिकाओं में यह जो देव और दानव का जो अति सूक्ष्म ऐसा भयंकर संग्राम जो होता है, तब भगवान की शक्ति वहाँ काम आती है । और भगवान की शक्ति वही कुंडलिनी शक्ति । हरिः ॐ तत् सत् ।

• *मोटा* का अनाग्रह •

आश्रम के जीवन में भी अनेक के साथ अब तो **मोटा** संबंध में आते रहते हैं । किन्तु उन सब के साथ कभी खुद

ने खुद का आग्रह व्यक्त किया हो या अपने मंतव्य का ..... किसी को भी भान कराया हो ऐसा आज तक बना नहीं है ।

हाँ, साधना के लिए जो कोई उनको मिले हैं, वैसे लोगों को साधना में योग्य प्रकार के मार्ग प्रति सभानता प्रकट करने के लिए उन्होंने कहा है सही । किन्तु वह हकीकत अलग प्रदेश की है ।

करने का अमुक समय में ही हो, तब अमुक तरह ही वह काम होना चाहिए । या तो सुतार की अमुक लकड़ी अमुक काम के लिए गढ़ना हो तो उस काम की योग्यता अनुसार ही गढ़ना चाहिए । वैसी समझ **मोटा** में साधना प्रति प्रकट हुई होने से साधना के विकास के लिए जो प्रभुकृपा से मिले हो, उनको उसके लिए की ..... की हो सही ।

बाकी, जीवन में अनेक प्रकार के क्षेत्र में सदा अनाग्रह का ही सेवन किया है, वह मेरा स्वयं का अनुभव है । अनेक के साथ इस प्रकार वे बरतें हैं । कितनीही बार **मोटा** पूरा कद्दू का कद्दू शाक में जाने देते । और कभी एक छोटा ..... भी सरकने न देते । **कहाँ आग्रह रखना और न रखना उसकी सूक्ष्म सूझ उनके जीवन में प्रकट हुई है । ऐसा सूक्ष्म प्रकार का, भावनात्मक ज्ञानभक्तिपूर्वक का विवेक उनके जीवन में जागा हुआ है । यह उनके जीवन की विशेषता है । किन्तु वे तो विवेक को भी छोड़ देनेवाले हैं । और विवेक को भी पकड़कर रखते नहीं । कितना सारा अनाग्रह है । जिस अश्लील शब्द बोलते हमारी जीभ रुक जाय, ऐसे**

शब्द भी समाज में बहुत प्रतिष्ठित व्यक्तिओं के समक्ष भी बोलते मैंने सुने हुए हैं । *मोटा* को ।

इससे अब अश्लील बोलना यह तो सभ्यता को तिलांजलि दे दी गिन सकते हैं। किन्तु ऐसा भी कभी-कभी बोलते संकोच नहीं है। उनको ऐसा ही बोलना और ऐसा ही बरतना और रहना और करना ऐसे सब चौकठे में वे कभी प्रवर्तित नहीं सकते। वह भी हमारा नित्य रोज-ब-रोज का अनुभव है ।

उनको कुछ किसी प्रकार का अपना शौक नहीं है। पहनने ओढ़ने का भी विशेष शौक नहीं है। वे गहने पहनते हैं सही । किन्तु वह अपने शरीर के उत्सव प्रसंग समय पर ही। वे तो गहनें माँगते भी हैं सही । और गहने उनको मिला करते भी हैं। और कपड़े भी मिले हैं। किन्तु पहनने का उनका आग्रह नहीं है। अच्छे-अच्छे कपड़े या गहनें बेचकर और उनके पैसे प्राप्त करके अच्छे काम में उसका उपयोग करते हैं। स्वयं के पास कोई ऐसी भेंट चाहिए उससे अधिक मिले हुए हो तो उसे भी बेचकर पैसे इकट्ठे करते हैं और अकेले लंगोटबंद रहना हो तो लँगोट पहनकर वे आराम से रह सकते हैं। कपड़े पहनने का भी उनका आग्रह है ऐसा कुछ नहीं है ।

कराची शहर में कपड़े निकालकर कितने ही घंटों तक फिरे थे । किन्तु पराये देश में और अनजान बस्ती में जहाँ कोई पहचानता न हो, मानो तो कर सकते हैं। गाँधी आश्रम में ही मेरे घर के सामने ही। नाथाकाका करके एक भाई थे। सोजीत्रा

के । वे अनेक बार हमारे यहाँ आते । और **मोटा** को अनेक बार नंगी-नंगी ऐसे बोला करते ।

मोटा ने कृष्ण भगवान के मुआफिक शिशुपाल की अमुक प्रकार की गाली अमुक हद तक सुनते रहे उस तरह **मोटा** ने भी उनको एक बार कह दिया कि नाथाकाका अब आप अगर नंगी-नंगी या नग्न बोलोगे तो यह धोती निकालकर आपको ऐसे पकड़ रखूँगा कि आप भईसाहब कहोगे तो भी फिर आपका पीछा नहीं छोडूँगा । अब बैठ-बैठ तू बड़ी । कपड़े निकालनेवाली नंगी हो तो । मेरी व्यर्थ की । यों **मोटा** को नाथाकाका ने ऐसा कहा । और **मोटा** ने तो कपड़े निकाल दिये । हमारे ही चबूतरे के पीछे कितनीही महिलायें खड़ी थीं । **मोटा** को बिलकुल संकोच नहीं हुआ । अरे ! वे तो नाथाकाका को ऐसे चिपक रहे कि नाथाकाका तो भागते रहे और **मोटा** भी पीछे भागते रहे । और नाथाकाका ने जब माफी माँगी । तो इससे इसका भी उनको आग्रह नहीं है । अनाग्रह है ।

जीवन में सूक्ष्म हकीकतों के प्रति या तो अमुक प्रकार के वर्तन प्रति या तो स्थूल जीवन या स्थूल शरीर के प्रति भी उनका अनाग्रह है । ऐसे अनेक प्रसंग उद्धृत कर सकते हैं और लिख भी सकते हैं । किन्तु वह सब लिखने में बहुत बड़ा विस्तार हो जाय, इससे इतनी हकीकत ही पर्याप्त है ।

• *मोटा* की कुशलता और व्यवस्था शक्ति •

आज भी **मोटा** को देखकर किसी को ऐसा नहीं हो कि ये **मोटा** में भारी कुशलता होगी । शक्ति होगी, समझ होगी । प्रत्येक व्यक्ति को मेरी सिफारिश है कि मेरी यह समझ सही है या नहीं वह **मोटा** को देखकर खुद अनुमान कर लें ।

उन्होंने आश्रम स्थापित किये और उन्होंने कारबार चलाया । उस कारबार और उसकी व्यवस्था वही साबिती देने में **मोटा** में कितनी समझशक्ति है, वह साबित कर देने में पर्याप्त है । इतना ही नहीं, किन्तु आश्रम में कितने अलग-अलग प्रकार के, स्वभाव के आदमी आते हैं, महिलायें आती हैं, बालक आते हैं, वयोवृद्ध आते हैं । वे सभी के साथ मैंने **मोटा** का बर्ताव और सब के साथ हिल-मिल कर गल जाने की उनकी वह रीति एक अनोखी थी ।

मोटा की एक विशेषता और भी है । मानो कि भई **मोटा** के लिए मुझे भाव है । ऐसा कोई कहते तो **मोटा** मान लें ऐसा नहीं है । वह भाव **मोटा** के सम्बन्ध में लोगों के मन का भाव है तो वह कर्म में साकार होना चाहिए । भाव जब हो । और यदि सच्चा हो तो किसी न किसी प्रकार से साकार रूप में वह प्रकट होना चाहिए । जैसे कि मोह हो, हमें लोभ हो या हमें काम हो या वासना हो ।

• चेतनानिष्ठ शरीरधारी के लक्षण के बारे में •

चेतनानिष्ठ शरीरधारी जो आत्मा है, उसे परखने को कोई लक्षण हैं या नहीं ? ऐसा कोई ..... ऐसा सवाल जो कितनेही पूछते हैं, उनको **मोटा** अपनी मौलिक रीति से जवाब भी देते हैं ।

कि भई, यह परखने के लिए जैसे किसी में कोई एक यंत्र में बिजली लीकेज होती हो तो वह परखने के लिए एक अलग यंत्र मिलता है । उसी प्रकार का कोई यंत्र हो तो बिजली लीकेज होती हो तो उसे परख सकते हैं । उस प्रकार चेतनानिष्ठ शरीरधारी जो आत्मा है, उसके जीवन में ऐसे कितनेही लक्षण तो होते हैं । किन्तु वे लक्षण प्रत्यक्ष रूप से प्रवर्तमान जीवन में हों, किन्तु सामनेवाला आदमी परखते नहीं उसका क्या करना ?

उदाहरणार्थ एक हकीकत **मोटा** ऐसा कहते हैं कि वह संपूर्ण निःस्पृही हो और स्वार्थी भी हो । ऐसे एक दूसरे से बिलकुल विरोधात्मक पहलू हों । उसका समन्वय कैसे हो सके ? यह हमारी बुद्धि कबूल नहीं करती, किन्तु ऐसा होता है सही ।

उसका एक उदाहरण **मोटा** के जीवन में प्रत्यक्ष देखा हुआ वह हकीकत कहता हूँ । कि **मोटा** का जीवनचरित्र मुंबई की एक बहुत बड़ी पीढ़ी पब्लिशर्स आर. आर. शेठ एन्ड कं. छापती है । उसमें लेख कितनेही भाई लिखते हैं । यह तो **मोटा** के स्वार्थ की बात हुई । किन्तु उसमें भी इतने सारे निःस्पृहता

से बरतते कि एक भाई जो लिखनेवाले थे, उस पर गुस्सा करके भी उन्होंने कह दिया । अतः उस भाई को बुरा भी लग गया ।

अब जो यह सोचने में आये उसे जो लिखनेवाले थे कि भई, यह तो **मोटा** ने एक बड़ी बात बता दी । लक्षण बता दिया । कितने निःस्पृही हैं । अगर उसको ऐसा हो कि साला, यह तो नहीं तो वे सचमुच यदि स्वार्थी होते तो अपना काम करा लेने में दुनियादारी के जैसे व्यावहारिक आदमी होते, वे तो अपना काम एकदम निकाल लेने में एकदम चालाक, चतुर हो और उस समय पर नीति पलट देते हैं । तो कि हाँ भई, वह बात तो सत्य । यह मानने में आये ऐसी बात ।

किन्तु ये **मोटा** के कितनेही ऐसे कितनेही समय पर ऐसे लक्षण मैंने स्वयं देखे हैं कि संपूर्ण निःस्पृह हो । उस निःस्पृहता की यह हमारी बुद्धि कबूल करे ऐसी हकीकत हो, किन्तु उस समय वहाँ कितनों का अपना अहम् बीच में आड़ा आ जाता है । वह अहम् घायल होता है, इससे वह बात— मूल बात उड़ जाती है ।

तब यह एक ऐसे जीवन में एक संपूर्ण निःस्पृह होते हैं । **मोटा** ने कितनेही सेठों को भी ऐसा सुना दिया है । यह मेरी स्वयं माहिती की बात है और स्वयं उसका मैं साक्षी हूँ । मैंने स्वयं देखा है ।

तब ऐसा निःस्पृही व्यक्ति होने पर भी फिर वह स्वार्थी, अपना काम को निकालनेवाला भी होता है । इन दो वस्तुओं का समन्वय उनके जीवन में हुआ होता है । इस तरह वह संपूर्ण

कामनायुक्त । हें.... ? किसी को ऐसा हो । ओह ..... अबे क्या ? यह तो कुछ बात आप करते हो । ओरांग-उटांग जैसी किन्तु यह बिलकुल सच्ची ।

इसकी विरुद्ध दिशा के पहलुओं देखने जाँय तो उनको कितनी ही बार लोग **मोटा** को कोई प्राथमिक परिचयवाले रुपये देने आये तो वे ना कहते । भई, ठहरो । अभी देखो । **मोटा** की तो अनेक योजना होती हैं, काम लेकर बैठे हैं । लाखों रुपये के काम लिए हों तो भी ऐसे के पैसे उन्होंने छोड़ दिये हैं । मेरी स्वयं की जानकारी की बात है ।

इससे वे लोभी, अपने स्वार्थ के लिए तो कोई काम कुछ होता नहीं है । समग्र जनसमाज के काम उन्होंने सिर पर लिए हुए हैं । यानी कि परमार्थ के काम होते हैं । किन्तु इन परमार्थ के कामों में भी फिर खुद वे कामी हैं, लोभी, मोही भी हैं । नहीं है ऐसा नहीं । किन्तु उसके साथ सब करते होने पर भी कितने ही प्रसंगो में उनमें संपूर्ण निःस्पृहता फैली देखी हुई है । तब जैसे संपूर्ण कामनायुक्त एवं संपूर्ण निष्कामना- युक्त । संपूर्ण लोभी फिर भी उसके सामने विरोधात्मक पहलू में संपूर्ण निर्लोभी । संपूर्ण मोही और संपूर्ण निर्मोही । ऐसे **एकदूसरे से आमने-सामने के पहलूओं का और उन पहलूओं एकदूसरे से बिलकुल विरोधी ऐसे पहलूओं का जिसके जीवन मे समन्वय हुआ है, मेल हुआ है, उसने चेतना में निष्ठा पायी है, ऐसा मानना ।**

किन्तु ऐसा प्रत्यक्ष जिसके जीवन में प्रवर्तन हो, उसे उस-उस पहलू जब व्यक्त होते जाता हो, तब उस पहलू को उसी तरह अनुभव करना वह एक अलग हकीकत है। उस अनुभव करने की कला तो जहाँ तक हमारे में ऐसी भक्ति प्रकट न हो, तहाँ तक हम उसे नहीं पहचान सकते। खुद-ब-खुद बनता होने पर भी प्रत्यक्ष रूप से बनता होने पर भी हम उसे परख नहीं सकते।

उदाहरणार्थ **मोटा** तो बहुत बार ऐसा कहते हैं कि भई, मेरा हजार हाथवाला भगवान ये सब काम पूर्ण करते हैं। मैंने उनके जीवन में देखा है कि उन्होंने १९६२ की साल से शुरूआत लाख से की। दो लाख, तीन लाख, चार लाख, पाँच लाख, सात लाख और साढ़े नौ लाख और इस साल तो उससे भी बढ़ गये। किन्तु वे कामों लिए। उन्होंने वे कर्म करने लिए। उनके जीवन में प्रयोगात्मक अनुभव होते गये हैं। प्रयोगात्मक– मान लेना नहीं, कल्पना से नहीं, बुद्धि से नहीं, किन्तु प्रत्यक्ष रूप से। कि उनको कितनेही ऐसे व्यक्ति अपने आप मिल आते हैं और उनके काम उस तरह से अनेक हाथों द्वारा होते रहते हैं। वह हमारी जीती-जागती और प्रत्यक्ष अनुभव की हुई हकीकत है।

तब दूसरा भी एक है लक्षण। कि कितनों के जीवन में ऐसे चेतना में निष्ठावंत हुए शरीरधारी जो आत्मा हैं, उनके जीवन की चेतना की धारणा किसी-किसी **जीव** को स्पर्श की हुई हो। और तब वे अपने शरीर की शक्ति की जो मर्यादा है, उसमें

उस मर्यादा को पार करके भी वे काम करते, काम कर रहे होते हैं। ऐसे जीवों की जीवन की हकीकत भी परिचित है। उनके नाम तो नहीं दे सकता हूँ, किन्तु वे हकीकतें जानने में आयी हैं। किन्तु ऐसा receptive भाव ऐसी उनकी आध्यात्मिक जीवन के प्रति महत्त्वाकांक्षा, उनका ध्येय ऐसा धधकता उनके जीवन में प्रवर्तित नहीं होने के कारण ऐसी चेतना की धारणा उनके जीवन में नहीं टिक सकी। विदाय हो गई। किन्तु उसके संस्कार पड़े बिना नहीं रहते। किन्तु वे संस्कार भी जो भक्ति प्रकट हुई हो और उसके जीवन में जो प्राणवान, चेतनावान जीतेजागते बनते हैं वैसे उस **जीव** में जिसकी भूमिका ऐसी योग्य प्रकार की प्रकट नहीं हुई है, जीतीजागती हुई नहीं है, ऐसे **जीव** के **जीव**दशा के प्रवाह में उस चेतना की धारणा के जो संस्कार पड़ते हैं, वे ऐसे प्रबल नहीं पड़ते। तथापि उसका भी हेतु मारा नहीं जाता। समय जाते ऐसे संस्कार भी— पड़े हुए संस्कार भी। सत्संग की जो महिमा जो गाई है, वह इस रीति की है कि वैसे संस्कार भी उसके जीवन में किसी न किसी समय पर वे संस्कार उदय वर्तमान हो, तब उसे वैसी ही वृत्ति में ले जाँय सही। किन्तु जीवन का ध्येय उस प्रकार का तमन्नायुक्त, तीव्र छटपटीयुक्त ज्वालामुखी की प्रकट होती प्रखर ज्वालाओं के समान जहाँ तक नहीं हुआ हो, तहाँ तक सामने के ऐसी चेतना में निष्ठावान हुए शरीरधारी आत्मा के जीवन की चेतना की भावना उनके जीवन को स्पर्श करे तो भी उस प्रकार की नहीं हो सकती।

ऐसे लोगों के परिचय में आये हुए कितनेही **जीवों** को उनके स्पर्श के कारण ऐसी एक प्रकार की शक्ति उस काल में, उस प्रसंग में उनको प्रवर्तित हुई दिखती है। इतना ही नहीं, किन्तु कर्म में भी उस सामान्य **जीव**दशावाले **जीव** की सामान्य जो शक्ति हो, उस शक्ति की मर्यादा को भी वह पार कर गई होती है, ऐसे उदाहरण हैं। तब यह जो ऐसा बनता है, वह ऐसे लोगों की चेतना की प्रबल भावना के कारण ऐसा बनता है।

ऐसे अलग-अलग प्रकार के लक्षण ऐसे जीवन में प्रत्यक्षरूप से होते हैं तो सही। किन्तु उसे भी समझने के लिए हमारे दिल में जब सचमुच भक्ति प्रकट हो, तब उसके अनुसार हम अनुभव कर सकते हैं। बाकी तो हम ..... हम **जीव**दशा में होने से अनेक प्रकार के ये लोग हमें तो धक्के मारे बिना रहेंगे नहीं। और उनके धक्के को स्वीकर करने के लिए, वे धक्के अनेक प्रकार के मारते हैं, किन्तु वे धक्के झेलने के लिए, हजम करने के लिए हमारे आधार (अंत:करण) के रोम-रोम में हमारे जीवन को तादृश्य रूप से एकरस होने के लिए जिस प्रकार की हमारी पात्रता, भूमिका, एक-सी भक्तिवाली, चेतनवंती प्रकट हुई हो, तब उसे जो ग्रहण करता है, उसे वह ग्रहण करने में जो उसे उत्साह है वह, कोई अजीब है।

● ● ●

समर्पण यज्ञ जीवन की झलक कोई अजीब अजीब है ।

तब ऐसा समर्पण यज्ञ जिसके जीवन में एक-सा, चेतनवंता अपने ध्येय को अपने जीवन में साकार करने के लिए जो चेतनवंत मर्द होकर पराक्रमी और महापुरुषार्थी जो प्रयत्न करता रहता है और एक-सा जो अपने जीवन में जो उसे ही लक्ष में रखकर जो सतत, एक-सा, तैलवत् लगा रहता है, उसके आधार (अंत:करण) में ऐसे जीवन का जो स्पर्श हो तो उस स्पर्श की झनकार कोई निराले प्रकार की है ।

तब ऐसे लोगों के लक्षण तो होते हैं । और उन्हें परख सकें ऐसे होते हैं । किन्तु उसे परखने के लिए भी हमारे पास ऐसी भूमिका चाहिए । हरि:ॐ ..... तत् सत् ।

• श्री*मोटा* ने अपने मातुश्री को मृत्यु समय में दर्शन दिए •

मोटा के जीवन में एक भारी आपातकालीन स्थिति के समय की बात करें । कि **मोटा** नरसिंहराव भोळानाथ की दो दौहित्रियों को लेकर बनारस में हिन्दू युनिवर्सिटी में थे । तब **मोटा** को– **मोटा** पर उनके छोटे भाई मूळजीभाई भगत का पत्र आया कि भाई, माता तो अब मृत्युशय्या पर हैं और कितने दिन जीएगी यह निश्चित नहीं है और आपको माता बहुत याद करती हैं । तब **मोटा** तो वहाँ नहीं जा सकें, ऐसी स्थिति थी । ***मोटा* तो हमेश ऐसा ही मानते कि परिस्थिति का मिला हुआ धर्म और उसका स्वीकार और उसके अनुसार का**

कर्तव्य वही मुख्य धर्म है । इससे उन्होंने तो कराची उन बेटियों के पिता को टेलिग्राम किया कि मेरी ऐसी स्थिति है और मुझे एकदम नडियाद जाना ही चाहिए । इसलिए तत्काल इन लड़कियों के साथ रह सके ऐसी आप व्यवस्था करो । उन्होंने तो कराची से लौटता टेलिग्राम किया की भाई, इच्छानुसार व्यवस्था करके तू जा । किन्तु पराये प्रदेश में इन लड़कियों को अकेली रखकर कैसे जाँये ? और किस को रखें ? बनारस हिन्दू युनिवर्सिटी में एक कायदा ऐसा था कि जो लड़कियों के साथ उनका बुजुर्ग हो और उनका जो जवाबदार ऐसा कोई योग्य व्यक्ति न हो तो उनको वहाँ रहने की मनाई थी । और हम तो वहाँ बंगला किराये पर रखकर रहते थे । इससे मुझे तो कोई योग्य व्यक्ति वहाँ मिला भी नहीं और कैसे मैं जाऊँ ? तो वहाँ मैंने जवाब लिखा कि भाई, आप आओ तो ही हो सकता है । किन्तु वे आये नहीं और मुझे यह जवाबदारी आयी । यह जवाबदारी **मोटा** को तो अदा करनी रही ।

अब उस स्थिति में **मोटा** तो बंद हो गये । और भगवान का ही एक आशरा उन्होंने लिया । और एक हकीकत यह थी कि **मोटा** जब हरिजन सेवक संघ की प्रवृत्ति में से निवृत्त होने के थे, तब माँ के आशीर्वाद लेने गये । माँगे ! तब माने कहा कि अबे, तुम्हें चिड़ियाँ को डालने के लिए पाव (कच्चा) चुगा तो मिलता नहीं और फिर इतना जरा-सा तू लाता है, वह भी तू छोड़ देता है । यह कोई रीति है तेरी ? और तूम्हें और तू क्या विशेष वहाँ जाकर पानेवाला है ? इसलिए यहाँ रहकर कुछ

भी कर । और यह नौकरी कर । फिर मैंने ..... **मोटा** ने तो उनकी माँ को बहुत समझाया । तो कहा कि भई देख । तुम्हें ..... तुम्हें मुझे रकम देनी पड़ेगी । **मोटा** ने कहा कि हाँ, माँ दूँगा । बोल तू अपने आप । कहा कि हर महीने मुझे पाँच रुपये देना । तो **मोटा** ने व्यवस्था कर दी थी । किन्तु दूसरा वचन उन्होंने माँगा । तब **मोटा** की माँ ने कहा कि बेटा, मैं बीमार होऊँ और मृत्यु समय पर तुम्हें मेरे पास हाजिर रहना । तो **मोटा** तो राजी हो गये । कि माँ वह तो मेरा धर्म है । तेरी सेवा करना यह तो मेरा सद्‌भाग्य है । और ऐसे समय पर तो मुझे भी तेरे पास रहने का मन हो ही ।

अब इस परिस्थिति में खुद वचन दे चुके थे और खुद वहाँ जा सकें ऐसी स्थिति न थी । उस स्थिति में उन्होंने तो भगवान का ही आशरा लिया । और सतत एक-सा भगवान की स्मरणभावना में, प्रार्थनाभाव में, आर्द्र और आर्त भाव से सतत पुकार करते ही रहे । और भगवान की कृपा का असीम जो आनंद का सुख **मोटा** को मिला, उसका आनंद तो उसका अनुभवी ही समझ सकता है । और वहाँ नडियाद में **मोटा** की माँ की मृत्यु-समय पर भगवान ने **मोटा** को वहाँ प्रत्यक्ष कर दिया । यह हकीकत की बात है । और **मोटा** को तब **मोटा** के छोटे भाई मूळजीभाई वहाँ थे, उनको **मोटा** की माँने कहा कि अबे, मूळिया देख, यह चूनिया आया । किन्तु खूबी की बात तो वह है कि अगर मूळजीभाई थोड़े से व्यवहारू होते तो मूळजीभाई ने ऐसा कहा होता कि अच्छा, बहुत अच्छा कि

भई, चलो, चूनिया तेरे पास मृत्यु समय पर आया वह अच्छा हुआ । किन्तु मूळजीभाई तो ऐसे कि अरे ! कि माँ चूनिया यहाँ कहाँ से हो ? चूनिया तो काशी में है । अरे कि हो ? ना हो । यहाँ मेरे पास देख । मेरे पैर दबाता है । और यह देख यह रहा । मैं तो ..... मुझे वचन दिया था चूनिया ने कि मृत्यु समय पर मैं तेरे पास हाजिर रहूँगा । वह हाजिर रहा है । देख यहाँ ! और **मोटा** ने– **मोटा** को मूळजीभाई ने उस बाबत का पत्र लिखा था । वह पत्र मेरे पास बहुत समय तक था । अभी भी मैंने खोजने का तो प्रयत्न किया, किन्तु अभी मुझे मिलता नहीं है । किन्तु कहीं मैंने रखा है, वह उसे वह मेरे मन से सत्य हकीकत है । किन्तु इसके उपरांत दूसरी खूबी तो यह है कि **मोटा** को उनके गुरुमहाराज ने अनेक बार कहा था कि भई, चेतन में निष्ठावान हुए शरीरधारी आत्मा उसके संसर्ग में कोई काम से, मोह से, लोभ से और राग से करके भी जो कोई उसके साथ सचमुच जुड़ा हुआ है, उसका जन्म जल्दी होता है ।

• श्रीमोटा के मातुश्री का पुनर्जन्म •

इससे **मोटा** को तो ऐसा लगा कि यह सही रीति है । मुझे मेरे लक्षण की भी इस प्रायोगिक– प्रयोग की रीति से भी **मोटा** को इसकी समझ भी आ जाएगी । और उनकी मा का जन्म हुआ है, वह कि उसकी भी उसे । यदि तुरंत जन्म हो तो **मोटा** को अपनी स्थिति विषयक एक प्रयोगात्मक हकीकत मिल जाए ।

इससे **मोटा** ने फिर क्या किया ? कि जब उनके भाई का पत्र आया, तब तो वे उनको एक ध्यान में– एक-एक ऐसी परिस्थिति है एक ध्यान में कि उसे संयम कहते हैं, उस संयम इस इन्द्रियों पर संयम रखने की वह बात है, वह नहीं है । यह संयम कोई न्यारे प्रकार का है । योग की भाषा का यह शब्द है । टेकनिकल शब्द है ।

उस संयम की बात ऐसी है कि जब ध्यान में संपूर्णरूप से हम एकाकार हो गये हों और इस शरीर की consciousness शरीर की सभानता जाने की पल हो, उस पल में अगर जो कोई संकल्प हम रखें वह संकल्प साकार हो जाता है । यह कोई मामूली बात नहीं है । यह तो बोलने में तो आसान है । किन्तु ऐसे समय पर ऐसी इतनी सारी तीव्रतापूर्ण सभानता कोई भी एक संकल्प के प्रति जीतीजागती चेतनवंती उस समय पर प्रकट होनी यह एक दुर्घट घटना है । किन्तु **मोटा** को तो वह हस्तकमलवत् समान स्थिति थी । इससे उन्होंने तो तब ऐसा ध्यान धारण किया और शरीर की उनकी सभानता जाने के पल में ही उस संकल्प को अपने में धारण किया । और संकल्प धारण करने के समय में ही उनको काशी के अलग-अलग मुहल्ले-गलियाँ और कहाँ-कहाँ से कैसे-कैसे मोड़ होकर कैसे-कैसे ठिकानें, मुख्य चौराहा आये वहाँ कैसा-कैसा हो, यह सभी प्रत्यक्ष उनकी नजरों में आया । और वहाँ एक-एक कोई एक-एक मोड़ की किसी गली में किसी एक घर एक बालिका माता को जन्मी है । वह बालिका उनकी माता का स्वरूप । वह उनको प्रत्यक्षरूप से सब नजर के सामने आया ।

और सवेरे में ही वे तो जल्दी उठकर उनको वह तादृश्यरूप से एक-एक प्रत्यक्ष details वाला जो दर्शन हुआ था और वह सब उनको ताजा था और बहुत स्मरण में रहा था उसके अनुसार चलते, चलते-चलते फिरते अनेक मोड़ लेते-लेते जो-जो निशान मिले थे, उनके अनुसार वहाँ जाते उस घर के आगे आ गये और उस घर के चूबतरे पर वे बैठे रहे। और घर के लोगों का ध्यान उनकी ओर गया नहीं, इससे स्वयं भजन गाने लगे और स्मरण गाने लगे। धुन चलाई। इससे दो-चार व्यक्ति घर में से आये। बाद आने लगे। किन्तु किसी ने कुछ पूछा नहीं।

फिर भी बाद में एक भाई आये। कि भई, क्यों आप इतना सारा समय से चबूतरे पर बैठे हुए हो ? बात तो सब हिन्दी में करते थे। कि इतना सारा समय भाई। तो **मोटा** तो दूसरा क्या कहते ? किन्तु उन्होंने तो ऐसा कहा कि रात में मुझे स्वप्न आया, कि स्वप्न में मैंने आपके घर एक बालिका ने जन्म लिया है ऐसा मुझे आया। और उस बालिका जो है, वह इस मेरे जीवन के साथ जुड़ा हुआ जीव है। उसका दर्शन मुझे करके चले जाना है। और मुझे दूसरा कुछ काम नहीं है। मुझे ऐसा हुक्म मिला है, इसके लिए मैं दो घंटा से यहाँ बैठा हूँ। कहा भाई, कि आप अभी ही जन्म हुआ है। अभी अब उसे बारह-चौदह घंटे भी नहीं हुए हैं। आप अनजान व्यक्ति को किस तरह हो ? मैंने कहा जैसी आपकी मरजी। मुझे किसी प्रकार का आग्रह नहीं है। किन्तु यह तो मुझे हुक्म हुआ है भगवान का, इससे मैं बैठा हूँ। आप कहेंगे तो चार-पाँच घंटे भी बैठूँगा। किन्तु मुझे हरज नहीं, केवल दर्शन करके मैं चला जाऊँगा।

उन लोगों को मेरे पर या तो दया आई, करुणा आई । कैसे भी करके मुझे अंदर ले गये । महिला लोग– दूर जाकर लड़की लाकर मुझे दी । और मैंने मेरी गोद में ली । लड़की को पैर पड़ा । और मुझे प्रतीति हो गई कि भई, यह जो ऐसे जो चेतनावंत शरीरधारी जो आत्मा है, उसका संसर्ग रागवाला भी यदि हो, किन्तु वह सचमुच रागवाला । उस राग में honesty, sincerity and devotion of purpose पूर्ण पक्के होने चाहिए ।

और **मोटा** की माँ का **मोटा** पर तो बहुत राग था । यह बात तो बिलकुल सच्ची है । वह ऐसा रागवाला **जीव** उसमें **मोटा** में, उनका– उनकी माँ का दिल था । और वह **मोटा** को जब जानने मिला कि उनका थोड़े ही समय में उनका **जीव** फिर से शीघ्र में इतने शीघ्र काल में जन्म होना वह **मोटा** को भगवान की कृपा से, उनके गुरुमहाराज के आशीर्वाद से अपने जीवन की प्रत्यक्ष अभी की जो आध्यात्मिक भूमिकावाली जो हकीकत है, उसकी उनको साबिती हुई और उसके द्वारा जो आनंद हुआ वह भगवान ने कृपा करके, अत्यंत करुणा करके उनको जो इस प्रयोग का दर्शन– अनुभव जो कराया इससे उनके जीवन में जो गद्‌गद भाव उस समय पर प्रकट हुआ और भगवान पर वे कितने सारे न्योछावर हो गये होंगे, वह तो हम केवल कल्पना से समझ सकेंगे ऐसी हकीकत है ।

हरिः ॐ .... तत् सत् ।

● ● ●

हरि:ॐ आश्रम में उपलब्ध हिंदी पुस्तकों का लिस्ट

क्रम	पुस्तक	प्र.आ.
१.	पूज्य श्रीमोटा एक संत	१९९७
२.	कैंसर का प्रतिकार	२००८
३.	सुख का मार्ग	२००८
४.	दुर्लभ मानवदेह	२००९
५.	प्रसादी	२००९
६.	नामस्मरण	२०१०
७.	हरि:ॐ आश्रम (श्रीभगवानकेअनुभवकास्थान)	२०१०
८.	श्रीमोटा के साथ वार्तालाप	२०१२
९.	विवाह हो मंगलम्	२०१२
१०.	बालकों के **मोटा**	२०१२
११.	विद्यार्थी **मोटा** का पुरुषार्थ	२०१२
१२.	मौनमंदिर का मर्म	२०१३
१३.	मौनमंदिर का हरिद्वार	२०१३
१४.	मौनएकांत की पगडंडी पर	२०१३
१५.	मौनमंदिर में प्रभु	२०१४

●

English books available at Hariom Ashram Surat.
January - 2020

No.	Book	F. E.
1.	At Thy Lotus Feet	1948
2.	To The Mind	1950
3.	Life's Struggle	1955
4.	The Fragrance Of A Saint	1982
5.	Vision of Life - Eternal	1990
6.	Bhava	1991
7.	Nimitta	2005
8.	Self-Interest	2005
9.	Inquisitiveness	2006
10.	Shri Mota	2007
11.	Rites and Rituals	2007
12.	Naamsmaran	2008
13.	Mota for Children	2008
14.	Against Cancer	2008
15.	Faith	2010
16.	Shri Sadguru	2010
17.	Human To Divine	2010
18.	Prasadi	2011
19.	Grace	2012
20.	I Bow At Thy Feet	2013
21.	Attachment And Aversion	2015
22.	The Undending Odyssey (My Experience of Sadguru Sri Mota's Grace)	2019

●

॥ હરિ:ૐ ॥

मोटा का काम - सब को प्रेम करना

ऐसे मेरा भी धर्म यही है कि सब को प्रेम करना । कई लोग कहते हैं, *'मोटा'*, फलाना व्यक्ति आपके आश्रम में आता है । मैंने कहा, 'तुम्हें क्या हो गया भाई ?, भले आता ।' मेरा काम तो जो सब आए, वे भले आए । मेरा काम तो प्रेम करना है । मैं कुछ किसी का दुष्कर्म नहीं देखता । पाप-पुण्य देखना मेरा काम नहीं हैं । मेरा काम प्रेम करना है । तो मैं प्रेम करता रहता हुँ । परिणाम की भी मेरी इच्छा नहीं है । हमें तो गीतामाता सामने पुकार कर कहती हैं । अबे, बेटे परिणाम की चिंता मत करना, परंतु सब मेरे बेटे सभी परिणाम ही पहले रखते हैं । तो यह नही चल सकता । ***आप सब भगवान की बातें करते हो । भगवान के पथ पर चलने की बात करते हो और फल की अपेक्षा साथ रखो, वह नहीं चल सकता.***

– श्रीमोटा

'श्रीमोटावाणी-१', प्र.आ., पृ. ४३

किंमत : रु. १०/-